RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)

पीयर रिव्यूड जर्नल

# मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण का उपक्रम

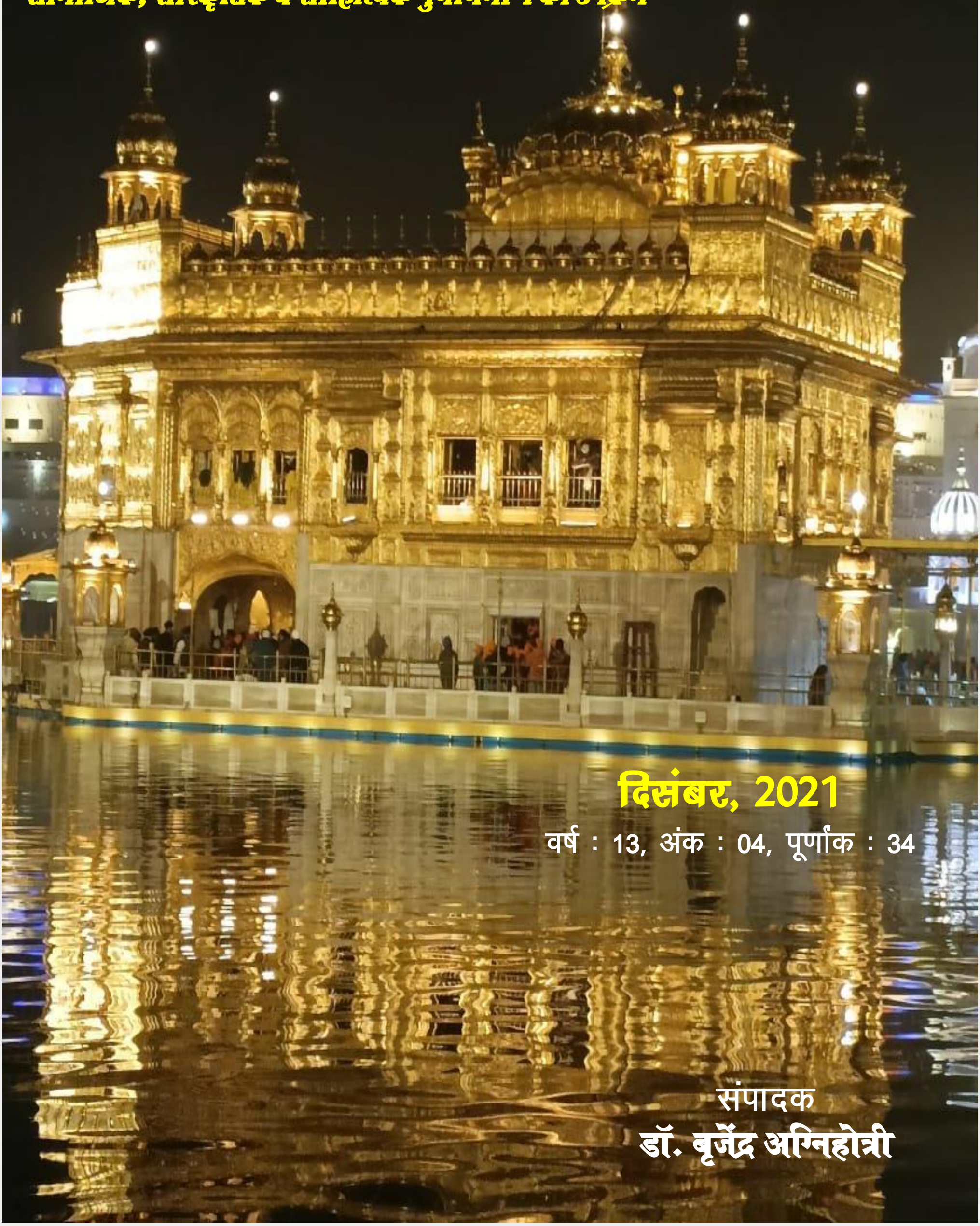

दिसंबर, 2021

वर्ष : 13, अंक : 04, पूर्णांक : 34

संपादक

डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री

RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)




## संरक्षक परिषद

श्रीमती चित्रा मुद्गल
प्रो. गिरीश्वर मिश्र
प्रो. अशोक सिंह
प्रो. हितेंद्र मिश्र
डॉ. कृष्णा खत्री
डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय
डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

## संपादक परिषद

डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री (संपादक)
श्री पंकज पाण्डेय (उप-संपादक)
श्रीमती शालिनी सिंह (उप-संपादक)
डॉ. चुकी भूटिया (उप-संपादक)
डॉ. ऋचा द्विवेदी (उप-संपादक)
डॉ. आरती वर्मा (उप-संपादक)

## परामर्श-विशेषज्ञ परिषद

डॉ. दमयंती सैनी
डॉ. दीपक त्रिपाठी
श्री मनस्वी तिवारी
श्री राम सुभाष
श्री जयकेश पाण्डेय
श्री महेशचंद्र त्रिपाठी
डॉ. शैलेष गुप्त 'वीर'
श्री मृत्यंजय पाण्डेय
श्री जयेन्द्र वर्मा


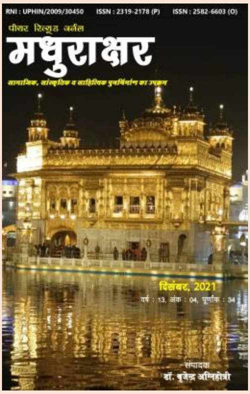


आवरण : **पूर्णिमा**


संपादक

**डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री**

सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
सामाजिक विज्ञान एवं भाषा संकाय
लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, पंजाब



पीयर रिव्यूड जर्नल

# मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण का उपक्रम

**दिसंबर, 2021**

वर्ष : 13, अंक : 04, पूर्णांक : 34

**पूर्णतः अव्यावसायिक एवं अवैतनिक प्रकाशन**

पूर्णतः अव्यावसायिक एवं अवैतनिक प्रकाशन

## ई-संस्करण

**सहयोग**

| | |
|---|---|
| एक प्रति | : 30 रुपये |

**व्यक्तियों के लिए**

| | |
|---|---|
| वार्षिक | : 110 रुपये |
| त्रैवार्षिक | : 300 रुपये |
| आजीवन | : 2500 रुपये |

**संस्थाओं के लिए**

| | |
|---|---|
| वार्षिक | : 150 रुपये |
| त्रैवार्षिक | : 450 रुपये |
| आजीवन | : 5000 रुपये |

**विदेशों के लिए (हवाई डाक)**

| | |
|---|---|
| एक अंक | : 6 $ |
| वार्षिक | : 24 $ |
| आजीवन | : 300 $ |

सदस्यता शुल्क का भुगतान भारतीय स्टेट बैंक की किसी शाखा में खाता क्रमांक- **10946443013** (IFS Code-SBIN0000076, MICR Code - 212002002) या 'मधुराक्षर' के बैंक खाता क्रमांक **31807644508** (IFS Code- SBIN0005396, MICR Code- 212002004) में करें।

मधुराक्षर में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री की सत्यता व मौलिकता हेतु लेखक स्वयं जिम्मेदार है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके विरुद्ध कार्यवाही केवल फतेहपुर न्यायालय में होगी।

**मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामी**
**बृजेन्द्र अग्निहोत्री द्वारा स्विफ्ट प्रिन्टर्स, 259, कटरा अब्दुलगनी, चौक, फतेहपुर से मुद्रित कराकर जिला कारागार, मनोहर नगर फतेहपुर (उ.प्र.) 212601 से प्रकाशित।**

**सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका**

# मधुराक्षर

**दिसंबर, 2021**

संपादक
**डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री**

संपादकीय कार्यालय
**जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212 601**

E-Mail :
madhurakshar@gmail.com

Visit us :
**www.madhurakshar.com**
www.madhurakshar.blogspot.com

www.facebook.com/agniakshar

चलित वार्ता
**+91 9918695656**

**ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)**

# एक नज़र में...


## संपादकीय

| | | |
|---|---|---|
| अपनी बात | डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री | .06 |

## कथा–साहित्य

| | | |
|---|---|---|
| हमला | सुशांत सुप्रिय | .07 |
| मन का सौदा | सरोजराम मिश्रा | .11 |
| रिश्ते का पंचनामा | श्यामल बिहारी महतो | .15 |
| मैं और ताजमहल | देवी नागरानी | .21 |
| गुलमोहर | राजेश कुमार | .31 |
| समझदार | अनुज सारस्वत | .33 |
| वैशाली में ऑक्सीजन... | धर्मपाल महेंद्र जैन | .36 |
| दृष्टिकोण | डॉ. सम्राट सुधा | .39 |
| रामलीला | डॉ. पूरन सिंह | .41 |
| अलिखित पाती प्रेम की | डॉ. जया आनंद | .43 |

## कथेतर गद्य

| | | |
|---|---|---|
| मियां मंहगू का मज़मा | अंकुश्री | .48 |
| न्यू मीडिया : हिंदी के... | डॉ. अमित शर्मा, डॉ. शैलेश शुक्ला | .51 |
| जन–भावनाओं के प्रिय... | पद्मा मिश्रा | .69 |
| जैतखाम का इतिहास | मनीष कुमार कुर्रे | .73 |

## कृति–चर्चा

| | | |
|---|---|---|
| गजलों ने लिखा मुझे (गजल संग्रह), नंदलाल पाठक | डॉ. उमेशचंद्र शुक्ल | .92 |
| पेइंग गेस्ट (कहानी संग्रह), रतन वर्मा | डॉ. विकास कुमार | .100 |

## काव्य सुरसरि

| | | |
|---|---|---|
| मेरी रचनाएँ... | लाल देवेंद्र कुमार श्रीवास्तव | .114 |
| ग़ज़लें | केशव शरण | .116 |
| ग़ज़लें | नवीन माथुर पंचोली | .118 |
| वो पी गयी पूरा उसे... | व्यग्र पांडे | .120 |
| मनोघात | शैलेंद्र चौहान | .121 |
| कलिंग युद्ध... | स्वाति सौरभ | .122 |


 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

संपादकीय

# अपनी बात

जीवन में घटित प्रत्येक घटना का प्रतिपक्ष अवश्य होता है, और प्रत्येक बुद्धिजीवी इस को सहजता से स्वीकार करता है। अगर वर्तमान में तीव्रता से प्रसारित हो रहे जानलेवा 'कोरोना वायरस' के परिणामस्वरूप देश मे चल रहे लॉकडाउन को ही देखें। लॉकडाउन के कुछ दिन ही बीते, और हमें समझ में आने लगा कि जीवन में वास्तविक जरूरतें बहुत कम हैं। हमने केवल बहुत–सी फालतू की चीजों में अपने आपको उलझा रखा है। आलमारियों में कपड़ों का अंबार लगा रखा था, जबकि वास्तविक जरूरत कम ही हैं। फ्रिज में अनावश्यक चीजों को भर कर रखते थे, जबकि हमारा काम कम से ही चल सकता है। जिन सब्जियों, अनाजों को इग्नोर कर देते थे, उन्हें भी खाकर जिंदा रहा जा सकता है। आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स, मिठाई, पिजजा–बर्गर, पान–मसाला, गुटखा आदि के बिना भी रहा जा सकता है। पेट्रोल भरवाकर अनावश्यक चार–पहिया या बाइक दौड़ाने में कोई समझदारी नहीं है। हर हफ्ता बिना नई फिल्म देखे, मॉल जाकर शॉपिंग करने या पार्टी किये बिना भी रहा जा सकता है। पेड़–पौधों को पानी देकर, उनके फूल–पत्तियों को सहला कर, जानवरों–पक्षियों को दाना–पानी खिलाकर भी खुश रहा जा सकता है। देश, सरकार, राजनीतिक पार्टियों, पुलिस, प्रशासन, डाक्टर्स को हर वक्त कोसने और गाली का देने कोई मतलब नहीं था, जैसे भी हो देर–सबेर इन्हीं को मसीहा बनकर आना है। हमारे बैठ जाने से सब कुछ रुक नहीं जाएगा, दुनिया में हमसे भी ज्यादा महत्वपूर्ण लोग हैं, जिनकी देश–समाज को ज्यादा जरूरत है। हमें अपनी गुजरी जिंदगी से चाहे जितनी शिकायत हो, लेकिन अब महसूस हो रहा है कि जो गुजर गया वो अच्छा ही था। बहुत से रिश्तों को केवल और केवल एक कॉल से बचाया जा सकता है। बुजुर्ग माता–पिता, दादा–दादी के पास बैठकर उन्हें सुनना इतना भी मुश्किल नहीं है!

कभी–कभी ठहरकर अपने बचपन और पुराने दोस्तों को याद करना भी एक बहुत खूबसूरत एहसास है। मात्र दो सेकेंड में किसी वीडियो के डाउनलोड न होने पर या फिर इसी की कॉल वेटिंग मिलने पर दनादन कॉल न करके धैर्यपूर्वक इंतजार किया जा सकता है। किसी भी चीज के लिए बेसब्र, व्याकुल या विह्वल होने का कोई अर्थ नहीं, सभी चीजों का इंतजार किया जा सकता है। जिंदगी की परीक्षा, क्लासरूम की परीक्षा से कहीं बहुत बड़ी, और आगे है, इसलिए बच्चों को जिंदगी की परीक्षा के लिए तैयार कीजिये, क्योंकि क्लासरूम की परीक्षा में बिना बैठे भी पास हुआ जा सकता है। परस्पर ईर्ष्या–द्वेष, ईगो, किसी की बुराई करने–सुनने, जलना या बहुत ज्यादा लालच का कोई मतलब नहीं है। असली ईश्वर हमारे दिल में ही है, बिना किसी धार्मिक स्थान पर गए भी उसे महसूस किया जा सकता है। जब जीवन पर संकट हो तो केवल भूल जाने या फिर माफ कर देने में ही वास्तविक सुकून है। और अंत में, केवल और केवल जीने को छोड़कर, बाकी सबकुछ मुल्तवी (स्थगित) किया जा सकता है। जीवन को सकारात्मकता से जीने का प्रयास कीजिए, सच! वास्तविक जीवन बहुत खूबसूरत है।

**-डॉ. बृजेंद्र अग्निहोत्री**

*सहायक प्रोफेसर (हिंदी),*

*सामाजिक विज्ञान एवं भाषा संकाय*

***लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय***

*फगवाड़ा (पंजाब) 144411*

कहानी

सुशांत सुप्रिय
I–5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड,
इंदिरापुरम, गाजियाबाद 201014
sushant1968@gmail.com

# हमला

**बा**ईसवीं सदी में एक दिन देश में गजब हो गया। सुबह लोग सो कर उठे तो देखा कि चारो ओर तितलियाँ ही तितलियाँ हैं। गाँवों, कस्बों, शहरों, महानगरों में जिधर देखो उधर तितलियाँ ही तितलियाँ थीं। घरों में तितलियाँ थीं। बाजारों में तितलियाँ थीं। खेतों में तितलियाँ थीं। आँगनों में तितलियाँ थीं। गलियों–मोहल्लों में, सड़कों–चौराहों पर करोड़ों–अरबों की संख्या में तितलियाँ ही तितलियाँ थीं। दफ्तरों में तितलियाँ थीं। मंत्रालयों में तितलियाँ थीं। अदालतों में तितलियाँ थीं। अस्पतालों में तितलियाँ थीं। तितलियाँ इतनी तादाद में थीं कि लोग कम हो गए, तितलियाँ ज्यादा हो गईं। सामान्य जन–जीवन पूरी तरह अस्त–व्यस्त हो गया। लगता था जैसे तितलियों ने देश पर हमला बोल दिया हो।

दिल्ली में संसद का सत्र चल रहा था। तितलियाँ भारी संख्या में लोकसभा और राज्यसभा में घुस आईं। दर्शक–दीर्घा में तितलियाँ ही तितलियाँ मँडराने लगीं। अध्यक्ष और सभापति के आसनों के चारों ओर तितलियाँ ही तितलियाँ फड़फड़ाने लगीं। आखिर दोनों सदनों की कार्रवाई दिन भर के लिए स्थगित करनी पड़ी। राज्यों में भी इसी कारण से विधानसभाओं और विधान–परिषदों की कार्रवाई दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई। सुरक्षा एजेंसियाँ चौकन्नी हो गईं। कहीं यह किसी पड़ोसी देश की साजिश तो नहीं थी ? तितलियों की इस घुसपैठ के पीछे कहीं कोई विदेशी हाथ तो नहीं था ?

पूरे देश में कोहराम मचा हुआ था। सड़कों पर यातायात ठप्प था। स्कूल–कॉलेज बंद कर दिए गए थे। दफ्तरों और मंत्रालयों में

कोई काम–काज नहीं हो रहा था। अदालतों की कार्रवाई दिन भर के लिए स्थगित करनी पड़ी। अस्पतालों में कई मरीजों की मौत हो गई क्योंकि आपातकालीन सेवा–कक्षों में भारी संख्या में तितलियों की घुसपैठ की वजह से नर्सें और डॉक्टर मरीजों पर ध्यान नहीं दे सके।

ऑपरेशन–थियेटर में तितलियाँ मौजूद थीं जिसके कारण सभी ऑपरेशन स्थगित करने पड़े। तितलियाँ इतनी भारी संख्या में चारो ओर मँडरा रही थीं कि उन्होंने सूरज की रोशनी को ढँक लिया। दोपहर में अँधेरा छा गया। रेडियो व टी. वी. का प्रसारण बाधित हो गया। टेलीफोन सेवाएँ ठप्प हो गईं।

सभी अवाक् थे। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि अचानक यह क्या हो गया है। सरकार सकते में थी। प्रशासन लाचार दिख रहा था।

शुरू–शुरू में बच्चों के मजे लग गए। वे तितलियों से खेलते हुए पाए गए। पर जब स्थिति की गम्भीरता का अहसास लोगों को हुआ तो सब के होश उड़ गए। ऐसा नहीं है कि लोगों ने इस समस्या से निपटने के लिए कुछ नहीं किया। बेगॉन–स्प्रे से लेकर सभी प्रकार के कीट–नाशकों का इस्तेमाल तितलियों की फौज पर किया गया पर सब बेकार। तितलियों पर इनका कोई असर नहीं हुआ।

पुलिस–वालों ने भी अपने तरीकों से स्थिति को नियंत्रण में करने की कोशिश की। देश में कई जगह पर पुलिस ने तितलियों पर आँसू–गैस के गोले छोड़े। कुछ जगहों पर बुद्धिमान सिपाहियों ने तितलियों पर लाठी–चार्ज किया। और कई जगहों पर तितलियों पर फायरिंग भी की गई। पर कोई नतीजा नहीं निकला। तितलियों की तादाद इतनी ज्यादा थीं कि गोलियाँ कम पड़ गईं। रेल, विमान तथा सड़क–यातायात पर तितलियों की मौजूदगी का बहुत बुरा असर पड़ा। जगह–जगह दुर्घटनाएँ हुईं जिनमें कई लोग मारे गए।

आखिर वैज्ञानिकों ने कुछ तितलियों को पकड़कर एलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप के नीचे उनका निरीक्षण किया। उनके हैरानी की कोई सीमा नहीं रही जब उन्होंने पाया कि हर तितली के पंखों पर बारीक अक्षरों में कोई–न–कोई वादा या आश्वासन लिखा हुआ था। और तब जा कर यह गुत्थी सुलझी कि दरअसल ये तितलियाँ वे करोड़ों–अरबों

वादे व आश्वासन थे जो देश की आजादी के बाद 1947 से अब तक नेताओं, अफसरों व अधिकारियों ने दिए थे पर जो पिछले सड़सठ सालों में पूरे नहीं किए गए थे। वे सभी झूठे वादे व आश्वासन तितलियाँ बन गए थे। यह खबर पूरे देश में आग की तरह फैली। लोग चर्चा करने लगे कि एक दिन तो यह होना ही था। झूठे वादों और कोरे आश्वासनों के पाप का घड़ा कभी–न–कभी तो भरना ही था।

> ***रात के बारह बजते ही सभी तितलियों का कायांतरण हो गया और वे टिड्डियाँ बनकर लोगों पर हमले करने लगीं।***

इतिहासकारों ने आनन–फानन में एक आपात बैठक बुलाई जिसमें सरकार को याद दिलाया गया कि सैकड़ों वर्ष पहले विश्व का प्रथम गणतंत्र वैशाली भी इसी प्रकोप के कारण नष्ट हो गया था। जिस गणतंत्र में नेता और अधिकारी केवल झूठे वादे करते हैं और कोरे आश्वासन देते हैं उस गणतंत्र का वही हाल होता है जो वैशाली गणतंत्र का हुआ था। भविष्यवेत्ताओं ने भी इतिहासकारों की इस बात का समर्थन किया। यह सब सुनकर सरकार हरकत में आ गई। एक सर्वदलीय बैठक बुलाई गई। बैठक में वैज्ञानिकों, इतिहासकारों और भविष्यवेत्ताओं की बात पर चर्चा हुई। पर एक तो कक्ष में चारो ओर तितलियाँ ही तितलियाँ मँडरा रही थीं, दूसरी ओर विपक्ष और सत्ताधारी पक्ष के सदस्यों के बीच आरोप–प्रत्यारोप का ऐसा दौर चला कि बैठक का कोई नतीजा नहीं निकला। ऐसे संकट के समय में भी विभिन्न दलों के बीच यह साबित करने की होड़ लगी हुई थी कि किस पार्टी ने ज़्यादा झूठे वादे किए


ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

थे, किसने कम। अधूरे वादों का आलम यह था कि परिवारों में पति–पत्नी ने एक–दूसरे से और माँ–बाप ने बच्चों से कई झूठे वादे किए हुए थे। वे सभी अधूरे वादे और आश्वासन असंख्य तितलियाँ बनकर घरों में चारो ओर मँडरा रहे थे और घरवालों को सता रहे थे। जो वादे 1960 के दशक से पहले किए गए थे वे 'ब्लैक–ऐंड–व्हाइट' तितलियों के रूप में चारो ओर फड़फड़ा रहे थे। सिनेमा में रंगीन युग आने के बाद किए गए वादे कलर्ड तितलियों के रूप में चारो ओर मँडरा रहे थे।

इसी तरह पूरा दिन निकल गया और इस समस्या का कोई समाधान नहीं निकला। पर रात के बारह बजते ही सभी तितलियों का कायांतरण हो गया और वे टिड्डियाँ बनकर लोगों पर हमले करने लगीं। उनके निशाने पर विशेष करके मंत्री, राजनेता, और अधिकारी थे। वे घरों में घुस–घुस कर सोए हुए लोगों पर हमले करने लगीं। चारो ओर हाहाकार मच गया। स्थिति बद से बदतर होती चली गई। आखिर सुबह चार बजे कैबिनेट की एक आपातकालीन बैठक हुई। उसमें एक मंत्रियों के समूह का गठन किया गया। सरकार ने तय किया कि सभी अधूरे वादों और आश्वासनों को एक निश्चित समय–सीमा के भीतर पूरा किया जाएगा। और कोई चारा नहीं था। टिड्डियों का हमला जारी था।

सुबह पाँच बजे से ही यह काम शुरू हो गया। यह बेहद कठिन काम था। अधूरे वादों और आश्वासनों की तादाद करोड़ों–अरबों में थी। इतनी ही संख्या में टिड्डियाँ मौजूद थीं। जैसे ही कोई अधूरा वादा या आश्वासन पूरा होता, एक टिड्डी गायब हो जाती। पर करोड़ों–अरबों अधूरे वादों और आश्वासनों को पूरा करने में बरसों लग गए। तब जाकर देश से टिड्डियों का कहर समाप्त हुआ और स्थिति सामान्य हो पाई।

इस खबर का असर पूरी दुनिया में हुआ। बाईसवीं सदी का इतिहास गवाह है कि दूसरे देशों के राजनेताओं और अधिकारियों ने भी इस डर से अपने–अपने देशों के तमाम अधूरे वादे और आश्वासन पूरे कर दिए कि कहीं उनके देश में भी ये टिड्डियाँ हमला न कर दें।


ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कहानी

सरोजराम मिश्रा
sarojooram@gmail.com

# मन का सौदा

मन ही मन बड़बड़ाई वह, 'फोन उठाओ भाई, घंटी तो बज रही है पर कोई चोंगा नहीं उठा रहा।'

'कब तक चोंगा लिए खड़ी रहेगी ? चोंगा उठाने वाला चोंगा बदलकर कहीं और ही रमा होगा। अब कहाँ किसी के पास फुर्सत है। रख दे... और मेरे लिए राहत वाली चाय बना दे।' दादी ने लिप्सा को आवाज लगते हुए कहा।

वह दादी के लिए चाय बनाने रसोई में चली गई। पर मन–ही–मन सोचती रही कि एक बार बात हो जाती तो कम–से–कम तसल्ली हो जाती कि वहाँ सब खैरियत से हैं।

ठंडी बयार से खिड़की के पल्ले जोरदृजोर यों हिल रहे थे मानो कोई खेल खेल रहें हो और उसे अपने खेल में शामिल करने के लिए बुला रहे हो।वह गुनगुनाते हुए खिड़की पर जा पहुँची। आसमाँ से बरसते मोती छन–छन का मधुर धुन बजा रहे थे। रह रहकर गड़गड़ाते बादल, कड़कती बिजली रात के सन्नाटे को चीरते हुए


ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

भयावह बना रहे थे पर उसे कहाँ किसी का डर था ? अपनी ही दुनिया में मस्त रहने वाली वह झूम रही थी, नाच रही थी।

'आज कालग्रासनी बिजली जरूर किसी–न–किसी को अपने साथ लिए जाएगी' दादी के इस बात ने जैसे किसी तंद्रा से उसे घसीटा हो।

चाय रख अभी वह मुड़ी ही थी कि दादी ने बातचीत की गर्ज से कहा, 'लिप्सा, खिड़की दरवाजे अच्छे से बंदकर ले और मोमबत्ती भी खोज ले। मौसम का कोई ठिकाना नहींय कभी भी बत्ती गुल हो सकती है।'

दादी जानती थी कि लिप्सा अपने ही सपनो में रमकर भूल जाएगी। और कल सफाई की मुसीबत में फँस शोर मचाएगी।

'लिप्सा... ओ लिप्सा!' दादी ने आवाज लगाई। पर लिप्सा तो अपनी ही दुनिया में खोई थी। उसे अंधेरी रात, बरखा, बिजली यही सब तो पसंद थे। ये सब रोमांचित कर जाते थे उसे। तभी अचानक ही बत्ती  चली गई।

'मोमबत्ती जला ले लिप्सा।' दादी ने जोर से आवाज लगाते हुए कहा।

लिप्सा ने मोमबत्ती जलाकर हल्की से रोशनी कर ली और दादी को सताने, हँसाने और समय काटने में लुफ्त उठाने के लिए सफेद नाइटी पहन खुले बाल मोमबत्ती ले गुनगुनाने लगी, कहीं दीप जले कहीं दिल...जरा देख ले आकर... तभी दरवाजा खटकने की आवाज आई।

'बाहर देख जरा लिप्सा, दरवाजे पर कोई है... शायद तेरा राजकुमार खड़ा है।' दादी ने लिप्सा को छेड़ते हुए कहा।

अपनी धुन में रमी लिप्सा ने बिना किसी बात की परवाह किये गुनगुनाते हुए धड़ाक से दरवाजा खोला तो देखा सामने गीला बदन में एक खूबसूरत नौजवान खड़ा है।

'बड़ी जोरदार बारिश है... मेरी मोटरसाइकिल बंद पड़ गई है। अम्म... दादी है क्या ?' नौजवान ने सकुचाते हुए पूछा। 'बारिश रुकते ही मैं निकल जाऊँगा।' बूँदों से खुद को बचाते हुए उसने कहा।

लिप्सा ने खुद को समेटते हुए धीरे से पूरा दरवाजा खोल उसे अंदर बुला लिया।

'दादी आपसे कोई मिलने आया है।' उसने कहा।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

दादी मुस्कुराते हुए बड़ी ही तसल्ली से उससे बातचीत करने लगी।

लिप्सा ने पलटकर देखा, कोई पहचान वाला है शायद... अब क्या दादी की राम कहानी शुरू... कैसे घुलमिलकर बातें कर रहें हैं दोनों, जैसे जन्म–जन्म का नाता हो। और चली गई वह सभी के लिए राहत वाली चाय बनाने...।

***वह जान गई कि अजनबी को वापस आना ही है। पर सुबह से शाम, शाम से रात–दिन महीने बन गए और महीने साल में तब्दील हो गए।***

बाहर बरखा का शोर थम चुका था। अजनबी जैसे ही जाने को मुड़ा अंधेरे में लिप्सा से टकरा गया। बलिष्ठ बदन, ऊँचा कद और भीगे बदन में सिमटी लिप्सा उसकी बाँहों में किसी और ही दुनिया में पहुँच रही थी कि दमकती बिजली के उजाले ने उसे सपने से जगा दिया। वह लजा गई और संयत होते हुए 'अजनबी' से परे हट गई। पर उसका हाथ अब भी अजनबी के हाथों में रह गया।

'चाय के लिए ढेर सारा प्यार... दादी' युवक ने मुस्कुराकर लिप्सा की ओर देखा और चला गया। पर... पर उसका हाथ तो अब भी लिप्सा के हाथ में ही रह गया था।

नई सुबह, नई उमंग व चहक के साथ लिप्सा दालान में पहुँची तो प्रकृति का अनुपम सौंदर्य बिखरा पड़ा था। हरी–भरी घास मलमल कालीन की तरह चमक रहा था। ओस की कुछ बूँदे अभी भी पंखुड़ियों में यों अटके पड़े थे जैसे एक–दूसरे को छोड़ना न चाहते हो बिलकुल अजनबी अंगुलियों की गिरह की तरह जिसकी कशिश अभी भी उसके हाथों में मौजूद थी। चिड़ियों ने राग आलपना शुरू कर दिया था और सूरज अपने रश्मिरथी के साथ अपने आने का पैगाम भेज रहे थे।

'आज की सुबह कुछ अलग, कुछ नई–नई सी क्यों लग रही है, क्या कल रात उसके स्पर्श ने सबकुछ बदल दिया' लिप्सा ने सोचा।

अचानक ही उसका ध्यान सोफे पर पड़े रुमाल पर गया। वह जान गई कि अजनबी को वापस आना ही है। पर सुबह से शाम, शाम से रात–दिन महीने बन गए और महीने साल में तब्दील हो गए। कई बार उसके मन में आता कि दादी से पूछे कि कौन था वह ? क्या नाम था ? उसके बारे में जाने जिसे वह चाहती है। पर ...अपने दिल का हाल बायाँ नहीं कर पाई दादी से। कई बार सोचती कि उसके लिए वह जरा सी बात रही होगी तभी वह पलटकर नहीं आया और मेरे लिए 'एक क्षण' मन का सौदा बन गया। पर ये कैसा सौदा...एक तरफा... लिप्सा मन मसोस कर रह जाती पर उसके रूमाल को उसने बहुत सहेजकर अपने ज्वेलरी बॉक्स में रखा था। धीरे –धीरे समय बीतने के साथ वह भी अपनी पढ़ाई में मशगूल हो गई।

'देख तो लिप्सा भारतीय सीमा पर जंग छिड़ गई है। हमारे कितने जवान शहीद हो गए।' दादी ने ऊँची आवाज लगाई।

लिप्सा ने दादी के बगल में ही अपना आसन जमा लिया। तभी समाचार में शहीद हुए भारतीय सैनिकों के नाम के फोटो प्रसारित होने लगे, अचानक ही लिप्सा का कलेजा फट–सा गया जब उसने 'उस अजनबी' की फोटो देखी जिसके नीचे लिखा था–शहीद कैप्टन शौर्य। वह चीख मारकर बेसुध हो गई।

जब होश आया तो दादी को पुचकारते पाया, 'कुछ लोग जीवन में जाने के लिए ही आते हैं बिटिया। हमें तो गर्व होना चाहिए कि एक वीर जवान कुछ घंटों के लिए ही सही हमारा अतिथि बना।' दादी ने कहा।

'पर दादी मैं तो उससे...' अधूरा शब्द ही बोल पाई थी लिप्सा।

दादी ने उसकी उदासी और अनकहे शब्द सब पढ़ लिए थे, 'शौर्य ने चोंगा बदल लिया बिटिया, तू भी बदल ले। तेरे सामने तो पूरा जीवन...' दादी बस इतना ही कह पाईं।

लिप्सा उठी और उसने शौर्य के रूमाल को माथे से लगाया लिया। कुछ समय बाद उसने भारतीय सेना में दाखिला ले लिया। अब देश सेवा ही उसका जीवन– लक्ष्य था। उसके प्यार को दी गई सच्ची श्रद्धांजलि... सच्चा सौदा मन का।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कहानी

श्यामल बिहारी महतो
तुरीयो, बोकारो 829132

# रिश्ते का पंचनामा

**'मैं** तुम्हें बेटा कहूं या साढ़ू ...?' बाप रामदीन भरी पंचायत में इकलौते बेटे राधेश्याम से बार–बार पूछता रहा।

और बेटा राधेश्याम बार बार यही कहता रहा– 'आप मेरे बाप हो और बाप ही रहोगे!'

राधेश्याम राधा की ओर देख रहा था। और राधा राधेश्याम की ओर।

इतिहास के पन्नों में लिखा जाने वाला यह एक अनोखा और ऐतिहासिक पंचायत फैसला होने जा रहा था। ऐसा मामला न कभी किसी ने देखा था न सुना था। पंच हैरान और असमंजस में डूबे नजर आ रहे थे। पर पंचायत में औरतों की भागीदारी में कोई कमी न थी। उधर युवाओं के बीच हवाबाजी जैसा माहौल था। इन सबसे बेखबर रामदीन कपार पर हाथ धरे एक कोने में बैठा हुआ था या यूं कहिए

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कि बेटे राधेश्याम ने उसे कोना पकड़ा  दिया था। जहां रह–रहकर उसकी कानों में उसके बचपन के दोस्त महेश बाबू की कही बातें आ आकर टकरा रही थी, जैसे कभी कभी पानी की लहरें पत्थरों से टकराती है।

'रामदीन, तुम दोनों हर वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी के दिन राधा और राधेश्याम को राधा–कृष्ण बना देतो हो, अगर बड़े होकर ये दोनों सचमुच के राधा कृष्ण बन घूमने लगे तब क्या करोगे–कभी कभी बचपन की आदतें छुटने की बजाय और गहरी होती जाती है, ऐसा कई बार देखा सुना गया है...!'

'अरे नहीं महेश बाबू !' रामदीन हँसा था– 'ऐसा थोड़े न होता है, बचपन खेलने कूदने का दिन होता है, बड़ा होने पर सब रिश्तों में बंध जाते हैं। तुम्हारी सोच फिजूल है।'

'देखते है आगे आगे होता है क्या!'

घटना डोमनीडीह की है। इस गांव में हमेशा कुछ न कुछ नया प्रयोग होता रहा है। सालों पहले इसी तरह की एक पंचायत बैठी थी तब केसु महतो की जमीन हड़पने के लिए उसकी इकलौती पुत्री को उसी गांव के घनश्याम ने अपहरण कर लिया और एक सप्ताह अपने साथ रखा। पंचायत बैठी। पंचों ने लड़की से इजहार लिया। लड़की बोली– 'घनश्याम ने मेरी इज्जत के साथ खेल लिया है अब दूसरे को खेलने कैसे दें। यही मेरा मरद होगा।' अंधे को क्या चाहिए दो आंखें। घनश्याम और उसका बाप यही तो चाहता था। उसके बाद कईयों ने। इस तरह का प्रयोग किया और सफल रहा था पर राधा और राधेश्याम वाला  प्रयोग इस पंचायत के लिए बिल्कुल नया था, नथ उतारने जैसा ही...!

*मैं तुम्हें बेटा कहूं या सादू ... ?' बाप रामदीन भरी पंचायत में इकलौते बेटे राधेश्याम से बार–बार पूछता रहा।*

दो दिन पहले रामदीन थाने में जाकर बेटे राधेश्याम पर कूल खानदान को धोखा देने के मामले को लेकर केस कर दिया था।बयान पर लिखवाया– 'मेरे बेटे राधेश्याम ने, हमारे कूल खानदान की नाक

कटवा दी है। इन्होंने वो नीच काम किया है जो पीढ़ियों से हमारे खानदान में किसी ने आज तक नहीं किया है। मेरी चल अचल संपत्ति में अगर इसको हिस्सा चाहिए तो राधा को उसे छोड़ना होगा– उसे भूलना होगा....!'

बेटे ने बाप को इंट का जवाब पत्थर से दिया। बयान में लिखवाया– 'राधा मेरा बचपन का पहला और इकलौता प्यार है। राधा को मैं भूल जाऊं ये हो नहीं सकता और राधा मुझे झयभूल जाए– छोड़ दे यह मैं होने नहीं दूंगा। राधा है तो राधेश्याम है। राधा नहीं तो राधेश्याम भी नहीं। मैं बाप की संपत्ति को छोड़ सकता हूं, राधा को नहीं....!'

थाने के बड़ा बाबू का सर चकराने लगा। जीवन में इस तरह का पहला केस था। जवाब में लिखा 'रामदीन, मामला बड़ा पेचिदा है, दोनों बालिग है और दोनों ने सांइस सीटी में शादी कर ली है। आज सांइस के आगे भूत–प्रेतों की कोई अहमियत नहीं रह गई है। कानून आपकी कोई मदद नहीं कर सकती है। आप पंचायत बुला लो। पंचायत ही इसका सही फैसला दे सकता है..!'

दौड़ा–दौड़ा रामदीन पहुंचा था अपनी ससुराल। बूढे ससुर से कहने लगा– 'अब आप ही कुछ कर सकते हैं, राधा को समझा–बुझाकर अपने घर ले आइए, वरना हम दुनिया में अपना मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे..!'

'दामाद बाबू, पानी सर से ऊपर बहने लगा है, मेड बांधना संभव नहीं है, अच्छा होगा खेत का किनारा ही खोल दो। गलत लाड़ प्यार का नतीजा कभी अच्छा नहीं हुआ है..!'

'बूढ़ा सठिया गया है....!' रामदीन कुढ़ते हुए ससुराल से निकल गया था।

रामदीन रात भर करवटें बदलता रहा। सुबह हुई पर वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सका था ..!

बेटे ने क्या खूब सबक दिया था। उस लाड़–प्यार का जो उसे बचपन में मिला करता था।

राधा जब पांच साल की थी तो मां मर गई थी। भोज काज के बाद जब रामदीन पत्नी बेटे के साथ घर लौटने लगा था तो दरवाजे के सामने राधा टूअर जैसी खड़ी हो गई थी। चम्पा देवी बड़ी बहन थी और राधा सबसे छोटी। उसके सीने में मां जैसी फिलिंग्स

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

जाग उठी। लपककर उसने राधा को गोद में उठा लिया और साथ ले आई। राधेश्याम राधा से एक वर्ष बड़ा था। इस तरह दोनों साथ साथ बढ़े और पढ़ें।

कृष्ण जन्माष्टमी के दिन चम्पा देवी राधा को राधा रानी बना देती और रामदीन राधेश्याम को कृष्ण की तरह सजा देता! और दोनों पति–पत्नी खूब आनंदित होते। राधेश्याम को बांसुरी बजाना नहीं आता परन्तु राधा से चुहल करना उसे खूब आता था। यही चुहलबाजी और कृष्ण सा सरारत समय के साथ जाने दोनों को कब कितना करीब ले आया दोनों में किसी को पता नहीं! पहले मिडिल स्कूल फिर हाई स्कूल और कॉलेज। एक ही मकसद एक ही लक्ष्य! –'दोनों जियेगें भी अब साथ साथ'– जब ये कसम दोनों खा रहे थे तब दोनों कॉलेज के बाहर के एक होटल में समोसे खा रहे थे और ये गीत गुनगुना रहे थे– 'छोड़ेंगे न हम तेरा साथ वो साथी मरते दम तक।' यह देख होटल वाला भी मुस्कुरा रहा था। यह अनोखा लगाव कब दोनों के लिए जरूरत बन गई, इसका एहसास तब हुआ जब एमसीए करने के बाद राधेश्याम को हैदराबाद की एक मल्टीनेशनल सॉफ्टवेयर कंपनी से बुलावा आ गया। जाने लगा तो राधा रास्ता रोक खड़ी हो गई, 'मेरा क्या होगा! तुम्हारे बगैर मैं यहां पानी बिन मछली की तरह तड़प तड़प कर मर जाऊंगी...!'

'चिंता मत करो राधा रानी, ज्वाइनिंग और रहने की व्यवस्था होते ही मैं तुम्हें हैदराबाद घूमाने के बहाने बुला लूंगा। फिर सोचेंगे आगे हमें क्या करना है..' और राधेश्याम चला गया था।

राधा को वृंदावन सूना–सूना लगने लगा। दिन भर कमरे में पड़ी रहती। चम्पा देवी के बहुत कहने पर कभी थोड़ा बहुत कुछ खा लेती। पर खाने के वक्त भी उसका सारा ध्यान राधेश्याम पर लगा रहता था। पन्द्रह दिन बीत चुका था पर राधेश्याम का न फोन न मैसेज। राधा पागल हुई जा रही थी। शाम को फोन करने का उसने तय कर लिया था तभी दोपहर को उसके फोन पर मैसेज घूसा– 'अपने सारे समानों की पैकिंग कर लो, सीट कन्फर्म हो चुका है, कल शाम हैदराबाद एक्सप्रेस में बैठ जाना। मैं समय पर स्टेशन पहुंच जाऊंगा ...!'

राधेश्याम ने मां को अलग से मैसेज किया– 'मां, राधा हैदराबाद की चार मीनार देखना–घूमना चाहती है, उसका रेलवे टिकट

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कन्फर्म है। कल शाम उसे हैदराबाद एक्सप्रेस में बिठा देगी–प्लीज मां....!' बेटे के आग्रह ने चम्पा देवी को आगरे का ताजमहल देखने की याद ताजा कर दिया था। तभी चम्पा देवी को दोनों के प्यार को समझ लेनी चाहिए थी पर वो तो राधा को गाड़ी में बिठाने ऐसे चली आई जैसे कोई मां बेटी को ससुराल विदा करने आती है– अब भूगतो लो। अपना नाक अपने हाथ काटने चली।

राधा का राधेश्याम के पास पहुंचने के दो दिन बाद घर में रामदीन के हाथ राधा और राधेश्याम के लिखे कई पत्र हाथ लगे तो रामदीन नींद से जागा। पत्र से ही उसने जाना कि राधा और राधेश्याम जीवन के रास्ते में दोनों कितने आगे निकल चुके हैं। कदम दोनों का कितना आगे बढ़ चुका है। इतना तो द्वापर में कृष्ण राधा के कदम भी नहीं बढ़े थे। रामदीन ने घर में किसी से कुछ नहीं कहा। मन में तय कर लिया। लौटने दो दोनों को लौटा से पिटूंगा।

उधर राधा और राधेश्याम ने हैदराबाद सांइस सीटी में रिश्तों की टटटी करवा दी और एक मंदिर में जाकर दोनों ने शादी कर ली। इसकी सूचना राधेश्याम ने फोन पर अपने बचपन के मित्र सुदामा को दिया। जवाब में सुदामा ने कहा– 'तुम दोनों गांव लौटना नहीं। तुम्हारे प्यार का भण्डाफोड हो चुका है, तुम्हारा बाप सांप की तरह फुफकार रहा है– आने तो दो..! और तुम्हारी मां अपने ममता की गला घोंटने की बात कहती फिर रही है– प्यार करने के लिए राधा ही मिली थी उसे ..! आगे क्या करोगे तुम जानो ...!' और फोन कट गया था।

राधेश्याम राधा को लेकर नवरात्र में घर लौटा–पति पत्नी के रूप में! घर के दरवाजे उन दोनों के लिए बंद मिले।

'इस घर में इन दोनों के लिए कोई जगह नहीं है ..!' बाप दरवाजे पर खड़ा हो गया था।

सुदामा का घर ही उन दोनों के लिए ठिकाना बना था। पर अब तक ..? सामने बड़ा सवाल खड़ा हो गया था।

'रामदीन...वो रामदीन .. अरे भाई कहां खो गया है...?'

मुखिया जी ने आवाज लगाई तो रामदीन सहसा उठ खड़ा हो गया, 'जी मुखिया जी!'

'रामदीन आप एक बार फिर सोच लीजिए, दोनों जवान है और दोनों ने शादी कर ली है, आपको रखना है या नहीं...?'

'हमने कह दिया मुखिया जी, इन दोनों ने जो अपराध किया है उसे मैं क्या कोई शहर भी इन्हें रहने की जगह न दे।'

'ठीक है, आप बैठ जाइए!' मुखिया जी ने पूरी पंचायत पर एक नजर डाली फिर बोला– 'राधेश्याम तुम दोनों ने जो अपराध और पाप किया है, एक पवित्र रिश्ते को कलंकित किया है, उससे पूरे समाज का सिर नीचा हुआ है। न छुटने वाला दाग लगाया है तुम दोनों ने उसकी सिर्फ एक सजा हो सकती है ...!' मुखिया जी क्षण भर के लिए रूके थे। सामने राधेश्याम की मां एक औरत से उलझ गयी थी। रामदीन ने जाकर उसे शांत किया।

मुखिया जी कह रहे थे– 'इस अपराध की एक ही सजा हो सकती है कि तुम दोनों को धक्के मार कर गांव से बाहर कर दिया जाए। लेकिन मैं इसके पक्ष में नहीं हूं। अपराध तो तुम दोनों ने किया है, पर ऐसा भी नहीं कि उसे माफ नहीं किया जा सकता है। मेरा फैसला है कि धंसा हुआ मंडपथान को तुम दोनों एक महीने के अंदर फिर से खड़ा कर दो– नया बना दो, इससे तुम दोनों का अपराध की सजा भी माफ हो जाएगी और पाप भी कट जाएगा..! क्यों भाई लोग आप सबों की क्या राय है...?'

'आपने ठीक कहा मुखिया जी!'

'हां हां मुखिया जी हम सब भी आपसे सहमत हैं।'

इससे पहले कि राधेश्याम कुछ कहता उसका बाप बोल उठा– 'यह भी कोई सजा हुई, मैं सहमत नहीं हूं!'

'यह पंचायत का फैसला है रामदीन केवल मेरा नहीं!'

'हम तैयार हैं मुखिया जी!' राधेश्याम ने कहा और राधा को लेकर सुदामा के घर की ओर बढ़ गया।

रात को रामदीन पत्नी चम्पा से कह रहा था– 'हमारा प्लान कामयाब रहा। तुम जो चाह रही थी, बहु के रूप में तुम्हे राधा मिल गई और मेरे इम्तिहान में मेरा बेटा पास हो गया...!'

'बड़ा कड़ा इम्तिहान लिया तूने मेरे बेटे का...!'

'सोने की तरह निखर भी तो गया...!'

'मां! राधा मौसी को अपने घर की बहु बनाने के लिए आप दोनों ने इतना बड़ा खेल रचा!'

देखा– बेटी संगीता दरवाजे के सामने खड़ी कब से उन दोनों की सारी बातें सुन रही है....!

कहानी

देवी नागरानी
9–डी, कार्नर व्यू सोसाइटी, 15/33 रोड, बांद्रा, मुम्बई 400050
dnangrani@gmail.com

# मैं और ताजमहल

और वह चला गया! दिल के हजार बार कहने पर भी मैं उसे आवाज न दे पाई। दिल और दिमाग की जंग में जीत दिमाग की हुई। अब तक हैरान हूँ कि कल तक जिस समीर को जीवन से ज्यादा प्यार किया, अपनी साँसों में सँजोया, वह आज इतना पराया कैसे बन गया? मैं चाहते हुए भी उसे रोक न पाई। अगर वह रुक भी जाता तो क्या होता? जो न होना था वह हो चुका। अब तो बस सभी तमाशाई बनकर देख रहे है, घर के सदस्य, रिश्तेदार, आस पड़ोस के लोग। लोग है, वे तो देखेंगे, बोलेंगे। पर जिसे देखे बिना मेरी सुबह का सूरज नहीं निकलता था, दिन ढलने के पहले कई बार बात किए बिना वक्त काटे नहीं कटता था, उसे जाते हुए देख मेरे भीतर तक एक खालीपन भर गया।

उस दिन उसी ने तो फोन पर बताया था कि वह किसी निजी काम से दस दिन के लिए बाहर जा रहा है। 'दस दिन, एक नहीं, दो नहीं, दस दिन के लिए....!' फोन पर रूठने वाले अंदाज में मैंने कहा था।

'अरे मेरी बात तो सुनो पूर्वी, अभी कल शाम को ही तो हम मिले थे, तुमसे मिलकर घर लौटा तो ऑफिस से इंटरव्यू के लिए प्रविष्टि पत्र मिला। कल ही समय निर्धारित हुआ है, और मुझे आज ही रवाना होना होगा ...! तुमसे बात करके तुरंत निकलूँगा, सात घंटे का सफर भी तो है।'

'कहाँ जा रहे हो?'

'आगरा.....वहीं हेड ऑफिस है!'

'तो तुम मुझसे मिलोगे नहीं, यूं ही चले जाओगे?'

'मिलूंगा, जरूर मिलूँगा, दस दिन बाद जब लौटूँगा, भगवान ने चाहा तो लौटकर खुशखबरी भी दूँगा।'

'समीर, दस दिन बिना तुम्हें देखे कैसे गुजरेंगे? मैं तो...!'

'पूर्वी अब कुछ मत कहो प्लीज। जिंदगी आवाज देकर बुला रही है, मैं यह मौका कैसे छोड़ सकता हूँ? शायद हमारे भविष्य की उसको हमसे ज्यादा पहचान है। और हाँ, तुम दिल लगाकर पढ़ना। अब समय ही कितना बचा है तुम्हारी परीक्षा में। तुम्हारा बीए हो जाए, फिर फुर्सत से बैठकर हम अपने बारे में भी सोचेंगे। कुछ न कुछ तो करना होगा हमें !'

'समीर मैं भी तो बस दिन, महीने गिनती रहती हूँ। एक महीने पश्चात परीक्षा, फिर पढ़ाई के बंधन से मुक्त होकर तुम्हारे स्नेह भरे बंधन में उम्र भर के लिए बंध जाना चाहती हूँ।' वह बोलते जाती, अगर समीर ने उसे रोका न होता।

'हाँ एक बात और पूर्वी, मेरी गैर हाजिरी में यहाँ तुम्हें बाबा का हाथ बँटाना है, एक घंटा नियमानुसार यहाँ आकर बालभवन के कार्यक्रमानुसार किसी विषय पर बातचीत करना! और हाँ! सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि अगले महीने तुम्हारी फाइनल परीक्षा है। अपनी पढ़ाई मन लगाकर रोज करोगी, उसमें कोई कमी कसर न आए, यह वादा करो।'

'मेरा वादा है समीर, मुझे भी उस पल का इंतजार है, जब!'

'बस बस अब कुछ और न कहना, बस मेरे आने का इंतजार करना।' कहते हुए समीर ने अपनी बात को विराम दिया।

'समीर वहां से मेरे लिए क्या ले आओगे?' जाने से पहले पूर्वी ने जानना चाहा।

'प्रेम का प्रतीक, सलोना सा एक ताजमहल!'

उसे जाना था, वह चला गया, वहाँ जहां मंजिल उसका इन्तजार कर रही थी। उसे अपने आप पर तो भरोसा था, पर आने वाले कल की उसे भनक न थी। जानता था तो बस एक बात, कि पूर्वी के पिता यह कतई नहीं चाहते थे कि वे दोनों आपस में मिलें, स्नेह बढ़ाएँ। शादी के बारे में सोचना तो बहुत दूर की बात थी। कारण क्या हो सकता है, समीर सोचता ही रह जाता ? वह एम० ए० पास है, अच्छी फर्म में स्थाई नौकरी है, एक अपना घर, भले ही वह छोटा है, और अब यह प्रमोशन का प्रविष्ठि पत्र, जिस के लिए उसे इंटरव्यू देने जाना था। और अगर कामयाब हुआ तो दस दिन की ट्रेनिंग और फिर.....!

वह आगे सोचना नहीं चाहता था, सब निरर्थक होगा, जब तक पूर्वी के पिता को यह रिश्ता मंजूर न होगा। सब कुछ तो था जो उसके पास, पर फिर भी न जाने क्यों, किस बात को लेकर पूर्वी के पिता रामलाल प्रसाद उसे अपनी बेटी के लिए योग्य नहीं समझते... या...?

'अब तो तुम्हें अपनी जात की कोई भली सी लड़की देखकर शादी कर लेनी चाहिए। अच्छा खासा कमा लेते हो, घर भी है, बस जाओगे!' एक दिन घर के बाहर निकलते ही रामलाल प्रसाद ने समीर को सामने आते देखकर सलाह देते हुए एक संकेतात्मक संदेश दे दिया।

'जी अंकल, करूंगा, जरूर करूंगा यह तो तय है, पर कुछ समय लगेगा। जाने भाग्य की रेखाएँ किस के साथ जुड़ेंगी, यह तो राम ही जाने ?'

'यह तो है, अगर माता दृपिता या सगे—संबंधी होते तो एक ठिकाना मिल जाता। पर अब जो भी है, तुम्हें एक जीवन संगिनी की जरूरत है, ताकि तुम्हारा ग्रहस्थ जीवन भी बस जाए।' 'मतलब...?' अब समीर सटपटा गया। उसे अपने भीतर कहीं कुछ टूटता हुआ लगा। पर वह रुका नहीं, आगे बढ़ता गया।

पिछले चार सालों से पूर्वी और समीर एक ही कॉलेज में पढ़ते रहे, मिलते रहे, बतियाते रहे और कब स्नेह की रेशमी डोर उन्हें प्यार के बंधन में बांधती रही उन्हें पता ही न चला। और देखते ही देखते समीर बी० ए० के बाद ए०म० समाप्त करके इल्म और हुनर के बलबूते पर जिंदगी के मैदान में अपना एक खेमा बना पाया।

बस्ती में उसके धरम–पिता दीनानाथ अगम का भी बहुत नाम रहा है । सारे कस्बे में दीनानाथ अगम एक चर्चित जानी मानी हस्ती की हैसियत से नहीं पर एक नेक सच्चे अध्यापक के नाम से जाने जाते थे। वे मैट्रिक पास थे, और उन दिनों मैट्रिक तक शिक्षा पाने वालों का बड़ा नाम और सम्मान होता था। तमाम उम्र एक पाठशाला में शिक्षक रहे, इज्जत से अपनी पत्नी के साथ संतुष्ट जीवन गुजारा। अपनी तो कोई औलाद थी नहीं, जितना हो सका दीन–दुखियों की मदद की, और एक सामाजिक जवाबदारी को निभाते हुए अपने हर कार्य से निवृत होकर बस्ती के बच्चों में ज्ञान की रोशनी फैलाने के कार्य में लग गए।

दीनानाथ अगम ने बस्ती में स्थित अपने ही घर के खुले आँगन में 'अगम बाल भवन' की नींव रखी, और समय के सहकार से उसका स्वरूप देखते ही देखते बाल–पाठशाला सा स्थापित हो गया। उनकी पत्नी, मीरा भी इस भवन में सहयोगिनी तो थी ही, अब सहकारिणी बनकर कार्य में हाथ बँटाती रही। दोनों पति–पत्नी आस–पास की बस्तियों के उन गरीब बच्चों को पढ़ाया करते, जिनके माँ–बाप घरों में, बागों में, दफ्तरों में काम किया करते थे। काम क्या था एक गुलामी थी, जहां अपनी मर्जी के खिलाफ रोजी–रोटी के नाम पर एक वक्त के खाने का जुगाड़ हो जाता था। इसमें दोष उनका भी कहाँ था, दाल रोटी का जुगाड़ करें, या बच्चों को पढ़ाएँ?

'अगम बाल भवन' में जब दोनों पति–पत्नी ने नियमित रूप से निःशुल्क, सुविधाजनक समय पर बच्चों को पढ़ाने के सेवाएँ देनी शुरू की, तो आस पास का सारा माहौल ही बदल गया। काम करने वाले माँ–बाप भी अब समय की कुछ पाबंदी पर अमल करने लगे। अपने बच्चों के भविष्य के निर्माण के लिए 'अगम बाल भवन' को शिक्षा का भव्य भवन समझने लगे।

'अरे मीरु काका अपने नाती समीर को भी यहाँ दो तीन घंटे भेज दिया करो। बिन माँ बाप का बच्चा है, सारा दिन खेतों में आपके आगे–पीछे फिरता रहता है। आपका जीवन तो कुछ बीता है कुछ बीत जाएगा। उसे भी तो अपना जीवन बनाने का मौका दो। मैं और तुम्हारी भाभी अब बच्चों के जीवन में रोशनी लाने के प्रयास में मन को लगाए रखते हैं। कुछ बच्चे हमसे सीख जाते हैं कुछ हम बच्चों से।' कहते हुए दीनानाथ जी ने मीरु काका के मन में एक आशा भर दी।

नेक सोच अपना मार्ग खुद तलाशती है, तराशती है। दो दिन बाद मीरु काका समीर को साथ ले आए और 'अगम बाल भवन' में शरीक करा कर निश्चिंत हो गए। एक तरह से उन्होने अपने दुर्बल हाथों की बागडोर दीनानाथ के मजबूत हाथों सौंप दी।

'मीरु काका समीर बहुत ही मेधावी लड़का है। देखना एक दिन पढ़ लिखकर वह इस कस्बे का नाम रौशन करेगा।'

'मालिक पढ़ना–लिखना तो वैसे भी जीवन को रौशन करता है, पर निस्वार्थ भावना से वही धन बांटने का परम कार्य जो आप कर रहे, उसके लिए इन बच्चों के माँ–बाप आप दोनों के कृतज्ञ रहेंगे। अज्ञान गरीबी को विरासत में मिला है, आपकी छत्रछाया में पढ़कर ये बच्चे हमेशा आपके कर्जदार रहेंगे। अब ये हमारे नहीं, आप ही के बच्चे हैं।' कहते हुए वह अपने आँसू धोती के छोर से पोंछने लगा।

कुछ अरसे के बाद मीरु काका समीर की आँखों में आंसुओं का सैलाब भरकर इस दुनिया से विदा हो गए। अब बाल भवन के सिवा समीर का न कोई ठौर था न ठिकाना। दीनानाथ ने उसे बेसहारा होने नहीं दिया, अपनी देख–रेख में कुछ यूं तराशा कि वह कंकर से हीरा हो गया। संस्कारों की सुगंध लिए वह जहां से गुजरता, सभी का मन मोह लेता।

बाल भवन के बगल वाली कोठी रामलाल प्रसाद की थी। उन्होने और आस–पास के अमीर लोगों ने विरोध किया।

'यह क्या कोई चौपाल है, जो हर रोज शाम को कोई न कोई चर्चा लेकर सभी इकाट्ठे हो जाते हैं ? भीड़ इकट्ठी हो जाती है, शोर भी बढ़ जाता है।' किसी ने कहा।

'अगर पढ़ने–पढ़ाने का इतना ही शौक है, तो एक पाठशाला खोलिए और यह ज्ञान वहीं बांटें!' यह आवाज सेठ रामलाल प्रसाद की थी जो उसी बस्ती के सबसे रईस सेठ माने जाते थे। उन्हें लगा कि पढ़ने के लिए छोटे लोगों का बस्ती में आना जाना उनकी शान, मान मर्याद को ग्रहण न लगा दे।

ज्ञान और आज्ञान का आपस में वही तालमेल होता है जो रोशनी और अंधेरे के दरमियान होता है। दीनानाथ अगम की सोच को एक दिशा मिली और उन्होने वहाँ के स्थानीय मंदिर के पुजारी से इस नेक काम के लिए सहयोग मांगा। पुजारी ने शाम की आरती

के पहले दो घंटे मंदिर का चबूतरा इस कार्य के लिए इस्तेमाल करने की स्वीकृति दे दी।

इन्सान का मन भी अजीब है। जिसके पास सब कुछ है वह कुछ बांटना नहीं चाहता, जिसके पास कुछ नहीं वह बहुत कुछ निछावर करने की तमन्ना रखता है। पुजारी में अभी भी आदमीयत का जज्बा बाकी था, और वह इस नेक काम में अपना सहयोग देने में पीछे नहीं हटा। हफ्ते में तीन दिन तय हुआ। अनपढ़ गंवार आस–पास की बस्ती से आने लगे। रोज किसी न किसी विषय पर चर्चा होती, कभी संस्कारों पर, कभी दया भाव पर, कभी सहकार व अन्य विषयों पर। प्रायरू इन विषयों पर दीननाथ जी एवं पुजारी बातचीत करते। सुनते सुनते अब लोगों के मन से हीनता विलूप होने लगी और आत्मविश्वास उजास होने लगा।

***नेक सोच अपना मार्ग खुद तलाशती है, तराशती है।***

उस बैठक में दीनानाथ अगम का चहेता समीर भी आकर बैठता, चर्चा में भाग लेता। वक्त ऐसा आया कि आस पास के मकानों और बंगलों के बच्चे भी आकर बैठने लगे। एक दिन पूर्वी, सेठ रामलाल प्रसाद की बेटी भी आन बिराजी। पिता ने बहुत विरोध किया, पूर्वी को समझाया, डराया, धमकाया, पर उसे घर की चौखट से बांध न पाये।

अंधेरा रोशनी में घुलने लगा था, भेद भाव की दीवारें कमजोर पड़ने लगीं, मानवता के नए कोंपल दिल–दिल में तुलसी की मानिंद अंकुरित हुए और पाक दिलों के बीच सरल स्वछ सोच दर्ज होने लगी। देखते ही देखते आठ साल बीत गए, बच्चे अब बड़े हुए, जो कस्बे में पढ़ते थे वे अब शहर की ओर रुख करते हुए आगे पढ़ने लगे। समीर कालेज गया तो दो साल बाद पूर्वी ने भी वहीं दाखिला ले ली। स्नेह का नाता कब प्यार में बदला पता नहीं! पर एक निष्ठा

थी, जो सब कुछ अनकहे मुखरित मौन के रूप में दोनों की दिलों में पनपती रही।

आज समीर अपने ओहदे की एक और सीढ़ी पर अपनी कामयाब मुहब्बत और जिंदगी का परचम फहराने जा रहा था। बालभवन से जुडते ही पूर्वी समीर से कुछ ऐसे जुड़ गई कि वह अपना समस्त जीवन उसके साथ बिताने के सपने सँजोने लगी। इस विषय पर आधी अधूरी बात कई बार उनकी बातचीत का विषय रही।

'समीर मैं बी० ए० के पश्चात तुम्हारे हर कार्य में सहभागिनी बनना चाहती हूँ।' एक दिन उसने समीर के सामने अपने मन की गांठ खोली थी।

'अरी पगली, अभी तो तुम अपनी परीक्षा की तैयारी में मन लगाओ और फिर मैं भी समयानुसार तुम्हारे पिताजी से बात करूंगा। उन्होंने अपने मन की बात तो एक दो बार मेरे सामने रखी है– कि मुझे अपनी जात की किसी भली सी लड़की देखकर शादी कर लेनी चाहिए, अच्छा खासा कमा लेता हूँ। मेरे घर बस जाने में उनकी कौन सी मुराद हो सकती है, पता नहीं ?'

'तुमने उन्हें बताया नहीं कि हम जीवनसाथी बनकर अपना जीवन गुजारना चाहते हैं ?'

'मैं नहीं कह सका, तुम प्रयास करके देखना!' कहते हुए समीर ने उसके गाल पर हकली थपकी देते हुए उसके अहसासों को छू लिया।

'समीर मैं जानती हूँ पिता जी कट्टर हैं, जिद्दी है, और तो और वे इस शिक्षा प्रणाली को मलेरिया की तरह फैलाने के कारण भी बहुत उखड़े हुए हैं। फिर भी मैं उनसे बात करने की कोशिश करूंगी'

.... और समीर चला गया, एक आस, एक प्यास दिल में लेकर! और मैं फिर भी उसे रोकने में असमर्थ रही!

**दि**ल में भड़कती हुई आग को बुझाने के प्रयास में सेठ रामलाल प्रसाद ने अपनी बेटी पूर्वी की जिंदगी को शोलों में झोंकने अगुआई की। एक पिता होने की दस्तावेजी हैसियत के नाते, उससे बिना पूछे उसकी शादी एक रईस व्यापारी घराने में तय कर दी और महूरत निकलवा कर घर में बात का ऐलान किया। शादी के तारीख सिर्फ

दो दिन बाद.....पूर्वी की जैसे सांसें रुक गईं। ‘पिताजी.....!’

‘कुछ कहने सुनने का समय नहीं है। बात बन आई है तो उसे खुशी राजी मन से स्वीकारो और सम्पूर्ण होने दो। जिंदगी सिर्फ शब्दों का खेल नहीं है, उसे घारने के लिए और चीजों की भी जरूरत होती हैं। मैंने तुम्हारा भला सोचा है, और इसीमें तुम्हारा भला है।’

‘पर मेरी परीक्षा.....!’ अधूरे एहसास अल्फाज बनकर गले में घुट कर रह गए।

वह कुछ कहती उससे पहले फोन की घंटी बजी, जिसे उठाते हुए रामलाल प्रसाद उस ओर से आती आवाज पहचानते हुए संजीदा स्वर में कहा– ‘समीर, पूर्वी अभी तुमसे बात नहीं कर पाएगी। घर में मेहमान आए हैं, और शादी के शगुन भी शुरू होने को है।’

‘अंकल किसकी शादी है?’ उस ओर से सवाल उठा।

‘पूर्वी की, और किसकी ? क्या तुम्हें यह भी नहीं मालूम ? तुम तो पूर्वी के अच्छे दोस्त हो और मैं भी तुमसे बहुत उम्मीद लगाए बैठा था, कि तुम्हारी बहुत मदद मिलेगी। पर पता चला कि तुम बाहर गए हुए हो, अच्छा रखता हूँ...’

‘पर अंकल यह सब इतना जल्दी कैसे हो गया ? पूर्वी ने तो मुझे इस बारे में कुछ नहीं कहा!’

‘नहीं कहा, ताज्जुब की बात है। खैर अब मैं फोन रखता हूँ, काम बहुत बाकी है... तुम शादी में जरूर आना।’

‘शादी कब है ?’ समीर को अपनी आवाज जैसे कोसों दूर से आती हुई लगी।

‘आज शुक्रवार है, इतिवार को शादी है! और सोमवार को रात की गाड़ी से बाराती कानपुर के लिए रवाना होंगे। आसरा राम का, सब ठीक हो जाएगा....!’

संदेश क्या था, पिघला हुआ शीशा था, जो पूर्वी के कानों में रिसने लगा। दिल को सदमा इतना गहरा पहुंचा, कि उसे अपने वजूद के होने और न होने में कोई अंतर दिखाई नहीं दे रहा था। वह तो फकत एक बुत बनके रह गई, जिसकी न कोई इच्छा थी, न कोई उमंग। बस दो दिन पश्चात गुड़िया की तरह सज–धज कर वह मंडप में बिठा दी जाएगी, ब्याही जाएगी उसके साथ जिसे उसने कभी देखा तक नहीं है। हाँ यह जरूर जानती थी कि शादी के बाद उस पति

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

की धर्म–पत्नी बनकर जीवन धारेगी। जिसके साथ जीने के सपने देखे, उन सपनों को खुद अपने हाथों ध्वस्त करना होगा, उसे समीर को भूलना होगा। पर भुला पाना भी क्या किसी के बस में होता है ? जो पल–पल याद में बसा हो उसे कोई कैसे भुलाए ? पिता ने पूछे बगैर फैसला किया, और सिर्फ हुक्म की पैरवी करने की इजाजात दी। गुनाह नहीं बताया सिर्फ सजा सुना दी!

'पूर्वी.....!' धड़कती साँसों में एक हलचल हुई।

'समीर.....!'

'बधाई हो!'

'........!'

'अरे समीर तुम वक्त पर आ गए, चलो अच्छा हुआ। अब तो कुछ हाथ बंटाओ। बाहर मेहमानों के आने की तैयारी में कोई कमी न रह पाये, जरा देख लेना।' कहते हुए सेठ रामलाल प्रसाद धोती का छोर पकड़ते हुए किसी और काम के लिए लपके।

समीर ने हारे हुए सिपाही की तरह अपने सभी शस्त्र समर्पित करते हुए एक पैकेट पूर्वी की ओर बढ़ाया। मौन में सिर्फ सवाली आंखें उठीं, जैसे पूछ रही हों– 'यह क्या है..... ?'

'यह प्यार का प्रतीक–सलोना सा ताजमहल....!' समीर सिर्फ इतना ही कहा पाया।

दोनों के बढ़ते हुए हाथ कंपकंपा रहे थे, जैसे कोई जिलजिला अभी अभी करवट लेकर उनकी दिलों में अपनेपन की दीवार की ईंटों में परायेपन की दरारें चौड़ी कर गया हो। पूर्वी के हाथ उस सौगात को संभाल पाने में नाकामयाब रहे। समीर के पलटते ही वह मुहब्बत का मिनार गिरकर टूटा, टूटकर बिखर गया। पर टूटने की आवाज किसी के कान तक न पहुँच पाई।

प्यार का प्रतीक ताजमहल उनके बीच में पड़ा था। सवाली आँखें, जवाबी होंठ जैसे मुखरित मौन में कह रहे हों– 'ये हूँ मैं और ये है ताजमहल।'

एक अनछुआ अहसास अब भी खंडहरों में धड़कता है, सांस लेता है।

***

# <u>फार्म – 4</u>

स्माचार–पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून 1956 के आठवें नियम के अन्तर्गत **'मधुराक्षर' त्रैमासिक पत्रिका** से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का आवश्यक विवरण–

1. प्रकाशन का स्थान : **जिला कारागार के पीछे, 9 ब, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212601**
2. प्रकाशन की आवर्तिता : **त्रैमासिक**
3. प्रकाशक/मुद्रक का नाम : **बृजेन्द्र अग्निहोत्री**
4. राष्ट्रीयता : **भारतीय**
5. सम्पादक का नाम : **बृजेन्द्र अग्निहोत्री**
6. राष्ट्रीयता : **भारतीय**
7. पूरा पता : **जिला कारागार के पीछे, 9 ब, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212601**
8. कुल पूंजी का 1 प्रतिशत से अधिक शेयर वाले भागीदारों का नाम व पता : **स्वत्वाधिकारी बृजेन्द्र अग्निहोत्री**

*"मैं **बृजेन्द्र अग्निहोत्री** घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त सभी विवरण सत्य हैं।"*

–बृजेन्द्र अग्निहोत्री

लघुकथा

राजेश कुमार
अररिया, बिहार
rajeshraj44@gmail.com

# गुलमोहर

**मा**नव प्रकृति का एक अभिन्न अंग है, प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना निरर्थक है। हमारी सांसों की डोर प्रकृति से जुड़ी है। ऐसी तमाम बातें हम बचपन से सुनते ही नहीं ब्लकि महसूस करते रहे हैं, किन्तु आज भौतिकता ने लोगों को इस तरह प्रकृति प्रेम से विरत कर दिया है कि आज उसका प्रतिफल भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता दिख रहा है– पर्यावरण प्रदूषण की सौगात और ऑक्सीजन की कमी आदि।

सरकारी तंत्र में एक साधारण शिक्षक की भूमिका में हमने लगभग हजारों पौधे लगाए और औरों से लगवायें होगें। उन पौधों को बड़े होते देख उनमें फल और फूल लगे देख आनंद का अनुभव किया, जब उसकी लचीली कोमल डाली पर रंग बिरंगें बुलबुल, गौरेया आदि पक्षियों को झूलते देखता तो मन आह्लादित हो उठता और कवि शिव मंगल सिंह 'सुमन' की पंक्तियां याद हो आती जो हमने बचपन में अपनी पाठ्य पुस्तक में पढा था। हम पंक्षी उन्मुक्त गगन के....... बस सपनों में देख रहे हैं तरू की फुनगी पर के झूले...... सचमूच ऐसी संवेदनशील रचनाएं भी हमें बचपन में प्रकृति प्रेम को बढाने में संजीवनी का काम कर गयी।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

किन्तु आज जो मैंने महसूस किया उससे आहत होना लाजिमी था, हुआ यूं कि मुझे सरकारी आवास जो आवंटित किया गया था, उसके आसपास अनेक फलदार वृक्ष के साथ–साथ सामने की तरफ दो गुलमोहर के पेड़ लगे थे, उससे गिड़ते सुखे पत्तों व फूलों से आते जाते लोग परेशान रहते । कई बार तो नसीहत देने पहुंच जाते इसे कटवा दिजिए। बहुत कचरा फैलता है जबकि पेड़ के नीचे की सफाई मैं खुद करता ,झाड़ु लगाता । पतझड़ के बाद उसमें हरे–हरे पत्ते लगते पीले–पीले फूल सबको आकर्षित करते। मैंने उस गुलमोहर के पास ही सीमेंन्ट का एक चबुतरा दो व्यक्तियों के बैठने लायक लगा दिया । गर्मी के दिनों में तपिश से बचने के लिए जब भी कोई भी व्यक्ति या डिलिवरी ब्याय भरी दोपहरी में आता और उस पेड़ के नीचे थोड़ी देर जरूर ठहरता और राहत महसूस करता ,उस पत्थर पर बैठ जाता और एक ग्लास पानी पीकर असीम ठंडक महसूस करता। पेड़ों पर पक्षियों की झुंड भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रहती, मानों पेड़ की डाली कोइ पिकनिक स्पाट हो। सामने वाले क्वार्टर में पांडे जी रहते है । उन्होंने अपने क्वार्टर के आसपास बड़ी सफाई कर रखी है । गुलमोहर का एक भी पत्ता उधर उड़के चली जाती मानो सामत आ जाती, तुरंत सफाई करते । वे खुद भी बहुत साफ सुथड़े रहते। कुछ महीने पहले उनकी बुढी विधवा मां रहने आई, उन्हें जब कभी मौका मिलता घर में लगें ए सी से निकल कर इन दोनों गुलमोहर पेड़ के नीचे लगे पत्थर पर आकर घंटों बैठती और शीतल छाया उन्हें बहुत भाता, फिर पांडेजी को आफिस से आते देख अपने क्वार्टर की ओर चल पड़ती।

गुलमोहर में फल भले न मिलते हो किन्तु अप्रत्यक्ष जो आंनंद मिलता रहता, उससे पेड़ काटने की कल्पना सपने में भी नही की जा सकती थी। भले पांडेजी नाराज होते रहते। कोरोना महामारी की दूसरी लहर में पांडेजी की पत्नी चल बसी। अब पांडेजी के जीवन में एक अजीब सूनापन है, बुढी मां अब उनके साथ ही रहती है।

इस बार भी मौसम सुहाना हो गया, जब गुलमोहर के पीले–पीले फूल खिलखिलाते लहराते दिखे।

लघुकथा

**अनुज सारस्वत**
हरिद्वार (उत्तराखंड)

# समझदार

'आकृति आखिरी बार कह रहा हूँ मान जाओ, तुम्हारे चक्कर में कितना किया है मैंने। अपना शहर छोड़कर तुम्हारे शहर में कोर्स करने के बहाने आया। चार साल का रिलेशन है, तुम्हें बहुत चाहा है मैंने और तुम कह रही हो अब कोई रिलेशन नही रखना... तुम्हें करियर बनाना है, अपने घर वालों के हिसाब से चलना है, देखो मैं सुसाइड कर लूंगा।'

इतनी देर में दूसरी साईड से फोन कट चुका था। रोहन के मन मस्तिष्क जल उठा था। गुस्से वह रूम से निकला। बाहर हल्की हल्की बारिश हो रही थी, फोन घर पर ही छोड़कर गया, उसके कदम सीधे बार में जाकर रुके। करीब लगातार सात–आठ पैग लगा चुका था। शराब पीने से रह–रहकर आकृति के साथ बिताने पल याद आने लगे थे, जिससे उसकी सुसाइड करने की इच्छा तीव्र होती गई। उसने घर जाकर पंखे से लटककर सुसाइड करने का निर्णय ले लिया।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

बॉर से निकलकर तेज कदमों से बढ़ने लगा। बारिश ने विकराल रूप धारण कर लिया था। बारिश से बचने के लिए मैदान में बनी एक झोपड़ी की ओट में खड़ा हो गया। तभी उसे झोपड़ी के अंदर से चीख सुनाई दी औरत की। उसने अंदर देखा तो एक औरत प्रसव पीड़ा से चीख रही थी, उसका आखिरी महीना था। नशे में होने के बावजूद उसने हिम्मत करके मदद के लिए झोपड़ी में गया, तो वह औरत उससे बोली– 'भैया जल्दी डाक्टर के ले चलो मुझे, मेरे बाबा बाहर हैं, मैं रुक नहीं पाऊंगी।'

इतने में उसके बाबा बाहर से आये। उसकी बेटी ने सारी बात बताई। रोहन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। बारिश बहुत तेज थी, हास्पिटल बहुत दूर था। कोई आ जा नहीं रहा था। रोड पर दोनों ने फिर ठेले पर डालकर ले जाने की सोची। इतने में लड़की का धैर्य जबाब दे गया, और रोहन को बोली– 'भैया मैं नहीं रुक पाऊंगी, आपको ही प्रसव कराना होगा।'

इतना सुनते ही रोहन के होश उड़ गये। सारा नशा उतर गया। वह वहां से भाग जाना चाहता था, लेकिन लड़की के बापू ने

हाथ जोड़कर बच्ची के जीवन के लिए गुहार लगाई। फिर लड़की के कहे अनुसार मोटी चादर डाल दी। उस पर भयंकर चीख के साथ एक बच्चे को जन्म दिया। रोहन से बच्चे को उठाकर नाल काटने को कहा गया।

नाल काटने के बाद बच्चे को उठाया तो झर–झर आँसू निकल पड़े रोहन के, क्योंकि जो जीवन समाप्त करने जा रहा था उसके हाथ एक नव जीवन का जन्म हो चुका था।

बाहर बारिश बंद हो चुकी थी। बाहर पुलिस की गाड़ी साईरन बजाकर निकली तो तुरन्त लड़की के बापू ने उन्हे रोक लिया और बिटिया को गाड़ी में डालकर बाकि ट्रीटमेंट के लिए ले गये साथ में रोहन भी था। बापू ने सारी कहानी बताई कि कैसे उसकी लड़की को उसके पति ने छोड़ दिया गर्भवती करके, लेकिन लड़की ने हार नहीं मानी, बच्चे को जन्म देने का फैसला लिया।

रोहन वहां से लौट आया, गजब परिवर्तन आ चुका था। अपना सामान उठाया और अपने शहर लौट गया। घर पहुंचा, माँ ने दरवाजा खोला। जिनसे दो साल पहले लड़कर गया था। जाते ही पैरों में गिर गया। सारी बात बताई उन्हें, और बोला– 'मम्मी आप लोगों से ज्यादा मजबूत कुछ नहीं है इस संसार में, 10000 हजार बिच्छुओं के काटने के बराबर दर्द सहकर आप हम लोगों को जन्म देते हो, फिर हर परिस्थिति में पालते हो सहते हो, अब समझ आया धरती को भी माँ की संज्ञा क्यों दी गई, और हम बेवकूफ छोटी–छोटी बातों में अपना जीवन समाप्त करने की सोचते हैं! इतनी मुश्किल से जीवन मिलता है एक ही, उसे सही करने के बजाये बोझ मानते हैं, आपका कर्ज नहीं चुका सकते कभी हम!'

बीच में माँ रोकते हुए उसके सर पर हाथ रखकर बोली– 'चल चल ज्यादा ना सोच! मेरा बेटा समझदार हो गया है। ईश्वर की बड़ी कृपा है, बता क्या खाएगा ?'

'नहीं मम्मी, मै बनाऊंगा आपके लिए, आपके फेवरेट लौकी चने का साग दही डालकर।'

माँ मुसकुरा रही थी।

व्यंग कथा

धर्मपाल महेंद्र जैन
1512–17 एनडेल ड्राइव, टोरंटो M2N2W7, कनाडा
dharmtoronto@gmail-com

# वैशाली में ऑक्सीजन कंसंट्रेटर

दुनिया में त्राहिमाम मचा था। कई देशों के राजा शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर घुसा रहे थे। विलाप करती प्रजा को देखने के लिए न वे आँखें खोलते थे और न ही वायुमंडल से प्राणवायु लेते थे। उनका ऑक्सीजन सिलेंडर वहीं रेत में धँसा था। सिलेंडर सीधा टैंक से जुड़ा था और टैंक ऑक्सीजन प्लांट से। वैशाली के राजा वहाँ से आराम से साँस ले सकते थे। आज महामंत्री ब्रीफिंग के लिए आए तो साथ में एक पैकेट लाए। बोले– महाराज, रेत में से निकलिए। अमेरिका ने आपको पोर्टेबल ऑक्सीजन कंसंट्रेटर की गिफ्ट भेजी है। हर मिनट में यह छः लीटर ऑक्सीजन देता है। आपकी सप्लाई पक्की हो गई, अब जनता की सुध लें।

महामंत्री से पैकेट लेकर राजा महारानी के कक्ष में पहुँचे। बोले, प्राणप्रिये कपालभाति कर–करके तुम्हारा कपाल प्रबुद्ध और काया तन्वंगी हो गई है। यह ऑक्सीजन कंसंट्रेटर रखो और निरापद रहो। मैं राजा हूँ, प्रजा महामारी झेल रही हो तो मैं महल में नहीं रह सकता। मैं अपने सुरक्षा बबल में खुश हूँ। कंसंट्रेटर पाकर महारानी अति प्रसन्न हुई। वस्तुतः वह सेनापति के वियोग और उसकी चिंता में घुली जा रही थी। वह गुप्तमार्ग से सेनापति के रनिवास में पहुँची और बोली–

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

हे प्रिय, तुम्हें रात–दिन राज्य में घूम–घूम कर कानून और व्यवस्था को मुरब्बा बनने से रोकना होता है, यह कंसंट्रेटर रखो, तुम्हारे प्राण बचेंगे तो मेरा जीवन सार्थक होगा।

महारानी के सुरंग में लौटते ही सेनापति छद्मप्रेम से बाहर निकल आया। विपक्ष की कद्दावर नेत्री ही उसकी मूल प्रेमिका थी। वही इस कठिन समय में भी रोज राजा को चेतावनी–पत्र लिखती थी और प्रेस को थमा देती थी। राजा पर उसे कतई भरोसा नहीं था कि वह कभी ऐसे पत्रों को पढ़ेगा और मानेगा कि उसके राज्य में विपक्ष जैसा भी कुछ है। मध्यरात्रि हुई। सारे खुफिया तंत्र की नजरों में धूल झोंक कर सेनापति अपनी प्रेमिका से मिला और उसे अमेरिकी कंसंट्रेटर

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

उपहार में दे दिया। विपक्षी नेत्री की जान में जान आ गई। अन्यथा इन दिनों उसके खास भी उसकी सुध नहीं ले रहे थे और दरबार में झाडू–पोछा लगाने का अवसर तलाश रहे थे। उसने सेनापति को जी भर प्यार करने दिया और राजा के सारे भेद उगलवाती रही।

भोर हुई। टीवी चैनल पर ब्रेकिंग न्यूज में राजा के सारे भेद सार्वजनिक हो रहे थे। विपक्षी नेत्री ने प्रियतम एंकर को अपने घर कॉफी पर बुला कर राजा के सारे भेद उगल डाले थे और ऑक्सीजन कंसंट्रेटर उसे उपहार में दे दिया था। कंसंट्रेटर के दम पर जनतंत्र का चौथा स्तंभ सारे दिन मुखर बना रहा। राजा से जनता वैसे भी थक चुकी थी। राजा की चालबाजियों के सनसनीखेज उद्घाटन से जनता मुर्दा ही बनी रही। इसके चलते राजा के अंधभक्त और निष्ठावान हो गए। राजद्रोही चौनल की ईंट दर ईंट उखाड़ना उनका अंतिम ध्येय हो गया। दिन भर चिल्ला–चिल्ला कर एंकर बहुत थक चुका था। वह गला तर करना चाहता था। वह अपनी सुपरिचित गलियों से गुजरते हुए नगरवधू मित्र के वीआईपी रूम में दाखिल हो गया। नगरप्रिया ने संगीत, नृत्य और मादक अदाओं से, मायूस एंकर में हमेशा की तरह नई जान भर दी। ऑक्सीजन कंसंट्रेटर वैशाली की नगरवधू के हाथों में आकर धन्य हो चुका था।

रात्रि का चौथा प्रहर होने वाला था। योगासन करने का सबसे मुफीद समय, शांत और शीतल पवन से लबरेज आसमान। अपने बगीचे में प्रातः भ्रमण की तैयारी करते हुए राजा के कानों में पायल की छन–छन गूंज उठी। राजा ने शयनकक्ष नहीं छोड़ा, राष्ट्रप्रिया का सानिध्य उनके सारे तनाव दूर कर गया। वे खुश हो कर बोले– सुप्रिया, यह लो हीरे का हार। हीरा व्यापारी लंदन भागते–भागते यहाँ छोड़ गया था। तुम्हारे ग्रीवा तल पर अद्‌भुत लगेगा। सुप्रिया बोली– हे राष्ट्रनाथ, बाहर बहुत आपदा है। कठिन समय है। जनता साँस नहीं ले पा रही है। अस्पतालों में बिस्तर खाली नहीं है, दवाइयाँ नहीं है, ऑक्सीजन नहीं है। इस ऑक्सीजन कंसंट्रेटर का उपहार आप स्वीकारें। आप जीवित रहेंगे, तो राष्ट्र बचेगा, राष्ट्रभक्त बचेंगे। सुप्रिया लौट गई। वही कंसंट्रेटर देख राजा खिन्न हो गए, किसी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहे और पुनः रेत के घरोंदे में घुस गए।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

डॉ. सम्राट सुधा
94, पूर्वावली, गणेशपुर, रुड़की, उत्तराखंड 247667

# दृष्टिकोण

**सा**हित्य मात्र साहित्यकार के नितान्त वैयक्तिक जीवन का ही प्रतिफल नहीं है, अनेक रचनाएँ अन्य के जीवन से उद्भूत होती हैं और उस अन्य सहित ना जाने कितनों के जीवन को बनाती हैं! एक ऐसी ही रचना– सम्बद्ध घटना है आज से लगभग अट्ठारह वर्ष पूर्व की, जब मैं मसूरी के एक बोर्डिंग स्कूल में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में अध्यापनरत था। स्कूल में गणित विभाग में एक अध्यापिका का चयन गणित की विभागाध्यक्ष के रूप में हुआ। वे नव विवाहिता थीं, गणित विषय में निपुण और साहित्य पढ़ने–सुनने की बहुत शौकीन! स्कूल में प्रत्येक शनिवार की शाम साहित्यिक–सांस्कृतिक संध्या होती थी, जिसमें मैं भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करता था, तो स्वाभाविक रूप से उनसे मेरी मित्रता हो गयी। वे मेरी प्रत्येक नयी रचना, जब अवसर मिलता, सुनाने को कहतीं और मुझे ऐसी श्रोता, जो स्वयं सुनाने की मनुहार करे, भला कहाँ मिलने वाली थी। वे अपने पति की नौकरी, व्यवहार आदि की बातें मुझे बतातीं। उनके पति बीएसएफ में अधिकारी थे और असम में तैनात थे। उनकी यह शिकायत भी थी कि पतिदेव बस रात को ही थोड़ी देर के लिए फोन कर पाते हैं।

एक बार उन्होंने बताया कि उनके पति ने असम से उनके लिए एक शाल कूरियर द्वारा भेजा है। हम रोज शाम उस कूरियर की


ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

स्थानीय ब्रांच जाते और उनका पैकेट आने की पूछताछ करते। कूरियर वाला कहता भी कि पैकेट जब आएगा, तो वह स्कूल लाएगा ही, लेकिन वे फिर भी प्रत्येक शाम मुझे कूरियर के ऑफिस तक ले जातीं और उधर से मुँह लटकाएं लौटतीं। उधर असम से उनके ऑफिसर पति रोज रात को शाल मिलने के बारे में पूछते।

एक दिन जब हम मैस में लंच ले रहे थे, उनका पैकेट आया, तो वे शाम को वह शाल दिखाने की बात कहकर रूम में पैकेट रखने चली गयीं। शाम को प्ले ग्राउंड में सभी टीचर्स खेलते, घूमते, बैठते और बतियाते थे। वह शाम को जब आयीं, तो लाल रंग का एक नया शाल हाथ में था, लेकिन चेहरा बुरी तरह लटका हुआ था। आते ही फूट पड़ीं– अभी तक उसे मेरी पसंद का पता नहीं सर! इस रेड कलर से हेट करती हूँ मैं पूरा हेट! इसके साथ कैसे गुजरेगी जिंदगी!! उन्होंने यह भी बताया कि आज रात वे पतिदेव को जली–कटी सुनाने वाली हैं! उनकी बातें सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। मुझे लगा कि असम में बीएसएफ जैसी रिस्की फोर्स में तैनात उनके पति ने पहले शाल लिया, फिर इतनी दूर मसूरी के लिए कूरियर किया य फिर रोज मिलने का पूछते रहे और ये हैं कि रंग पर ही अति रुष्ट हो गयीं। मैंने यह भी सोचा कि रात को इन्होंने यदि उन्हें बुरा–भला कहा, तो उस इतनी दूर व इतनी संवेदनशील नौकरी करने वाले पर आखिर क्या बीतेगी! उन्हें ग्राउंड में ही छोड़ मैं अपने रूम में आ गया। एक शेर उसी समय लिखा गया ,जिसमें उनके शाल के रंग पर क्रोध ही नहीं, पति के फोन पर अत्यल्प बात कर पाने की शिकायत का भी समुचित उत्तर था। वह शेर इस प्रकार है –

*'तेरा तोहफा तेरे प्यार की खुशबू लिए कल आया है*
*इसका मतलब इतने लम्हें तुमने मुझको सोचा है!'*

यह शेर मैंने उन मैडम को एसएमएस कर दिया, वह सामान्य मोबाइल का ही समय था। वे साहित्य की मर्मज्ञ महिला थीं, थोड़ी देर में उधर से एसएमएस आया– 'इसका उत्तर डिनर पर दूंगी!'

लगभग दो घण्टे बाद जब मैं मैस में पहुँचा, तो वे वही लाल शाल ओढ़े हुए बैठी थीं!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

लघुकथा

डॉ. पूरन सिंह
240, बाबा फरीदपुरी, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली–110008

# रामलीला

लियाकत मियाँ सिलाई करते थे जो पेट पालने और परिवार के भरण–पोषण के लिए अपरिहार्य था। उन्हें एक शौक भी था। एक ड्रामा कम्पनी भी थी कस्बे में, उसी में, रोल अदा करते थे। चौड़ी छाती थी। गजब की लम्बाई। बड़ा–सा ललाट और घुँघराले बाल। लड़किया और ब्याही–ठियाही औरतें तो उनकी दीवानी हो जाती थीं जब वे सुल्ताना डाकू बनते थे। आवाज में जादूगरी थी। लियाकत मियाँ हमेशा लीड रोल ही किया करते थे, जैसे राजा हरिश्चंद्र, भरतहरि, मोरध्वज, लाला हरदौल।

उस वर्ष, कस्बे में, रामलीला का आयोजन था। कस्बे की ही ड्रामा कम्पनी थी। भगवान राम का चरित्ररोल करना था। क्योंकि

लियाकत भाई ही लीड रोल करते थे, अतः उन्हें ही मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का रोल अदा करना था।

जब वे सज–धज कर भगवान राम का रोल अदा करने मंच पर चढ़े और पहला ही डॉयलॉग बोला था कि कस्बे के ही भारतीय विद्या मंदिर में लगने वाली शाखा के लोगों ने हल्ला मचा दिया था, 'अरे ये तो लियाकत है......मुसल्ला... कटिल्ला...ये हमारे आराध्य का रोल करेगा।'

बस फिर क्या था। भीड़ बौखला गई थी। नाटक मंच तहस–नहस कर दिया गया था। तम्बू, चांदनी फटे पड़े थे। चारों तरफ हाहाकार मचा था। वह तो भला हो हारमोनियम बजाने वाले पण्डित देवव्रत चौबे का जिन्होंने लियाकत भाई को अपने घर में छिपा लिया था नहीं तो कच्छाधारी उन्हें जान से ही मर देते।

बस उसी दिन से लियाकत भाई ने चारपाई पकड़ ली। न जाने क्या सदमा लगा कि चारपाई पर एक बार गिरे तो फिर उठे ही नहीं थे और एक दिन उनका जनाजा ही निकला।

जब उनका जनाजा निकला था तब उनका बेटा तेरह साल का था। बेटा बिल्कुल अपने अब्बू की तरह ही था। वैसा ही सुन्दर चमकता ललाट, चौड़ी छाती, बुलंद आवाज।

अब भी ड्रामा होता है कस्बे में। पुराने कलाकार नहीं रहे हैं। नए लड़के आ गए हैं और इन्हीं नए लड़को में लियाकत भाई का बेटा भी है, अहमद। पिता की तरह ही लीड रोल करता है। पूरी ड्रामा टीम का चहेता।

सब उसको बहुत प्यार करते हैं। रामलीला होने को है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का रोल तो वही करेगा। टीम के सभी सदस्यों ने निश्चित कर लिया है।

कोई धीरे से बोला भी है, 'कहीं इतिहास फिर न दोहराया जाए।'

सभी ने एक स्वर में जवाब दिया, 'इतिहास से कौन डरता है। हम इतिहास बदल देंगे और रोल तो अहमद भाई जान ही करेंगे चाहे कुछ हो जाए।'

कहानी

डॉ. जया आनंद
maipanchami@gmail.com

# अलिखित पाती प्रेम की

'**मैं**ने प्यार किया' फिल्म का अंतिम दृश्य– प्रेम (हीरो) सुमन (हिरोइन) के लिए दो हजार रुपये कमाकर अपनी जान पर खेलकर सुमन का हाथ उसके पापा से मांगने आ गया है। सुमन की आंखे आँसुओं में डूब गयीं हैं और जैसे कह रहीं हैं– बाबा प्रेम के ये दो हजार रुपयों का मोल कोई नहीं लगा सकता! इतना प्रेम कौन कर सकता है... हाँ मैंने प्यार किया प्रेम से सिर्फ प्रेम से... फिल्म देखते हुए स्नेहा की आंखे भी छलक रहीं हैं। है कोई ऐसा क्या जिससे वो कह सके... जिसके लिए वो लिख सके पाती प्रेम की जैसे मैंने प्यार किया में कबूतर जा जा... गीत के साथ प्रेम की पाती प्रेमी तक पहुँच गयी थी।

स्नेहा फिल्म देखकर घर पहुँच गयी थी, पर मन तो वहीं अटका था, मन तो मन है उसकी उड़ान कहाँ तक जाती है और कहाँ उस उड़ान को ठौर मिले कुछ पता नहीं। स्नेहा के मन मे गूंज रहा था वही गीत... 'क्यों करने लगी मैं तुम पर ऐतबार, खामोश रहूं या मैं कह दूँ...या कर लूं चुपके से ये स्वीकार, यही सच है शायद मैंने प्यार

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

किया.. शायद यानी पक्का नहीं...स्नेहा ठिठकी कि माँ ने आवाज दी– 'स्नेहा!कपड़े बदलो, मैं चाय और नमकीन कचौड़ी बना रहीं हूं।'

'माँ! तुमसे मैंने और तुमने मुझे पक्का वाला प्यार किया.. यही सच है तुमसे मैंने प्यार किया..' स्नेहा गुनगुनाने लगी।

लेकिन हर बात इतनी तो सरल होती नहीं जितना हम प्रदर्शित करने की कोशिश करते हैं। माता–पिता, भाई–बहन वाला प्यार तो अलग है न! वो फिल्म के प्रेम और सुमन जैसा प्यार कहाँ और उनको वो लव लेटर यानी प्रेम की पाती... स्नेहा नहीं लिख सकती थी अभी किसी को भी, बस मन मे दबाकर रख लिया था कि कभी लिखेगी उस अंजाने अपने को। अभी तो पढ़ना है, फिल्म की हिरोइन सुमन भी तो पढ़ाई में अच्छी बनी थी।

'बेटा! पढ़ो यह समय पढ़ने का है, मन मस्तिष्क को एकाग्र करो।'

'अच्छी लड़की बनो, पहले अपने को संवारो!' ये सारी सीख सीखते–सीखते स्नेहा पूरी तरह से अच्छी लड़की बन गयी थी, और अच्छी लड़की की फिर शादी भी तय हो गयी... पर प्रेम की पाती की बात स्नेहा नहीं भूली थी। उसने लिखी प्रेम पाती अपने होने वाले पति को। प्रेम से भीगी हुई पाती, उस फिल्म के प्रेम की तरह तुम्हीं मेरे प्रेम हो..।

'स्नेहा!तुम बिल्कुल पागल हो धरती पर रहा करो, ख्याली पुलाव मत पकाया करो।' अंजलि समझाती रहती, पर स्नेहा का तो यथा नाम तथा गुण वाला हाल रहा। 'जो अपना हो जाए वही सबसे प्यारा' दादी कहती थीं और स्नेहा इस बात पर भरोसा करती थी तो फिर पति ही प्रेमी और उसे ही लिखी पाती प्रेम की।

सालों साल बीत गए पर स्नेहा को लगता है कि उसे प्रेम की पाती में और भी कुछ लिखना है, अब तो जीवन कई अनुभवों से गुजर चुका है तो प्रेम की पाती भी उन अनुभवों से परिपक्व होनी चाहिए श्तुम मेरे होश से कुछ बढ़कर।

संबोधन क्या और किस ? इस प्रश्न के चंगुल में स्नेहा फंस गयी है पर उसे लिखने की चाह है प्रेम की पाती जो अब तक उसने नहीं लिखी। वो लिखना चाहती है–

*तुम मुझे बहुत प्रिय हो,*

*तुम वैसे नहीं थे जैसा मैं सोचा करती थी, मेरी कल्पनाओं से दूर उस गीत की तरह बिल्कुल नहीं श्हाँ तुम बिल्कुल वैसे हो जैसा मैंने सोचा था। नहीं वैसे नहीं, पर तुमने ससम्मान मुझे अपने जीवन का हिस्सा बनाया इसलिए तुम मुझे बहुत प्रिय हो जब प्रिय मान लिया फिर हानि–लाभ, फायदा नुकसान ये सब तो पीछे हो गए, बस तुम्हारा साथ, तुम्हारे हर सुख दुःख की भागीदार मैं, तुम्हारे दुःख से तुम्हें हर सम्भव उबारने की कोशिश करती हुई, तुम्हारी उपलब्धियों को उत्फुल्लता से स्वीकार करते हुए विजयी मुस्कान लिए हमेशा तुम्हारे साथ खड़ी होती रहीं हूँ, तुम्हारे अपनों को हमेशा अपना माना है क्योंकि उनके लिए तुम्हारी आँखों में देखा है मैंने प्रेम और इस प्रेम में ही तो हमेशा झुकी हूँ। ऐसा नहीं कि तुम ने साथ नहीं निभाया पर क्रोध के बवंडर में कई बार सबकुछ ढहा भी दिया और लगा कि प्रेम जैसा तो कुछ भी नहीं शायद! फिर मेरी उपलब्धियों में तुम्हारी स्नेहिल मुस्कान भी सहज प्रकट नहीं हुई। इसमें शायद तुम्हारा दोष नहीं... शायद! सदियों से चली आ रही परिपाटी में स्त्री का अनुगामिनी रूप अधिक रुचिकर रहा है सहचरी का नहीं, पर मैं तो तुम्हें साथी के रूप मे स्वीकारती आई हूँ।*

*...कभी मैंने सोचा था कि तुमसे मित्रता करूं पर तुम तो कुछ और ही सोच बैठे और सोचा ही नहीं अभिव्यक्त भी कर दिया बिना*

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

जाने कि मैं क्या सोचती हूं, पर तुम्हारी इस सोच को सम्मान दिया। शायद! ये भी तो स्नेह है न!

मुझे शुचिता दी याद आती हैं, जिन्होंने प्रेम निभाने के लिए अपने रूढ़िवादी माता–पिता से जी तोड़ संघर्ष किया था, पर जिसके लिए संघर्ष किया उसी ने कदम पीछे कर दिए। प्रेम करते समय निभाने की शर्त होती है शायद उसे मालूम नहीं था या इतनी हिम्मत नहीं हुई कि अपने घर वालों को समझा ले। फिर शुचिता दी ने उसके लिए दरवाजे हमेशा के लिए बंद कर दिए। प्रेम ने घृणा का रूप ले लिया पर किसी एकांत क्षण में वो घृणा आँसू बनकर पिघलती हुई स्नेह का रूप धर लेती होगी।

स्नेह, प्रेम ये शब्द बड़े प्रिय हैं मुझे। लोग कहते हैं– 'बी प्रैक्टिकल स्नेहा!' मैं कोशिश करने लगती हूं प्रैक्टिकल होने की। स्नेह, प्रेम से पेट थोड़ी न भरता है... पर बिना प्रेम के काम भी तो नहीं चलता। सुविधा पूर्ण जीवन, वैभव, ऐशो–आराम सुख की अनुभूति नहीं दे सकते जब तक उसने प्रेम न घुला हो।

मुझे सपना की बात याद आ जाती है– रितेश बाद में और लड़कियों से भी आकर्षित हुआ... प्यार–व्यार जैसा कुछ नहीं था। हाँ सच ही तो कह रही हो सपना! तुम्हारे साथ भी आकर्षण था, कोई बंधन तो था नहीं, नहीं तो तुम भी उसे छोड़ कर शादी न करती! जो कुछ था वो था मधुर भाव जिसमें स्नेह घुला था बस उस भाव को संचित कर के रख लो अपनी जीवन निधि में... पर मैं तुमसे पूरी तरह असहमत भी नहीं जब तुमने कहा था– 'स्नेहा पता नहीं कहाँ से ये अधिकार भाव रितेश के प्रति जग जाता है!'

'बहुत स्वाभाविक है ये शायद सहज अनुभूति है बस इसकी अभिव्यक्ति का रूप अलग होना चाहिए अब, वो स्नेह मित्रवत रूप ले चुका है।'

सपना की बात याद आ गयी, क्योंकि संदर्भ तो प्रेम ही था... कभी ऐसी प्रतीति हुई कि तुम बिल्कुल वैसे हो जैसा मेरी कल्पनाओं के रंग में एक चेहरा उभरता था या ठीक वैसे नहीं तो सत्तर– अस्सी प्रतिशत तो समानता रही ही।

तुम मौन रहे और अभिव्यक्ति हुई भी तो अंदाज जुदा था।

*बहुत भाया सबकुछ। उस मौन स्नेह को जीवन की महकती डायरी के पन्नों में सहेज कर रख लिया और तुम्हें अपना मित्र बना लिया। पर मैं तो हर बार की तरह तुम्हारी बहुत अच्छी सच्ची मित्र बनी पर तुम मेरे जैसे मित्र नहीं बन पाये। तुम्हें मित्र मानना भी तो स्नेह ही है न!*

*स्नेह को जितना समझा है उससे यही आभासित हुआ कि प्रेम में किसी के लिए झुकने, किसी के लिए करने की इच्छा स्वतः जागृत होती है। दुआएं, शुभकामनाएं, प्रार्थनाएं ह्वदय से निकलती हैं और जहाँ तक पाने की बात है तो प्रेम का बदला तो प्रेम ही होता है। भौतिकता से परे भाव की अनुभूति अभाव को दूर करते हुए स्नेह को जन्म देती है।*

*लोग उदाहरण देते हैं कि नदी अपने लिए जल संचित नहीं करती, वृक्ष अपने लिए नहीं फलित होता, उन्हें अपने लिए बदले में कुछ नहीं चाहिए पर नदी हो या वृक्ष नमी तो चाहिए ही नहीं तो दोनों सूख जाएंगे।*

*मैं भी तो बस प्रेम के बदले में प्रेम की नमी चाहती हूँ, मत करो कुछ मेरे लिए पर इस नमी की हकदार मैं हूं।*

*ऐसे कई नम पल मैंने सहेजे हए हैं जब मेरे एक बार कहने पर तुम समोसा ले आए थे, मेरे बीमार पड़ने पर दिन–रात एक कर दिया था, जब तुमने मुझे मेरे संपूर्ण व्यक्तित्व को सराहा था... जब तुमने मुझे अपनी राह का साथी माना था... सबकुछ सहेजा है कुछ भी इधर–उधर नहीं। घर चाहे अस्त–व्यस्त रखूं पर मन को और मन मे स्नेह को बहुत व्यवस्थित रखा है।*

*सच कहूँ 'मैंने प्यार किया' फिल्म तो बहुत पुरानी हो गयी, पर फिल्म की खुमारी नहीं उतरी और न उतरेगी सचमुच मैंने प्यार किया। और हाँ, मुझे ये लव आजकल वाला समझ नहीं आता, मैं ऐसी ही हूँ।*

स्नेहा ये सब लिखना चाहती है पर शायद कभी नहीं लिख पाएगी, ये पाती प्रेम की अलिखित ही रहेगी, उसमें अभी शायद और भी अनुभव समाविष्ट होना शेष है!...और फिर इस प्रेम की पाती के उत्तर की भी अपेक्षा नहीं कर सकती क्योंकि इस पाती के गन्तव्य स्थल का पता भी उसे शायद नहीं मालूम या मालूम है!!!

व्यंग्य

# मियां मंहगू का मज़मा

अंकुश्री
8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, रांची (झारखण्ड) 834 010
ankushreehindiwriter@gmail.com

'**न**या वर्ष मुबारक हो मियां!'

'मुबारक हो, मुबारक हो! आओ भाई गोविंदा!'

'नये वर्ष के उपलक्ष्य पर तुम क्या लेकर बेचने आ गये मियां ?' सेठ गोविंदा ने पूछा, 'नया साल का कमाल और नया–नया माल! जरूर कोई चाल है।'

मियां मंहगू बोले, 'नया साल का कमाल दिखा कर माल बेचने का मैं कोई चाल नहीं चल रहा, क्योंकि मैं नये साल का ढ़ाल पहन कर किसी का हाल बेहाल नहीं करना चाहता।'

'यार, तुम भले ईमानदार बने रहो, लेकिन रंगदार दुनिया के सभी लोग तुम्हारी तरह वफादार नहीं हैं।' मियां मंहगू के बगल में बैठते हुए सेठ गोविंदा ने कहा।

'बात केवल ईमानदारी या वफादारी की नहीं है।'

'तो क्या सरकारी या गैर–सरकारी की है ?' सेठ गोविंदा के चेहरे पर प्रश्नवाचक चिह्न था। मियां मंहगू बहस के मूड में नहीं थे। वह बोले, 'अरे, क्यों बाल का खाल निकालते हो ? तुम्हें पता ही है कि किसी को काल के गाल में डालकर खुद मालामाल होने और फिर जाल में फांसना बहादुरी नहीं है। बहरहाल फंसने पर लाल घर में दाल की थाल पर झाल और दिवाल पर ताल बजाना पड़ेगा। गोविंदा, ऐसी बातें दिमाग में नहीं पाल, इसे टाल! जाड़े में शाल ठीक से संभाल कर सिर निकाल। पिछले साल का नया दिन याद है न ?

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

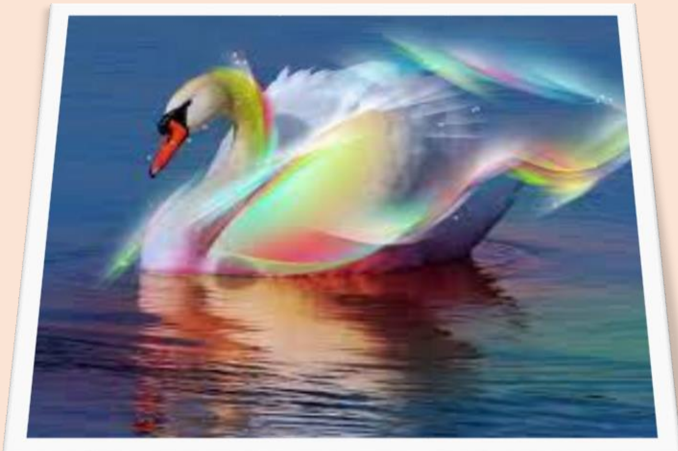

शीतलहरी ने ऐसा कमाल किया था कि लोगों का हाल बेहाल हो गया था।'

सेठ गोविंदा ने कहा, 'इन दिनों नया साल अपना अंतरराष्ट्रीय महत्व लेकर आता है। कभी बाल वर्ष तो कभी वृद्धा वर्ष, कभी महिला वर्ष तो कभी पुरुष वर्ष, कभी विकलांग वर्ष तो कभी... ।'

'अरे–रे–रे रुको भी!' मियां मंहगू ने सेठ गोविंदा को रोकते हुए कहा, 'अंतरराष्ट्रीय महत्व के किन–किन वर्षों का नाम गिना गये भाई ? मैंने तो अंतर्राष्ट्रीय पुरुष वर्ष का नाम नहीं सुना है।' कुछ रुक कर मियां मंहगू ने आगे कहा, 'सुनूं भी कैसे ? यह वर्ष मनाया भी गया है या नहीं ?'

'हो सकता है कि नहीं मनाया गया हो।' सेठ गोविंदा ने कहा।

'हो नहीं सकता, बल्कि है।' मियां मंहगू ने आश्वस्त होकर कहा, 'मैं कह देता हूॅ कि चाहे जितना नया साल आ जाये, लेकिन पुरुषों को किसी वर्ष याद नहीं किया जायेगा।' मियां मंहगू ने मुस्करा कर कहा, 'अरे गोविंदा, याद भी क्यों किया जाये ? भला पुरुषों के पास याद करने लायक है ही क्या ? महिलायें अपनी सुंदरता के लिये प्रसिद्ध हैं और इसके बदौलत अनेक चमत्कार कर डालती हैं। पुरुषों

के लिये अंतरराष्ट्रीय वर्ष मनाने की जरूरत ही क्या है ? हां, विकलांग वर्ष की उपयोगिता समझ में आती है।'

'अरे मियां, तुम भी तो विकलांगों के लिये मज़मा लगाते हो। स्वस्थ और सुंदर मानव तुम्हारे मज़मा की ओर ताकना भी पसंद नहीं करता, क्योंकि तुम उसके लिये कुछ बेचते ही नहीं हो।' सेठ गोविंदा ने तीखी बात कह दी थी।

मगर मियां मंहगू को गोविंदा की बात बुरी नहीं लगी । उसने खुष होकर कहा, 'वाह जी, तुम तो अंतर्राष्ट्रीय महत्व का विचार रखते हो।'

'आज नये साल का पहला दिन है, देखें, यह साल किस रूप में अपना अस्तित्व बनाता है।' सेठ गोविंदा ने नये साल के भविष्य पर आषंका व्यक्त की।

'नया साल ठीक से बीत जाये इसके लिये सबको प्रयास करना चाहिये।'

'हां, यह तो ठीक कहा।' सेठ गोविंदा ने उठते हुए कहा, 'इसके लिये हम सभी को कृतसंकल्प होना चाहिये।'

'चलो, अभी से अपने काम में जुट जाओ।' मियां मंहगू ने मज़मा लगाते हुए कहा।

'हां भाई, हां! चलो, अब समय हो गया है अपनी–अपनी दुकान लगा लेनी चाहिये।'

सेठ गोविंदा चला गया और मियां मंहगू जोर–जोर से चिल्लाने लगे, 'आइये, आइये! कदरदानों!! मेहरबानों!!! लीजिये, लीजिये दवा ले लीजिये... ।'

**अपनी कृतियों के प्रकाशन हेतु संपर्क करें...**

*लागत आपकी, श्रम हमारा!*
*75 फीसदी प्रतियाँ आपकी, 25 प्रतिशत हमारी!!*

विशेष : आपकी कृतियों व उन पर विद्वानों द्वारा लिखित समीक्षाओं द्वारा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में व्यापक प्रचार।

**मधुराक्षर प्रकाशन**
जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर फतेहपुर (उ0प्र0) 212 601
madhurakshar@gmail.com +91 9918695656

# न्यू मीडिया : हिंदी के वैश्विक प्रसार का मंच

**डॉ. अमित शर्मा**
सहायक आचार्य, पत्रकारिता और जनसंचार विभाग,
मणिपाल यूनिवर्सिटी जयपुर, राजस्थान
**डॉ. शैलेश शुक्ला**
राजभाषा अधिकारी, एनएमडीसी लिमिटेड

**सार–संक्षेप**

न्यू मीडिया वर्तमान में सबसे अधिक लोकप्रिय जनमाध्यम है। इसे भविष्य के सबसे सशक्त जनसंचार माध्यम के रूप में देखा जा रहा है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य हिंदी साहित्य के विकास और प्रचार–प्रचार में वेब आधारित नवीन जनमाध्यम की उपयोगिता का अध्ययन करना है। इसके लिए साहित्य के पठन–पाठन से जुड़े लोगों का वेब के माध्यम से सर्वेक्षण किया गया है। परिणाम से स्पष्ट है लोग न्यू मीडिया मंचों का प्रयोग विचारों की अभिव्यक्ति के लिए करते हैं। युवा वर्ग के उलट न्यू मीडिया प्रौढ़ लोगों के लिए अभिव्यक्ति का एक बेहतरीन मंच है। सर्वाधिक युवा और प्रौढ़ आयुवर्ग के उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया के आगमन से हिंदी का खूब प्रचार और प्रसार हुआ है।

**बीज शब्द**

न्यू मीडिया, हिंदी साहित्य, पत्रकारिता, तकनीक और जनंसचार माध्यम

**1.0 प्रस्तावना**

न्यू मीडिया संचार का वह संवादात्मक स्वरूप है जिसमें इंटरनेट का उपयोग करते हुए पॉडकास्ट, वेबकास्ट, न्यूकास्ट के जरिए पारंस्परिक संवाद होता है। न्यू मीडिया एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से पल भर में एक से अधिक व्यक्तियों तक संदेश पहुंचाया जाता है। यह

तो वर्तमान में संचार की रीढ़ की हड्डी है, जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। साहित्य में हिंदी के महत्व को स्पष्ट करते हुए अपने विश्वहिंदीजन ब्लॉग में शीर्षक 'न्यू मीडिया में हिंदी साहित्य की बढ़ती प्रवृत्तियां' में शुक्ला (2017) लिखते हैं कि वर्तमान दौर में साहित्यकार का न्यू मीडिया से दूर रहना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है। न्यू मीडिया का प्रयोग साहित्य के विकास के लिए व्यक्तिगत और संस्थागत, दोनों स्तरों पर किया जा सकता है।

न्यू मीडया का एक भाग यानी सोशल मीडिया अन्य पारंपरिक और सामाजिक तौर–तरीकों से बंधनों से जकड़े माध्यमों से बिल्कुल अलग है। सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति लोगों में जागरूकता आई है। वे अपनी कला को ब्लॉग, आर्टिकल और अन्य प्रकार के पोस्ट के माध्यम से सोशल मीडिया और न्यू मीडिया पर अपलोडध्पोस्ट कर रहे हैं। न्यू मीडिया ने रातों–रात लोगों को साहित्यकार और चर्चित बना दिया है। न्यू मीडिया पर ऐसे भी पाठक जुड़े हैं जो पहले परंपरागत या मुद्रित माध्यम से साहित्य नहीं पढ़ते थे। इसका एक कारण न्यू मीडिया की सर्वसुलभता है। अपने लेख 'न्यू मीडिया क्या है?' में कुमार लिखते हैं कि न्यू मीडिया ने बेहद सशक्त अंदाज में सहित्य और पत्रकारिता को प्रभावित किया है। तकनीक में बदलाव के साथ न्यू मीडिया के प्रभाव में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है।

हिंदी सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। लेकिन इंटरनेट पर हिंदी की उपस्थिति प्रारंभ में काफी कम थी। हिंदी लिपि की यूनिकोड तकनीक आने के बाद यह इंटरनेट पर भी काफी लोकप्रिय संपर्क भाषा बन गई है। हिंदी साहित्य के विकास में न्यू मीडिया का योगदान अब सर्वविदित है। न्यू मीडिया की एक सबसे उपयोगी गुणवत्ता यह है कि इंटरनेट पर मौजूद हिंदी साहित्य में बदलाव के अनगिनत मौके मौजूद हैं वहीं, परंपरागत प्रिंट मीडिया में एक बार पुस्तक प्रकाशित होने के बाद उसे दोबारा नहीं बदला जा सकता है। पुस्तक की विषयवस्तु में परिवर्तन के लिए पुनः संस्करण करना ही एकमात्र रास्ता बचता है। ऑनलाइन पत्रिका आखरमालारू

समय से संवाद में शीर्षक 'मीडिया और हिंदी साहित्य' में कश्यप (2009) लिखते हैं कि समाज में मीडिया की भूमिका संवादवहन की होती है। न्यू मीडिया तमाम संपादकीय बंदिशों से स्वयं को मुक्त रखकर काम कर रही है। निकट भविष्य में उच्च गुणवत्ता का साहित्य न्यू मीडिया के वैश्विक पटल पर मौजूद होगा।

यह न्यू मीडिया की खूबसूरती है कि हम घर बैठे ही अपनी कृति चंद पलों में इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन प्रकाशित कर सकते हैं, और लेखक की कृति गांव या दूर–दराज तक पलभर में पहुंच जाती है। इंटरनेट आधारित न्यू मीडिया ने भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं को लांघकर नए आयाम स्थापित किए हैं। अब साहित्य किसी देश की राजनीतिक और न्यायिक बंदिशों को तोड़कर पूरे विश्व में तेजी से फैल रहा है। उदाहरण के तौर पर, उत्तर प्रदेश के किसी कस्बे के लेखक का लिखा साहित्य इंटरनेट के माध्यम से पूरे विश्व के पाठक तक पहुंचता है वह भी बिना एक क्षण की देरी किए। न्यू मीडिया पर उपलब्ध साहित्य नार्वे में रह रहे हिंदी भाषी को उसी प्रकार उपलब्ध होता जैसा कि आस्ट्रेलिया या अमेरिका में रह रहे हिंदी साहित्य प्रेमी को। दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला के न्यूजपोर्टल अमरउजाला डॉट कॉम में एक आलेख 'वेब मीडिया ने बढ़ाया हिंदी का दायरा' (2016) में इंगित किया गया है कि आज के दौर में वेब और भाषायी साहित्य को एक–दूसरे का पूरक माना जाता है। वेब माध्यम पर हिंदी को लेकर कई प्रयोग भी किए गए हैं। इससे हिंदी का सही मायने में विकास हुआ है।

न्यू मीडिया संबसे लोकप्रिय जनमाध्यम के रूप में उभरकर सामने आ रही है। इसमें प्रिंट मीडिया जैसे शब्दों का जाल है तो रेडियो के प्रभावी स्वर। इसमें टेलीविजन जैसे दृश्य और श्रव्य माध्यम की शक्ति है तो फिल्म माध्यम जैसी पाठक–दर्शक से संपर्क स्थापित करने की क्षमता। इस प्रकार स्वष्ट है कि न्यू मीडिया अन्य सभी जनमाध्यमों की तुलना में अद्वितीय है। वर्तमान में इंटरनेट पर आधारित न्यू मीडिया की पहुंच अंतिम व्यक्ति तक हो रही है। आज शायद ही कोई व्यक्ति हो जो न्यू मीडिया के प्रभाव से स्वयं का बचा पाया है। बच्चे, युवा से लेकर बूढ़े तक, सभी न्यू मीडिया का प्रयोग कर रहे हैं।

जनसत्ता के न्यूज पोर्टल पर प्रकाशित आलेख 'सोशल मीडिया और साहित्य' (2016) में स्वीकार किया गया है कि न्यू मीडिया अभी युवावस्था में है। ढेरों परिवर्तन के बाद यह सामाजिक रूप स्वयं को स्थापित कर पाई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया को भविष्य के संचार माध्यम के रूप में देखा जाना चाहिए।

न्यू मीडिया की एक खूबी त्वरित प्रतिक्रिया का मिलना भी है। पहले पुस्तक पर पाठक की प्रतिक्रिया लंबे अरसे बाद लेखक को प्राप्त हो पाती थी। कई बार तो लेखक नए संस्करण को निकाल चुका होता था, तब जाकर उसे पुराने संस्करण की खामी का एक पत्र प्राप्त होता था। अब ऐसा नहीं है। यह न्यू मीडिया का करिश्मा ही है कि आज घर बैठे हम किताबें लिख सकते हैं और उन्हें पढ़ भी सकते हैं। वर्तमान में न्यू मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा में अपने विचार लिखकर एक बड़े क्षेत्र के लोगों तक पहुंचा सकते हैं। न्यू मीडिया के प्रति लोगों का आर्कषण लगातार बढ़ रहा है। आजकल वेब और हिंदी भाषा एक–दूसरे के पूरक के रूप में देखे जा रहे हैं। इस संबंध में दैनिक समाचार न्यूज पोर्टल ने एक सर्वे किया। इसमें शोधकर्ताओं ने पाया कि भारतीय लोग हिंदी भाषा में पढ़ना अधिक पसंद करते हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सबसे उमदा नमूना सोशल मीडिया पर देखने को मिलता है। यहां सूचना देने, व्याख्या करने और धारणा बनाने आदि के उद्देश्य से अनेक लेख–लिखे या पोस्ट किए जाते हैं। वर्तमान में सोशल मीडिया के 140 से अधिक ज्ञात प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं। गूगल न्यूज में इस संबंध में एक लेख प्रकाशित हुआ है। इसके आधार पर हिंदी के तकनीक संगत होने के बाद ब्लॉग लिखने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है। अब लोग हिंदी भाषा में अपने विचार आसानी से अन्य लोगों तक पहुंचा पाते हैं, यह परिवर्तन न्यू मीडिया के उद्भम के बाद ही संभव हो सका है।

## 2.0 साहित्य की समीक्षा

साहित्य समीक्षा शोध की वास्तविक नीव रखने जैसा महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें पहले से किए गए शोध कार्य और उसके लिए अपनाई गई विधि का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शोध में न्यू मीडिया और

हिंदी साहित्य व पत्रकारिता के जुड़े शोधकार्यों का अध्ययन समयानुक्रम के आधार पर किया जाएगा।

अपने अध्ययन 'न्यू मीडिया में हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम' में शुक्ला (2019) ने न्यू मीडिया के उद्भव के बाद हिंदी मीडिया में आए बदलावों का अध्ययन किया। इसके लिए शोधार्थी ने विश्लेषण शोध के तहत अंतरवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया है। परिणाम से स्पष्ट है कि न्यू मीडिया के माध्यम से पत्रकारिता को विविध मंच मिले हैं। इन्हीं मंचों के माध्यम से हिंदी मीडिया का वास्तविक लोकतंत्रीकरण हुआ है। न्यू मीडिया के बेहद कम आर्थिक खर्च के साथ विश्वस्तर पर हिंदी पत्रकारिता का प्रचार किया जा सकता है।

अपने अध्ययन 'इमर्जिंग ट्रेंड इन हिंदी पोइट्री ऑन न्यू मीडिया' में शुक्ला (2019) ने न्यू मीडिया के उद्भव के बाद हिंदी कविता के प्रचार–प्रसार में हुए बदलावों का अध्ययन किया। आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए विवरणात्मक शोध और सर्वेक्षण पद्वति का प्रयोग किया गया है। परिणाम से पता चलता है कि हिंदी को प्रचार–प्रसार में न्यू मीडिया का अहम योगदान है। न्यू मीडिया के पहले से मौजूद परंपरागत मीडिया के माध्यम से इस प्रकार का चमात्कारित प्रसार संभव नहीं था। हालांकि उसका दूसरा पक्ष यह भी है कि गेटकीपिंग के अभाव में कापीराइट कानून के उल्लंघन के मामले भी इसी तेजी से बढ़े हैं।

शर्मा और गोयल (2018) ने भाजपा के ट्वीटर हैंडल से किए गए ट्वीट का अध्ययन किया। शोधार्थियों ने अंतरवस्तु विष्लेषण के माध्यम से ट्वीट का अध्ययन किया। शोध से पता चलता है कि बीजेपी के ट्वीटर हैंडल से किए गए ट्वीट में सकारात्मक एजेंडा अधिक है। हालांकि इन ट्वीट को मीडिया पर अधिक प्राइम किया गया है।

अपने अध्ययन 'पॉलिटिक्स आफ्टर वर्नाकुलाइजेशन– हिंदी मीडिया एंड इंडियन डेमोक्रेसी' में नयाजी (2011) ने अंग्रेजी मीडिया की अपेक्षा हिंदी मीडिया को मिलती लोकप्रियता अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और

राजनीतिक ताने–बाने में हिंदी मीडिया के मुकाबले में अंग्रेजी काफी कमतर हैं। हिंदी मीडिया ने समाज में विमर्श का एक नया माहौल तैयार किया है, जिसमें क्षेत्रीय मुद्दों को राष्ट्रीय मुद्दों की अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया जाता है।

### 3.0 शोध पद्धति

प्रस्तुत भाग में शोध के प्रश्नों, शोध के उद्देश्य और शोघ डिजाइन (खाका) को स्पष्ट किया गया है। शोध डिजाइन के तहत शोध पद्धति, शोध तकनीक, नमूनीकरण की तकनीक और आंकड़ों का एकत्रीकरण के बारे में वर्णन किया गया है।

### 3.1 शोध प्रश्नों का निर्धारण

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से न्यू मीडिया के माध्यम से हो रहे हिंदी साहित्य के प्रचार–प्रसार पर केंद्रित है। प्रस्तुत शोध में लोगों के विचारों पर पड़ने वाले जनसांख्यिकी अवयव उम्र के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध से संबंधित शोध प्रश्न इस प्रकार हैं–

1. उत्तरदाताओं की आयु और उनके न्यू मीडिया मंचों– वेबसाइट, फेसबुक पेज और ब्लॉग आदि पर साहित्यधटिप्पणी पोस्ट करके के बीच क्या संबंध है ?
2. उत्तरदाताओं की आयु और उनके विचारों की विविधता के अंतरसंबंध क्या है ?
3. न्यू मीडिया के उद्भव से हिंदी साहित्य पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव संबंधी उनके विचार के मध्य क्या संबंध है?

### 3.2 शोध उद्देश्य

प्रस्तुत विषय पर शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. यह जानना कि उत्तरदाताओं की आयु और उनके न्यू मीडिया मंचों– वेबसाइट, फेसबुक पेज और ब्लॉग आदि पर साहित्य/टिप्पणी पोस्ट करने की प्रवृत्ति के बीच क्या संबंध है ?

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

2. यह जानना कि उत्तरदाताओं की आयु और उनके विचारों की विविधता के बीच क्या अंतरसंबंध है ?
3. यह जानना कि विभिन्न आयुवर्ग के लोग न्यू मीडिया मंचों हिंदी साहित्य प्रकाशित होने की सुविधा के संबंध में क्या विचार रखते हैं ?
4. यह जानना कि विभिन्न आयुवर्ग के लोग न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी के हिंदी साहित्य संबंधी रुचि के बारे में क्या अवधारणा रखते हैं ?
5. यह जानना कि विभिन्न आयुवर्ग के लोग न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से वैश्विक स्तर में हिंदी के प्रसार को लेकर हुए बदलाव पर क्या विचार रखते हैं ?

### 3.3 शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध विवरणात्मक प्रकृति का है। इसमें शोधकर्ता ने स्वतंत्र वैरिएबल (इंडिपेटेंड वैरिएबल) और निर्भर वैरिएबल (डिपेंटेंड वैरिएबल) दोनों का चयन किया है। इसमें क्रॉस सेक्सनल डिजाइन (अनुप्रस्थ परिच्छेद प्रारूप) को अपनाया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सर्वेक्षण विधि के तहत न्यू मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर हिंदी साहित्य पढ़ने–लिखने वाले हर आयुवर्ग के लोगों से प्रश्नावली भरवाई गई है। आयुवर्ग का निर्धारण चार स्तरों में किया गया है। 18–25 वर्ष की आयु वर्ग के उत्तरदाता को नवयुवा की श्रेणी में रखा गया है। 26–40 की उम्र के उत्तरदाता को युवा की श्रेणी में रखा गया है। इसी प्रकार क्रमशः 41–60 और 61–70+ आयुवर्ग के उत्तरदाताओं को प्रौढ़ और बुजुर्ग की श्रेणी में रखा गया है।

### 3.4 सैंपल डिजाइन

प्रस्तुत शोध में न्यू मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म का प्रयोग करने वाले हर आयुवर्ग के लेखकों और पाठकों से ऑनलाइन प्रश्नावली भरवाई गई है। प्रतिदर्श की इकाई का चयन उद्देश्यपरक नमूनीकरण (पर्पजिव सैंपलिंग) प्रविधि से किया गया है। इसके लिए मार्च से अक्टूबर 2018 तक 480 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली भरवाई गई है। प्रस्तुत शोध के उद्देशों के अनुरूप प्राथमिक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

### 4.0 आंकड़ों का विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुत अध्याय में आंकड़ों का विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण किया गया है। आंकड़ों को प्रस्तुत करने के लिए सारणी का प्रयोग किया है। आंकड़ों का विश्लेषण क्रास–सारणीयन पद्यति से किया गया है, जिससे कि दो चरों के बीच आपसी संबंधों को जाना जा सके।

### 4.1 उत्तरदाता की आयु और कथन

'आप भी न्यू मीडिया मंचों– वेबसाइट, फेसबुक पेज, ब्लॉग आदि पर अपना लिखा हुआ साहित्य/टिप्पणी पोस्ट करते हैं' के बीच संबंध का अध्ययन–

| उत्तरदाता की आयु | आप न्यू मीडिया मंचों– वेबसाइट, फेसबुक पेज, ब्लॉग आदि पर साहित्य/टिप्पणी पोस्ट करते हैं | | |
|---|---|---|---|
| आयुवर्ग | नहीं | हाँ | कुल |
| 18–25 | 46.7 प्रतिशत | 53.3 प्रतिशत | 100 प्रतिशत |
| 26–40 | 39.6 प्रतिशत | 60.4 प्रतिशत | 100 प्रतिशत |
| 41–60 | 43.7 प्रतिशत | 56.3 प्रतिशत | 100 प्रतिशत |
| 61–70 | 09.1 प्रतिशत | 90.9 प्रतिशत | 100 प्रतिशत |

*सारणी क्रमांक : 1*

उत्तरदाता की आयु का उनके क्रियाकलापों पर प्रभाव पड़ता है। 18–25 आयुवर्ग के कुल 53.3 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों– वेबसाइट, फेसबुक पेज, ब्लॉग आदि पर अपना लिखा साहित्य/टिप्पणी पोस्ट करते हैं, वहीं 46.7 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों का अभिव्यक्ति के लिए उपयोग नहीं करते हैं। 26–40 आयुवर्ग के कुल 60.4 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों– वेबसाइट, फेसबुक पेज, ब्लॉग आदि पर अपना लिखा साहित्य/टिप्पणी पोस्ट करते हैं, वहीं, 39.6 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों पर अभिव्यक्ति नहीं करते हैं। 41–60 आयुवर्ग के कुल 56.3 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों जैसे कि वेबसाइट, फेसबुक पेज और ब्लॉग आदि पर अपना लिखा साहित्य/टिप्पणी पोस्ट करते हैं, वहीं 43.7 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों पर अभिव्यक्ति नहीं करते हैं। 61–70+ आयुवर्ग के कुल 90.9 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों जैसे कि

वेबसाइट, फेसबुक पेज और ब्लॉग आदि पर अपना लिखा साहित्य/टिप्पणी पोस्ट करते हैं, वहीं 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता न्यू मीडिया मंचों का प्रयोग स्वयं के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए नहीं करते हैं।

## 4.2 उत्तरदाता की आयु और कथन

'न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर फर्क पड़ा है' के बीच संबंध का अध्ययन–

| उत्तरदाता की आयु | न्यू मीडिया : वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर फर्क पड़ा है | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आयुवर्ग | थोड़ा–सा | पता नहीं | नहीं | हाँ | कुल |
| 18–25 | 17.8% | 7.6% | 8.6% | 66.0% | 100.0% |
| 26–40 | 5.9% | 5.3% | 5.9% | 82.8% | 100.0% |
| 41–60 | 16.5% | 1.9% | 5.8% | 75.7% | 100.0% |
| 61–70 | 9.1% | 9.1% | 9.1% | 72.7% | 100.0% |

*सारणी क्रमांक–2*

उत्तरदाता की आयु के साथ उसके सोचने और समझने की क्षमता विकसित होती है। उम्र के साथ ही व्यक्ति के विचारों में बदलाव आता है। 18–25 आयुवर्ग के कुल 66.0 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर सकारात्मक फर्क पड़ा है, वहीं 17.8 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 8.6 प्रतिशत नवयुवा उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर कोई सकारात्मक फर्क नहीं पड़ा है। अन्य 7.6 प्रतिशत उत्तरदाता अनिर्णय की स्थिति में हैं। 26–40 आयुवर्ग के कुल 82.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर सकारात्मक फर्क पड़ा है, वहीं 5.9 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 5.9 प्रतिशत युवा उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर कोई सकारात्मक फर्क नहीं पड़ा है। अन्य 5.3 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय नहीं ले सके। 41–60 आयुवर्ग के

कुल 75.7 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडियारू वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर सकारात्मक फर्क पड़ा है, वहीं 16.5 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 5.8 प्रतिशत प्रौढ़ उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर कोई फर्क नहीं पड़ा है। अन्य 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सके हैं। 61–70+ आयुवर्ग के कुल 72.7 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर सकारात्मक फर्क पड़ा है, वहीं 9.1 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 9.1 प्रतिशत बुजुर्ग उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर कोई फर्क नहीं पड़ा है। अन्य 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सके हैं।

**4.3 उत्तरदाता की आयु और कथन**

'न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम हुई है' के बीच संबंध का अध्ययन–

| **उत्तरदाता की आयु** | **न्यू मीडिया : वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम हुई है** | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आयुवर्ग | थोड़ा–सा | पता नहीं | नहीं | हाँ | कुल |
| **18–25** | 17.8% | 12.2% | 8.6% | 61.4% | 100.0% |
| **26–40** | 16.0% | 4.1% | 15.4% | 64.5% | 100.0% |
| **41–60** | 10.7% | 4.9% | 9.7% | 74.8% | 100.0% |
| **61–70** | 18.2% | 0.0% | 27.3% | 54.5% | 100.0% |

**सारणी क्रमांक–3**

उत्तरदाता की आयु का उसने विचारों पर प्रभाव पड़ता है। 18–25 आयुवर्ग के कुल 61.0 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम हुई है, वहीं 17.8 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 8.6 प्रतिशत नवयुवा उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया–

वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम नहीं हुई है। अन्य 12.2 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। 26–40 आयुवर्ग के कुल 64.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम हुई है, वहीं 16.0 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 15.4 प्रतिशत युवा उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम नहीं हुई है। अन्य 4.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'पता नहीं' विकल्प को चुना है। 41–60 आयुवर्ग के कुल 74.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम हुई है, वहीं 10. 7 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 9.7 प्रतिशत प्रौढ़ उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडियारू वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम नहीं हुई है। अन्य 4.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'पता नहीं' विकल्प को चुना है। 61–70+ आयुवर्ग के कुल 54.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम हुई है, वहीं 18.2 प्रतिशत आशिंक प्रभाव के पक्ष में हैं। केवल 27.3 प्रतिशत बुजुर्ग उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम नहीं हुई है।

**4.4 उत्तरदाता की आयु और कथन**

'आप मानते हैं न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि से नवोदित लेखकों के सृजन को एक मंच मिला है' के बीच संबंध का अध्ययन

| उत्तरदाता की आयु | न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि से नवोदित लेखकों के सृजन को एक मंच मिला है | | |
|---|---|---|---|
| आयुवर्ग | नहीं | हाँ | कुल |
| 18–25 | 6.6% | 93.4% | 100.0% |
| 26–40 | 1.8% | 98.2% | 100.0% |
| 41–60 | 4.9% | 95.1% | 100.0% |
| 61–70 | 0.0% | 100.0% | 100.0% |

***सारणी क्रमांक–4***

उत्तरदाता की आयु के साथ उसके विचार भी बदल जाते हैं। 18–25 आयुवर्ग के कुल 93.4 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि से नवोदित लेखकों के सृजन को एक मंच मिला है, वहीं 6.6 प्रतिशत नवयुवा मानते हैं कि न्यू मीडिया के उद्‌भव से नवोदित लेखकों को कोई मंच नहीं मिला है। 26–40 आयुवर्ग के कुल 98.2 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि से नवोदित लेखकों के सृजन को एक मंच मिला है, वहीं 1.8 प्रतिशत युवा मानते हैं कि न्यू मीडिया के उद्‌भव से नवोदित लेखकों को लाभ नहीं हुआ है। 41–60 आयुवर्ग के कुल 95.1 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि से नवोदित लेखकों के सृजन को एक मंच मिला है, वहीं 4.9 प्रतिशत प्रौढ़ उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया के उद्‌भव से नवोदित लेखकों को फायदा नहीं हुआ है। 60–70+ आयुवर्ग के सभी उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि से नवोदित लेखकों के सृजन को एक मंच मिला है।

### 4.5 उत्तरदाता की आयु और कथन

'ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने के प्रति रूचि बढ़ी है' के बीच संबंध का अध्ययन–

| उत्तरदाता की आयु | ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने के प्रति रूचि बढ़ी है | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आयुवर्ग | थोड़ा–सा | पता नहीं | नहीं | हाँ | कुल |
| 18–25 | 18.8% | 8.6% | 8.1% | 64.5% | 100.0% |
| 26–40 | 16.0% | 4.1% | 7.1% | 72.8% | 100.0% |

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **41–60** | 16.5% | 4.9% | 6.8% | 71.8% | 100.0% |
| **61–70** | 0.0% | 9.1% | 9.1% | 81.8% | 100.0% |

***सारणी क्रमांक–5***

18–25 आयुवर्ग के कुल 64.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने के प्रति रूचि बढ़ी है वहीं, 18.8 प्रतिशत उपरोक्त प्रकृति में आंशिक बदलाव के पक्षधर हैं। केवल 8.1 प्रतिशत नवयुवा उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने के प्रति कोई रूचि नहीं बढ़ी है। अन्य 8.6 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। 26–40 आयुवर्ग के कुल 72.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने की रुचि बढ़ी है वहीं, 16.0 प्रतिशत उत्तरदाता आशिक बदलाव के पक्ष में हैं। केवल 8.1 प्रतिशत युवा उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य के प्रति रुचि नहीं बढ़ी है। अन्य 4.1 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय नहीं ले पा रहे हैं।

41–60 आयुवर्ग के कुल 71.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने की रूचि बढ़ी है वहीं, 16.5 प्रतिशत उत्तरदाता आशिक बदलाव के पक्ष में हैं। केवल 6.8 प्रतिशत प्रौढ़ उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य के प्रति रूचि नहीं बढ़ी है। अन्य 4.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'पता नहीं' का विकल्प चुना है। 61–70 आयुवर्ग के कुल 81.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने की रूचि बढ़ी है। 9.1 प्रतिशत बुजुर्ग उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य के प्रति रूचि नहीं बढ़ी है। अन्य 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता कोई नहीं ले पा रहा है।

**4.6 उत्तरदाता की आयु और कथन**

'न्यू मीडिया– वेबसाइट्स, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से वे लोग भी हिंदी साहित्य पढ़ने लगे हैं जो पहले पारंपरिक मीडिया के माध्यम से नहीं पढ़ते थे' के बीच संबंध का अध्ययन–

| उत्तरदाता की आयु | न्यू मीडिया– वेबसाइट्स, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से वे लोग भी हिंदी साहित्य पढ़ने लगे हैं जो पहले पारंपरिक मीडिया के माध्यम से नहीं पढ़ते थे | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आयुवर्ग | थोड़ा–सा | पता नहीं | नहीं | हाँ | कुल |
| **18–25** | 0.0% | 14.7% | 7.1% | 78.2% | 100.0% |
| **26–40** | 0.0% | 15.4% | 4.7% | 79.9% | 100.0% |
| **41–60** | 0.0% | 9.7% | 7.8% | 82.5% | 100.0% |
| **61–70** | 0.0% | 0.0% | 18.2% | 81.8% | 100.0% |

***सारणी क्रमांक–6***

उत्तरदाताओं के प्रतिक्रिया से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि 18–25 आयुवर्ग के कुल 78.2 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट्स, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने में रूचि बढ़ी है। वहीं, 14.7 प्रतिशत उत्तरदाता उपरोक्त प्रकृति में आंशिक बदलाव के पक्षधर हैं। केवल 7.1 प्रतिशत नवयुवा उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य के उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने में रुचि नहीं बढ़ी है। 26–40 आयुवर्ग के कुल 79.9 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया के मंच जैसे वेबसाइट्स, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने में रूचि बढ़ी है। वहीं, 15.4 प्रतिशत उत्तरदाता उपरोक्त प्रकृति में आंशिक बदलाव के पक्ष में हैं। केवल 4.7 प्रतिशत युवा उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य के उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने की रूचि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। 41–60 आयुवर्ग के कुल 82.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया के मंच जैसे वेबसाइट्स, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग प्लेटफार्म पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने में रूचि बढ़ी है। वहीं, 9.7 प्रतिशत उत्तरदाता उपरोक्त प्रकृति के आंशिक पक्षधर हैं। केवल 7.8 प्रतिशत प्रौढ़ उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य के उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने की

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

रूचि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है। 61–70 अधिक आयुवर्ग के कुल 81.8 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया के मंच जैसे वेबसाइट्स, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग प्लेटफार्म पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने में रूचि बढ़ी है। शेष बचे 18.2 प्रतिशत बुजुर्ग (अधिक उम्र के) उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य के उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने की रूचि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।

### 4.7 उत्तरदाता की आयु और कथन

'नेटवर्किंग साइट्स, वेबसाइट आदि पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में हिंदी साहित्य की पहुंच पहले से बढ़ी है' के बीच संबंध का अध्ययन–

| **उत्तरदाता की आयु** | **नेटवर्किंग साइट्स, वेबसाइट आदि पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में हिंदी साहित्य की पहुंच पहले से बढ़ी है** | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आयुवर्ग | थोड़ा–सा | पता नहीं | नहीं | हाँ | कुल |
| **18–25** | 15.7% | 11.2% | 5.6% | 67.5% | 100.0% |
| **26–40** | 6.5% | 7.1% | 1.8% | 84.6% | 100.0% |
| **41–60** | 8.7% | 5.8% | 1.9% | 83.5% | 100.0% |
| **61–70** | 9.1% | 18.2% | 0.0% | 72.7% | 100.0% |

***सारणी क्रमांक –7***

उत्तरदाताओं के प्रतिक्रिया से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि 18–25 आयुवर्ग के 67.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि नेटवर्किंग साइट्स, वेबसाइट आदि पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में हिंदी साहित्य की पहुंच पहले से बढ़ी है। वहीं, 15.7 प्रतिशत लोग मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य की पहुंच से वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य में आंशिक सकारात्मक बदलाव आया है। केवल 5.6 प्रतिशत नवयुवा उत्तरदाता मानते हैं कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स, वेबसाइट आदि पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में हिंदी साहित्य के प्रसार पर कुछ खास असर नहीं हुआ है। अन्य 11. 2 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय देने की स्थिति में नहीं हैं। 26–40 आयुवर्ग के 84.6 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि नेटवर्किंग साइट्स, वेबसाइट आदि पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में इसकी पहुंच पहले से बढ़ी है। वहीं, 6.5 प्रतिशत लोग मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य की पहुंच से वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य

में आंशिक सकारात्मक बदलाव आया है। केवल 1.8 प्रतिशत युवा उत्तरदाता मानते हैं कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स, वेबसाइट आदि पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में हिंदी साहित्य के प्रसार पर कुछ खास असर नहीं हुआ है। अन्य 7.1 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय देने की स्थिति में नहीं हैं। 41–60 आयुवर्ग के 83.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में इसकी पहुंच पहले से कहीं अधिक बढ़ी है। वहीं, 8.7 प्रतिशत लोगों का मानना है कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य की पहुंच से वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य में आंशिक सकारात्मक बदलाव आया है। केवल 1.9 प्रतिशत प्रौढ़ उत्तरदाता मानते हैं कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स, वेबसाइट आदि पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में हिंदी साहित्य के प्रसार पर खास असर नहीं हुआ है। अन्य 5.8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय देने की स्थिति में नहीं हैं। 61–70+ आयुवर्ग के 72.7 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में इसकी पहुंच पहले से कहीं अधिक बढ़ी है। वहीं, 9.1 प्रतिशत लोग मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य की पहुंच से वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य में कुछ बदलाव आया है। अन्य 18.2 प्रतिशत उत्तरदाता कोई निर्णय देने की स्थिति में नहीं हैं।

**5.0 परिणाम**

प्रस्तुत शोध के परिणाम निम्नलिखित हैं–

1. औसत से अधिक लोग न्यू मीडिया मंचों जैसे वेबसाइट, फेसबुक पेज और ब्लॉग आदि का प्रयोग अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए करते हैं। सोशल मीडिया का प्रयोग भले ही युवा वर्ग अधिक करता हो, लेकिन उस पर साहित्य और अपने विचारों को अभिव्यक्ति अधिक उम्र के लोग या बुजुर्ग अधिक करते हैं। स्पष्ट है कि न्यू मीडिया प्रौढ़ लोगों के लिए अभिव्यक्ति का एक बेहतरीन मंच है।
2. सभी आयुवर्ग के अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडियारू वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि के आ जाने से हिंदी साहित्य के लेखन पर सकारात्मक फर्क

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

पड़ा है। हालांकि युवा और प्रौढ़ आयुवर्ग के उत्तरदाता औसतन अधिक संख्या में इस तथ्य का समर्थन करते हैं।

3. सभी आयुवर्ग के आधे से अधिक उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम हुई है। हालांकि अधिक उम्र के (बुजुर्ग) उत्तरदाताओं का विचार अन्य से विपरीत है। करीब एक चौथाई बुजुर्ग उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि पर हिंदी साहित्य प्रकाशित करने की सुविधा होने से प्रकाशन के लिए संपादकों पर निर्भरता कम नहीं हुई है।
4. सभी आयुवर्ग के 90 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया– वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि से नवोदित लेखकों के सृजन को एक मंच मिला है। हालांकि अधिक उम्र के उत्तरदाता अपेक्षाकृत अधिक सहमत हैं। कुछ नवयुवा मानते हैं कि न्यू मीडिया के उद्‌भव से नवोदित लेखकों को कोई खास लाभ नहीं मिला है।
5. सभी आयुवर्ग के उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य उपलब्ध होने से नई पीढ़ी में हिंदी साहित्य पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ी है। हालांकि अधिक उम्र के अपेक्षाकृत अधिक उत्तरदाता मानते हैं कि ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी साहित्य के उपलब्ध होने से युवा पीढ़ी में हिंदी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ी है।
6. सभी आयुवर्ग के अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया के मंच जैसे वेबसाइट्स, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग प्लेटफार्म पर हिंदी साहित्य आसानी से उपलब्ध होने से पाठक अपेक्षाकृ त अधिक साहित्य पढ़ते हैं। हालांकि उम्र के साथ उत्तरदाताओं का समर्थन उपरोक्त कथन के साथ बढ़ता जाता है। अधिक उम्र के प्रौढ़ और बुजुर्ग मतदाता अपेक्षाकृत अधिक दृढ़ता से मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य के उपलब्ध होने से पाठकों की साहित्य पढ़ने की रुचि पर सकारात्मक असर हुआ है।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

7. सभी आयुवर्ग के करीब दो तिहाई से अधिक उत्तरदाता मानते हैं कि न्यू मीडिया पर हिंदी साहित्य लिखे जाने से विदेशों में हिंदी साहित्य के प्रचार में सकारात्मक वृद्धि हुई है। उम्र बढ़ने के साथ ही यह विचारधारा भी बलवती होती जाती है।

## 6.0 संदर्भ सूची


1. एस, शुक्ला (2019). न्यू मीडिया में हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम, जनकृति, अंक–4(48), 63.
2. एस, शुक्ला (2019). इमरजिंग ट्रेंड इन हिंदी पोइट्री आन न्यू मीडिया, इंटरनेशनल जर्नल आफ हाइयर एजुकेशन एंड रिसर्च, अंक–9(1), 347.
3. Androutsopoulos, J. (2007). Bilingualism in the mass media and on the internet. In Bilingualism: A social approach (pp. 207-230). Palgrave Macmillan, London.
4. Brueck, L. R. (2014). Writing Resistance: The Rhetorical Imagination of Hindi Dalit Literature. Columbia University Press.
5. Derné, S. (2008). Globalization on the ground: New media and the transformation of culture, class, and gender in India. SAGE Publications Ltd.
6. McGregor, R. S. (1974). Hindi literature of the nineteenth and early twentieth centuries (Vol. 8, No. 2). Wiesbaden: Harrassowitz.
7. Neyazi, T. A. (2011). Politics after vernacularisation: Hindi media and Indian democracy. Economic and Political Weekly, 75-82.
8. Orsini, F. (2009). The Hindi public sphere 1920–1940: Language and literature in the age of nationalism. Oxford University Press.
9. Parmar, S. (1975). Traditional folk media in India. New Delhi: Geka Books.
10. Swann, J., Pope, R., & Carter, R. (2011). Creativity in language and literature: The state of the art. Palgrave Macmillan.
11. Sharma, A., & Goyal, A. (2018). Tweet, Truth and Fake News: A Study of BJP's Official Tweeter Handle. Journal of Content, Community & Communication, 8 (4), 22, 28.

Website:

1. https://vishwahindijan.blogspot.com/2017/02/blog-post_1.html
2. https://www.bharatdarshan.co.nz/magazine/literature/176/new-media-future-media.html
3. https://bit.ly/2mDrfWf
4. https://www.amarujala.com/india-news/role-of-web-media-in-development-hindi
5. https://www.jansatta.com/sunday-magazine/social-media-and-literature/210328/

लेख

# जन-भावनाओं के प्रिय कवि नागार्जुन

पद्मा मिश्रा
padmasahyog@gmail.com

*जो जन जन के मन को जीत सके*
*अविराम चले जीवन पथ पर*
*अपनी माटी की गाथा को जन मन तक*
*पहुंचाया सत्वर..*
*आंसू में ढाल दिया सर्जन*
*लेखनी बनी तलवार प्रबल*
*वाणी गूंजी साहित्य जगा*
*हे सुकवि! धन्य तुम नागार्जुन!!*
*हे भूमिपुत्र!.गौरव ललाम*
*शत शत प्रणाम!''*

**हिं**दी साहित्य में एक जनप्रिय, जन–मन के लोक चितेरे कवि नागार्जुन का जीवन वृत्त और उनका सृजन समाज, धरती, और भूमिपुत्रों की पीड़ा का जीवंत दस्तावेज है, मूलतः मैथिली भाषी किंतु पाली,प्राकृत, संस्कृत सभी भाषाओं में पारंगत नागार्जुन, निर्भय, जागरुक, सामाजिक सरोकारों के कवियों की परंपरा के शिखर पुरुष हैं, भाव मर्मज्ञ कवि हैं, उन्होंने निडर होकर सत्ता और शासन को भी चुनौती दी और सच कहने में कभी पीछे नहीं रहे, जयप्रकाश आंदोलन के समय लिखी गई उनकी कविता आज भी एक जीवंत जागरण की बात उठाती है, जहां सत्ता का भय नहीं, आलोचना से डर नहीं बल्कि एक जलते हुए सवाल की चुनौती है– 'एक और गाँधी की हत्या होगी अब क्या ?

बर्बरता के भोग चढ़ेगा योगी अब क्या ?
पोल खुल गयी शासक दल के महामंत्र की
जयप्रकाश पर पड़ी लाठियां लोकतंत्र की ?

बिहार के तरौनी गांव में जन्में नागार्जुन ने सामाजिक रिश्तों और मोह से उतना ही जुड़े थे, जितना जीवन यापन के लिए जरूरी था, अतः सबसे पहले अपने पैतृक नाम वैद्ययाथ मिश्र से मुक्ति पा लिया था, और तब से मैथिली में 'यात्री' और हिंदी साहित्य जगत में 'नागार्जुन' उपनाम से सृजन करते रहे, अपने समाज हित को समर्पित जीवन में वे आत्मप्रचार से सर्वथा दूर रहते थे। वह कविता जो जनजीवन से जुड़ी न हो, वह उन्हें कभी स्वीकार नहीं थी। वह चाहते थे कि कविता किसी सुभाषित की तरह नहीं लिखी जाये, बल्कि समाज, व्यक्ति और सत्ता के दोषों को भी प्रकट करे–

*बापू के भी ताऊ निकले तीनों बन्दर बापू के!*
*सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बन्दर बापू के!*
*सचमुच जीवनदानी निकले तीनों बन्दर बापू के!*

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

*ग्यानी निकले, ध्यानी निकले तीनों बन्दर बापू के!*
*जल–थल–गगन–बिहारी निकले तीनों बन्दर बापू के*!

सीधी सरल सहज ग्रामीण भाषा में शासन की नीतियों को चुनौती देती यह कविता उस समय जन जन में लोकप्रिय हुईं थीं,एक मुक्त यायावर स्वभाव, बेलाग लपेट के अपनी बात कहने की प्रवृत्ति उनके जीवन का अंग बन गई थी। वे खूब भ्रमण करते, किसी भी मित्र या छात्र के यहां पहुंच जाते, फिर रसोई के विषय में, और घरेलू आम बुजुर्ग की तरह रस सिद्ध चर्चा करते थे। यही विनोदप्रियता उन्हें बेबाक बनाती थी। एक बार इंदिरा जी से कुपित हुए तो एक कविता लिखी जो बहुत चर्चित रही'–

इंदु जी, इंदु जी क्या हुआ
क्या हुआ आपको ?
क्या हुआ आपको ?
सत्ता की मस्ती में
भूल गई बाप को ?
इंदु जी, इंदु जी, क्या हुआ आपको ?
*बेटे को तार दिया, बोर दिया बाप को!*

आपातकाल की ज्यादतियों ने कवि की चेतना को झकझोर दिया था। जब राहुल सांकृत्यायन और स्वामी सहजानंद के संपर्क में आए तो किसान आंदोलन का नेतृत्व किया और अनेक बार जेल भी गए। जयप्रकाश नारायण के ऊपर हुए लाठियों के प्रहार से वे व्यथित भी हुए और आक्रोशित भी। सच कहा और सच की ही वकालत भी की। सामाजिक सरोकारों से जुड़ी कोई भी बात या अन्याय और दमन की आवाज कभी दबी नहीं। उनकी आवाज सदैव मुखर रही–

*डर के मारे न्यायपालिका काँप गई है*
*वो बेचारी अगली गति–विधि भाँप गई है*
*देश बड़ा है, लोकतंत्र है सिक्का खोटा*
*तुम्हीं बड़ी हो, संविधान है तुम से छोटा!*

उनकी कविता में आत्मप्रशंसा या निजी जैसा कुछ भी नहीं था। जो भी था, वह देश–काल और सामाजिक प्रवंचनाओं, भूख, गरीबी, और दीन–हीन की समस्याओं से जुड़ा था। उनकी लिखी एक कविता जो हमने अपने पाठ्यक्रम में पढी थी, उसने हमें या हमारी

पीढ़ी को बहुत प्रभावित किया था, गरीबी का इतना सटीक और भावुक चित्रण कि–

*हर मन का कोना भीग जाए...*

अकेली हरिजन गाथा कविता उनके जन सरोकारों से जुड़े होने का सशक्त प्रमाण है–

*बहुत दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास।*

वे काव्यशास्त्र के ज्ञाता और भावों के जादूगर भी थे, उनकी भाषा में बोलियों का सहज बोधगम्य प्रयोग ही उनकी ताकत है,जैसा कि अरुण कमल ने कहा है– *''यह वह भाषा है, जनता जिसके सर्वाधिक निकट है, ऐसे ही अटपटे रुप विधान से कविता के शिखर रचे जा सकते हैं।''* नागार्जुन ने स्वयं कहा– *''कोई शास्त्र आपको जीवन को समझने में थोड़े न मदद करेगा, शास्त्र के अनुसार अगर वस्तु और स्थिति को देखिएगा तो फिसलकर गिरिएगा।''* साहित्य की अनेक विधाओं में उन्होने रचना की। 'चना जोर गरम', 'आओ रानी हम ढोएंगे पालकी', और 'हर गंगे की गूंज' पर लोक प्रवाही शैली के गीत भी लिखे। एक कविता जो शायद हर भारतीय संवेदनशील मन को छू लेती है और जिसे हर कोई पढ़ना, सुनना चाहता है–

*अमल धवल गिरि के शिखरों पर,*
*बादल को घिरते देखा है।*
*छोटे–छोटे मोती जैसे*
*उसके शीतल तुहिन कणों को,*
*मानसरोवर के उन स्वर्णिम*
*कमलों पर गिरते देखा है।*

यह कविता मैं भी बहुत पसंद करती हूं। वे छंदों के विज्ञ कवि थे, कोमल संवेदनशील भावनाओं के कुशल चितेरे भी। कालिदास, तुलसी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पर कविताएं लिखी। युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, अपने खेत में, जैसी कविताएं उनके सृजन संसार में मील का पत्थर हैं। जब जब कविता में लोक की बात होगी, सामाजिक सरोकारों की आवाज उठेगी, और संवेदना के उच्चतम शिखर पर भावों की गहराई, मन को छुवेगी, तब तब नागार्जुन याद आएंगे।

शोधलेख

# जैतखाम का इतिहास

मनीष कुमार कुर्रे
हिंदी विभाग, शास० दिग्विजय स्वशासी महा० राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)
manishkumarkurreymkk@gmail.com

**विषय प्रवेश**

सतनाम पंथ में जैतखाम या जयस्तंभ का विशेष महत्व रहा है। जैतखाम आदिकाल से प्रचलित है। पौराणिक एवं उपनिषद काल में भी ध्वज के रूप में उपयोग होता रहा है। प्रत्येक देश का अपना एक ध्वज होता है जो उसकी पहचान को प्रकट करता है। कालांतर में यही ध्वज व्यक्ति या समूह के मिशन या वर्चस्व को अभिव्यक्त करने का प्रतीक बन गया। हमारे देश की स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रध्वज के निर्माण और उसके लिए दी गई बलिदानों का इतिहास भी बहुत ही रोचक है। औरंगजेब के काल में सतनाम पंथ के लोगों द्वारा श्वेत ध्वज के उपयोग का भी उल्लेख मिलता है। ध्वज के आकार–प्रकार, रंग और उसमें निहित चिह्नों से व्यक्ति या समूह के उद्देश्यों और प्रकृ ति का अनुमान हो जाता है। सतनाम पंथ में श्वेत ध्वज का उपयोग किया जाता है, जिसे पालो भी कहते हैं। सफेद पालो को देखकर ही यह आभास हो जाता है कि यह शांति, श्रद्धा, समन्वय, समानता, सदाचारी, समरसता, सत्य एवं अहिंसा आदि का प्रतीक है।

जैतखाम या जैतखंभ हिंदी के जयस्तंभ का आंचलिक रूपांतरण है। जैतखाम सतनाम पंथ के विजय कीर्ति को प्रदर्शित करता है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से जैतखाम का विशेष संबंध

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

रहा है। भारतीय समाज के विभिन्न कालखंडों में जैतखाम भिन्न–भिन्न रूपों में प्रतिष्ठित होता रहा है। जैतखाम केवल एक समाज ही नहीं अपितु संपूर्ण मानवता के लिए है क्योंकि इसका उद्देश्य ही मानव धर्म है, जिसे आज सतनाम धर्म के नाम से भी अभिमत किया जाने लगा है। बौद्ध तथा जैन धर्म में भी स्तंभों की प्रथा प्रचलित रहा है।

**बीज शब्द**

जैतखाम, निशाना, दुरपत्ता, सेतखाम, पालो, जैतस्तंभ, सतनाम, सत्य, अहिंसा, भाईचारा, सदाचारी, समानता, सात्विकता, एकता एवं अखंडता।

## शोध पत्र का उद्देश्य

1. जैतखाम उद्भव–विकास के क्रम को जानेंगे।
2. जैतखाम के अर्थ को समझेंगे।
3. जैतखाम की धार्मिक महत्व एवं शिक्षा को जानेंगे।
4. जैतखाम के स्वरूप से परिचित होंगे।

## जैतखाम उद्भव और विकास

**आदि स्तंभ :** आदि काल में यह सृष्टि अथाह जलमग्न थी। जल तो था परंतु उसमें लहर नहीं थी। जल पूरी तरह मद और अचल थी। एक समय ऐसा आया कि परिवर्तन का अद्भुत क्रियाचक्र चला। उस समय अनायास ही एक गर्जना हुआ। उसके पश्चात एक दिव्य प्रकाश पुंज दंड (सीधा लकड़ी के सामान श्वेत रंग का) प्रगट हुए। सफेद चौकस जल के ऊपर परत जम गए तथा लंबा स्तंभ प्रकट हुआ। यह सतनाम जैतखाम का प्रथम स्वरूप था। जिसे सूक्ष्म सत्य ग्रंथ में सतनाम जैतखाम व सत धर्म या सतनाम धर्म का प्रतीक माना गया है। दितीय स्तंभ या जैतखाम जल के ऊपर पृथ्वी को मंद गति से घुमाने के लिए अर्थात् काल व समय स्तंभ के रूप में विद्यमान है। यह पृथ्वी जैतखाम कहलाता है। यह स्तंभ समय ज्ञान, दिशा ज्ञान और युग–युगांतर का बोध कराते हैं। वैज्ञानिक इसे परिधि परमान धुरी या आधार के इत्यादि नामों से जाने जाते हैं। इसको सूक्ष्म सत्य ग्रंथ में जयस्तंभ या जैतखाम के नामों से जाना जाता है। सूक्ष्म सत्य ग्रंथ जिसे सद्गुरु सहज अंश ने जनमानस को भेंट किया तथा इसका व्यापक प्रचार भी हुआ था। इस ग्रंथ के सूक्ष्म शब्दों के विश्लेषण में

सतगुरु सहज अंश के साथ ही सतगुरु बालासाहेब, सतगुरु ज्ञानी साहेब, सत खोजी साहेब व सतगुरु घासीदास तथा अन्य सतगुरुओं की अमृतवाणियों ने अहम भूमिका निभाई। इस सूक्ष्म सत्य ग्रंथ को आर्य काल में नष्ट कर दिया गया और सतनाम धर्म को विभाजित करके सनातन धर्म का नाम दे दिया गया। परिणाम स्वरूप अनेक धर्म ग्रंथों का उदय हुआ यथा– 18 पुराण, 4 वेद, 6 शास्त्र, 8 व्याकरण इत्यादि। इन्हीं कारणों से आज ''सूक्ष्म सत्य ग्रंथ'' हमारे बीच उपलब्ध नहीं है।[1]

**नारनौल में जैतखाम :** 500 वर्ष पूर्व रचित सतनाम ग्रंथों में मिलता है कि सतनाम पंथ के समर्थक गुरु सहतेजीदास और गुरु जोगीदास (योगीदास) के द्वारा पश्चिम भारत के नारनौल नामक स्थान पर मणि जड़ित जोड़ा जैतखाम स्थापित किया गया था। प्राचीन साहित्य में यह अभिलेख मिलता है कि सतनाम पंथ प्रदर्शक गुरु धर्मदास के पुत्र चुरामणि जी ने 1518–19 में काशी नरेश वीरसिंह बघेल के अनुरोध पर नीरू–नीमा की झोपड़ी के पास गद्दी, खड़ाऊ रखकर श्वेत ध्वज फहराया और संतों ने सतनाम की स्तुति की। यह जैतखाम का एक स्वरूप माना जाता है।[2]

**औरंगजेब कालीन जैतखाम :** भारत में मुगलों का शासन लगभग 600 वर्षों का था। मुगलों के पतन के अंतिम दौर में औरंगजेब शासक था और वह बड़ा निदर्यी एवं कट्टर था। इस्लाम धर्म को स्वीकारने लिए दबाव दिया करता था। स्वीकार नहीं करने की स्थिति में कोड़े मारे जाते, जेल में बंद कर दिया जाता और यहाँ तक कि सरेराह सूली पर चढ़ा दिया जाता था। मथुरा के पास एक सतनामी किसान एवं फौजदार से लगान वसूली के संबंध में विवाद हो गया और किसान ने फौजदार की हत्या कर दी। औरंगजेब को जब यह पता चला तो वह क्रोधित हो उठा और सेना की एक टुकड़ी नारनौल भेजा। श्री वीरभान एवं जोगीदास के नेतृत्व में सतनामियों ने 1672 ई० में विद्रोह कर युद्ध किया। जिसमें मुगल सैनिक बार–बार पराजित हुए। जिसके कारण मुगल बादशाह औरंगजेब को युद्ध में उतरना पड़ा और अपने नेतृत्व में दिल्ली प्रस्थान किया। सेना ने गोला, बारूद, तोप का उपयोग किया फिर भी हार का सामना करना पड़ा। सेना में यह अफवाह फैल गई थी कि सतनाम संगठन के लोग जादू–टोने का

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

इस्तेमाल कर रहे हैं, जिसके कारण मुगल सेना पराजित हो रही है। औरंगजेब ने सेना के झंडे पर कुरान की आयतों को लिखवाया था जिससे विपत्ति दूर हो सके। वीरभान ने नारनौल के किला पर कब्जा कर लिया एवं वहाँ श्वेत ध्वज फहरा दिया जिसका मुगल सेना पर विपरीत प्रभाव पड़ा। यह श्वेत ध्वज जैतखाम का ही स्वरूप था।

एक बुजुर्ग सेनापति से सतनामियों के अच्छे संबंध थे उसने औरंगजेब को बताया कि सतनामियों में सफेद ध्वज का बहुत महत्व है। इसका उपयोग सैनिकों को करने हेतु निर्देश दिया जावे। औरंगजेब ने ऐसा ही किया और सभी सैनिकों को सफेद झंडा ऊँचा करने के लिए आदेश दिया। सैनिकों ने श्वेत ध्वज फहराया जिसे देखकर सतनामियों ने औरंगजेब की हार और समर्पण समझा। एक–एक कर सैनिक आते गए और मुगल सेना सतनामी सैनिकों का सर कलम करते गए।

इस तरह सतनामियों में आतंक फैल गया, सतनामियों ने मृत्यु स्वीकार किया लेकिन मुगल सेना के आगे नहीं झुके। इस तरह नारनौल से निकलकर सतनामी पूरे भारत में फैल गए। **3**

**गुरु घासीदास द्वारा जैतखाम की स्थापना :** जैतखाम का महत्व प्राचीन काल से है। अनेक उतार–चढ़ाव का भी सामना इसने किया और अडिग रहा, जो सतनामी समाज के जिजीविषा को दर्शाता है। समाज के बुजुर्गों से चर्चा में जानकारी मिलती है कि छत्तीसगढ़ में बहुत पहले से तालाबों के मध्य खंभा स्थापित करने की परंपरा सतनामियों की देन है। इस स्तंभ में भी श्वेत ध्वज फहराना इस बात की ओर संकेत करता है कि यह प्रतीक चिह्न किसी न किसी रूप में सतनाम पुरुष की स्तुति से संबंधित रहा है।

छत्तीसगढ़ में सतनाम पंथ के प्रवर्तक संत गुरु घासीदास सोनाखान के जंगल में अग्नि के मध्य ध्यान में लीन थे, तब ध्यान के अवस्था में ही अग्नि के मध्य श्वेत स्तंभ के रूप में आदि पुरुष के दर्शन हुए। इसी समय संत गुरु घासीदास ने भटके हुए लोगों को सत्य का मार्ग दिखा कर लोगों को उपदेश देने लगे। साथ ही उन्होंने सतपुरुष से हुए साक्षात्कार के अनुरूप श्वेत स्तंभ स्थापित कर उसके संरक्षण में रहने के लिए लोगों को प्रेरित किया।[4]

संत गुरु घासीदास ने सत्य व तथ्य को जाना, समझा और सत्यनामोपासना का प्रचार–प्रसार किया तथा राष्ट्रीय एकता, अखंडता

के प्रतीक चिह्न जैतखाम को गाँव–गली के चौराहे में स्थापित करने का अभियान चलाया। उन्होंने सभी जाति, धर्म के लोगों को एक जैतखाम की छत्रछाया में लाने का महान कार्य किया। संत गुरु घासीदास जी ने अपने समय में चार जगह जैतखाम स्थापित किए थे। इसके ऐतिहासिक प्रमाण आज भी मौजूद हैं–

1. सोनाखान में बिंझवार राजा रामराय के कहने पर उनके महल के सामने प्रथम जैतखाम की स्थापना किया गया था।
2. भंडारपुरी में मोती महल गुरुद्वारा के प्रांगण में जोड़ा जैतखाम स्थापित किया गया था। जिसका नाम था – चाँद और सूरज।
3. रतनपुर के दुलहरा तालाब के पार में जैतखाम स्थापित किया गया था।
4. तेलासी बाड़ा के प्रांगण में भी जैतखाम स्थापित किया गया था।

इसी तरह जैतखाम की स्थापना बाबा गुरु घासीदास के वंशजों ने आगे बढ़ाया था जिसका उल्लेख इस प्रकार है–

- गुरु अमरदास जी ने सन् 1830 ई० में चटवापुरी जो शिवनाथ नदी के तट पर स्थित है, वहाँ जैतखाम स्थापित कर समाधि लगाया था।
- राजा गुरु बालक दास जो बोड़सरा राजवाड़ा के सामने तालाब के पार में जैतखाम स्थापित किया था और बताया था कि उन्होंने राजनांदगाँव के राजमहल के सामने एक जैतखाम स्थापित किया था। जिसका प्रमाण रावटी दर्शन यात्रा शोध दल के सदस्यों को मिला है।[5]

यह माना जाता है कि संत गुरु घासीदास जी ने सर्वप्रथम गिरौदपुरी में जोड़ा जैतखाम स्थापित किया था। गुरु बालक दास ने अपने मित्र शहीद वीर नारायण सिंह जी को सोनाखान में जोड़ा जैतखाम स्थापित करने के लिए कहा था। वीर नारायण सिंह ने अपने मकान के सामने जैतखाम स्थापित किया था, जिसे अंग्रेज सैनिकों द्वारा गाँव में आग लगाकर नष्ट कर दिया गया।

संत गुरु घासीदास ने भंडारपुरी में जोड़ा जैतखाम स्थापित किया और शोषित पीड़ित लोगों का स्वाभिमान को जगाया था। गुरु

बालकदास एवं अमरदास जी ने तेलासी ग्राम में सामाजिक क्रांति का बीजारोपण किया। यहीं जोड़ा जैतखाम स्थापित किया गया था। जिसमें समस्त नर–नारी सतनाम दीक्षा लेकर सतनामी हो गए। यह एक जाति विहीन समाज भी कहा जाता है। समन्वय का यह एक उदाहरण है।[6]

लगभग 1786 ई० के आसपास प्रथम जैतखाम की स्थापना फागुन सुदी पंचमी में रतनपुर के (बिलासपुर जिला) दुलहरा तालाब के संगम घाट पर स्थापित किया गया था। छत्तीसगढ़ के राजिम निवासी कवि श्री सुकुलदास जी लिखते हैं–

*फागुन सुदी पंचमी भाई, सतज्ञान अनुभूति गुरु पाई।*
*दूसर साल पाय तिथि साते, सतनाम धर्म बहुर अस्थापे।*

*जयतखाम लगइया गुरु, धर्म ध्वजा फहराय।*
*घासीदास गुरु महिमा, झंडा असन लहराय।।*

*जयतखामे देइन लगाई, श्वेत ध्वजा लहर लहराई।*
*सतनाम सब झनेच पुकारे, कर त्याग सत काम सुधारे।।*[7]

जैतखाम धर्म ध्वज है। इसका संबंध किसी देवी–देवता से कदापि नहीं है। रतनपुर में जैतखाम स्थापित करने का वर्णन पंथी गीतों में इस प्रकार मिलता है–

*रतनपुरी तब गुरु पगुधारो, संत आई कीन सतकारो।।*
*सकल संत तब गुरु पंह पाये, दर्शन की नहिंये मंह भाये।।*
*सकल संत को दिए उपदेश, जामे मिटही नग तज गवकेश।।*
*सुनहु संत रतनपुर वासी, चलो साथ न दोऊ उदासी।।*
*सत्य के जीत सकल संसारा, तिहते जैतखाम उद्धारा।।*
*धर्म प्रतीक चिह्न है भाई, नहिं देवी–देवता कहलाई।।* [8]

**जैतखाम क्या है ? –** अब हम जैतखाम का अर्थ जानेंगे कि आखिर यह क्या है, जो इस प्रकार है–

जैतखाम का इतिहास प्राचीन है। इनका संबंध मानव विकास से है। जैतखाम विभिन्न अवसरों पर अलग–अलग रूपों में प्रतिष्ठापित किया गया है। जैसे– नए तालाब या सरोवर के मध्य स्थापित की जाती है, जिसे दंडी खाम या दंडी स्तंभ कहते हैं। धार्मिक अनुष्ठान (यज्ञ) में जैतखाम स्थापित किया जाता है, उसे गरुड़ खंभ कहते हैं। प्राचीन धार्मिक कथा के अनुसार हिरण्यकश्यप अपने महल के दरवाजे पर जैतखंभ स्थापित किया था, जिसे अग्नि खंभ कहते हैं। छत्तीसगढ़

में तालाब विवाह का आयोजन आज भी देखने को मिलता है। स्तंभ स्थापित कर विधि–विधान से आयोजित इस मांगलिक उत्सव के बाद ही गाँव के लोग इस जल का प्रयोग करते हैं। जिन गाँवों में तालाब के मध्य स्तंभ परिलक्षित हो, समझ लीजिए यह वैदिक काल से प्रचलित संस्कृति का संवहन है।[9]

जैतखाम छत्तीसगढ़ी बोली का एक शब्द है। जैतखाम का विच्छेद करने पर जैत और खाम होता है, जिसमें जैत = जीत या विजय एवं खाम = स्तंभ या खंभा है। अर्थात जैतखाम का अर्थ हुआ जीत की निशानी या जीत रूपी स्तंभ। इसका हिंदी रूपांतरण जय स्तंभ है, जो दो शब्दों से बना है जय (विजय या शौर्य) और स्तंभ (खंभा या स्तूप)। जय स्तंभ स्थापना की परंपरा प्राचीन काल से रही है। जिसमें सतनामी, कबीरपंथी, सीक्ख, रैदासी, रामनामी आदि प्रचलित है। प्राचीन समय में जब कोई शासक या राजा दूसरे राज्य को जीत लेता था तो वह विजय स्तंभ (जैतस्तंभ) स्थापित करता था।

किसी भी समाज में जैतखाम की स्थापना राजा, धर्मगुरु, ट्रस्ट, धार्मिक संस्था द्वारा किसी भी क्षेत्र में विजय या जीत के उपलक्ष में प्रतीक रूप में की जाती है। जो गौरव और सम्मान का प्रतीक है। स्तंभ शौर्य, गौरव, सम्मान और विजय की गाथा स्वमेव कहता है। किसी दूसरे को बताने या कहने की आवश्यकता नहीं होती।[10]

जैतखाम के लिए कई नामों का प्रयोग किया जाता है, जो इस प्रकार है :–

**1. निशाना :** निशाना शब्द की उत्पत्ति निशान से हुआ है जिसका अर्थ प्रतीक, पहचान या चिह्न होता है। शाब्दिक अर्थ के अनुसार निश्चित रूप से यह स्तंभ किसी न किसी आराध्य शक्ति का पहचान है। निशाना अर्थात प्रतीक स्तंभ लगभग 3 से 4 फुट ऊँची लकड़ी का खंभा है, जिस पर श्वेत ध्वज फहराया जाता है। यह निशाना सतनाम पंथ के आराध्य शक्ति का प्रतीक है। इसे पूर्व में चूल्हे के पास स्थापित करने का उल्लेख है लेकिन चूल्हे के समक्ष स्थापित करना क्यों उचित समझा गया और यह प्रतीक कब से अपनाया गया यह अब भी रहस्य ही है।[11] निशाना ही सत धर्म, सत्य और सतपुरुष के प्रतीक है। जिसे सतनाम पंथ के लोग आदिकाल से मानते आ रहे हैं। निशाना का अर्थ होता है– **प्रतीक, चिह्न, श्वेत झंडा, पालो, निशानी, संकेतक, केंद्र बिंदु, सार तत्व, सत, लक्ष्य, साधना, दिशा–निर्देश, बिंदु** आदि कहा

जाता है। निशाना के साथ चौकी शब्द का भी गहरा संबंध रहा है। जिसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है–

1. बुद्ध काल में पहले जिस आसन पर बैठकर भिक्षुओं ने ध्यान योग की साधना करते थे उसे चौकी कहा जाता था –विनय पिटक ग्रंथानुसार।
2. नाथ पंथी योगियों का भी शाबर मंत्र ग्रंथ में चौकी साधनों का उल्लेख मिलता है।
3. हरियाणा के साध सतनामी अपने आस्था केंद्र को चौकी कहकर संबोधित करते रहे हैं। यहाँ निशाना भी स्थापित किया गया था, जिसे औरंगजेब के कारण हटा दिया गया था।
4. कबीर पंथ में भी चौका पूजा का प्रचलन है।
5. छत्तीसगढ़ में सतनामी समाज की चौकी पर निशाना स्थापित कर उसकी आराधना करते आ रहे हैं और चौका पूजा भी प्रचलित है।

**चौका शब्द का अर्थ :** चौकस, चौकन्न, जागरूक, सतर्क, सचेत और सावधान रहना। अर्थात चौका का अर्थ सतनाम चेतना के प्रति सदैव चौकन्न रहना है। निशाना समाज को एक सूत्र में पिरोकर रखने के लिए मील का पत्थर साबित हुआ, जिसका महिमा का वर्णन पंथी गीतों में इस प्रकार है –

***लगे हे निशानी सतनाम के***
***लगे हे निशानी जैतखाम के***
***युग–युग से चली आये हो,***
***जैतखाम के झंडा सत के मारग बताये हो।।*** [12]

**2. पालो :** जैतखाम को पालो भी कहते हैं जिसका अर्थ है जिसको हमने अपने रक्त से सींच कर पाला अर्थात् जिनका पालन हमने बलिदान देकर की। पालो जैतखाम का लघु रूप है जिसे घर के निर्दिष्ट स्थान पर स्थापित करते हैं। वर्ष में एक बार मंगल पद एवं पंथी गीत, झांझ, मांदर के साथ धूमधाम से झंडा चढ़ाते हैं एवं स्वजनों के साथ सहभोज करते हैं।[13]

**3. दुरपत्ता :** दुरपत्ता का अर्थ होता है इज्जत या सम्मान। जिसने हमारी पत्र रख लिया अर्थात् इज्जत की रक्षा की। उसी क्रम में हमने उनकी पद रख ली अर्थात् हमने उनकी इज्जत बचा ली। इस प्रकार

कहा जाता है कि दुरपत्ता धर्म की सूक्ष्म रूप से रक्षा करता है। उल्लेखनीय है की द्रोपति को छत्तीसगढ़ी में दुरपती कहा जाता है, जो भले ही मूलतः द्रुपद नरेश की पुत्री का वाचक हो लेकिन छत्तीसगढ़ी संस्कृति का अर्थ ''रक्षा'' भी इसके साथ जुड़ गया है। दुरपत्ता रक्षा का प्रतीक है।[14]

**4. सेतखाम :–** सेतखाम शब्द में एक सात्विक व पवित्र भाव अंतर्निहित है। यह संतों, गुरुओं कि श्री मुख से उच्चारित व जन व्यवहृत शब्द है। सेत का अर्थ सादगी युक्त पवित्र भाव से है। रंग के आधार पर इसका अर्थ सादा या सफेद ही होता है। जो शांति, सद्भाव, समानता, सदाचारी, सत्य व समन्वय का प्रतीक है।[15]

इस तरह प्रचलन के अर्थ में भिन्नता आने लगा है फिर भी सतनाम संस्कृति में यह प्रचलित है।

**जैतखाम का स्वरूप :** जैतखाम एक लंबी लकड़ी का गोला होता है जो चबूतरे के बीचो–बीच स्थापित रहता है। इसका एक चौथाई भाग चबूतरे व जमीन के अंदर होता है। शेष भाग चबूतरे के ऊपर की ओर रहता है। इसकी कुल लंबाई 21 हाथ (31 फीट लगभग) होती है। यह मुख्यतः ठोस एवं मजबूत लकड़ी की होती है। इसे खाम कहते हैं। इस खाम के ऊपरी सिरे में लोहे के तीन हुक (गोलाकार) लगी रहती है। निचली हुक के नीचे 3 कील लगी होती है। इन तीन हुकों के बीचो–बीच 7 हाथ (लगभग 11 फीट) लंबी बाँस का डंडा फंसा रहता है। डंडे का निचला भाग तीन किलों पर अटका रहता है। डंडे के ऊपरी भाग में आयताकार सफेद रंग का पताका या झंडा लगा रहता है।[16]

प्राचीन काल में 21 हाथ (31 फीट) का जैतखाम स्थापित किया जाता था। आज कल साधनानुसार लघु रूप 5, 7, 9 या 11 हाथ का स्थापित किया जाता है। जैतखाम जाति विहीन समाज का द्योतक रहा है। सार्वजनिक रूप से जैतखाम के स्थापना के संबंध में अच्छी–अच्छी बातें बुजुर्गों, संतों, गुरुओं और कवियों द्वारा बताई जाती है, जो इस प्रकार है–

*पाँच हाथ चबूतरा बंधाई। पाँच तत्व जग सृष्टि रचाई।।*
*भूमि आगास हवा अऊ पानी। तेज तत्व मिल रचा जहानी।*
*शरिर पीला आकाश अंशा। जठराग्नि तेज कर बंशा।।*
*पवन चलन बलन अर धावन। पानी शरिर रक्त भरावन।।*

*माटी माई मांस बढ़ावै। जयतखामे सद्गुरु लगावै।।*
*अटल सत्य एके प्रमाणा। ईक्कीस हाथे इंद्री समाना।।*

*उहे लगे हाथ दिन झंडा। सतो रजो तीन गुण अखंडा।।*
*तीन गुजर अवस्था बतावै। जागरण सपना सुशुप्ति जतावै ।।*
*श्वेत ध्वजा अहिंसा गामी। सतनामे जय जय सतनामी।।*
*गाँवे–गाँव खाम लगावै। सतनामी कर मान बढ़ावै।।*
*जयत खाम जग मंगलकारी। दुख दरिद्रा नशावन हारी।।*

भावार्थ यह है कि जैतखाम का चबूतरा 5 हाथ की लंबाई और 5 हाथ की चौड़ाई में चौकोर होना चाहिए और 4 फुट की ऊँचाई होनी चाहिए। ताकि कोई जानवर इस पर चढ़ न सके। चबूतरे के ऊपर 21 हाथ का सरई लकड़ी का गोलाकार खंभा स्थापित करना चाहिए जिसमें 7 हाथ चबूतरा के अंदर जमीन में जाएगा और शेष 14 हाथ चबूतरे के ऊपर रहेगा। खंभा के ऊपर तीन हुक लोहे या अन्य धातु का लगाना आवश्यक है क्योंकि यह बाँस के डंडे को कस कर रख सके। पालो लगाने वाले बाँस (डंडा) का लंबाई 5 हाथ या 7 हाथ होना चाहिए। उस बाँस के पतली सिरे पर पालो को लगाकर नीचे से पालो को बांधना चाहिए ताकि पालो हवा–तूफान में न उड़े। उसी प्रकार पालो लगाने वाले बाँस को नीचे से जाम करने के लिए एक छेद बनाया जाता है। उसमें कील या लकड़ी को छीलकर लगाया जाता है ताकि पालो लगा बाँस (डंडा) न निकले।[17]

गुरु घासीदास जी कथनी पर नहीं करनी पर विश्वास करते थे उन्होंने अन्य संत, महापुरुषों की तरह धर्मग्रंथ लिपिबद्ध नहीं किया अर्थात् कोई धर्म ग्रंथ निर्माण नहीं किया बल्कि अपने सिद्धाँतों के अनुरूप कार्य किया। वे सतनाम का संदेश (सतोपोदेश) देने अंतिम बार रतनपुर गए। लोगों की माँग पर उनकी मदद से जयंती वन गए और एक लंबी सी लकड़ी का गोला काट कर लाए। उसे छीलकर 21 हाथ लंबाई का बनाए और दुलहरा तालाब के संगम घाट पर सतनाम धर्म का प्रतीक चिह्न के रूप में स्थापित किया। उसमें श्वेत पताका फहराये और जैतखाम (जयस्तंभ – असत्य पर सत्य का विजय) नाम दिए जो वर्तमान में भी मौजूद है। जैतखाम एकता, अखंडता और सतनाम धर्म पर अटल विश्वास का प्रतीक है।[18]

रतनपुर में संगम घाट पर जैतखाम स्थापित करने का स्वरूप वर्णन पंथी गीतों में मिलता है। एक उदाहरण देखिए–

*सकल संत जब वन में जावै, सरई काठ देख मन भावै।।*

*काठ लीन गाड़ी में जोरहि, सास भये तक घर में लावहि ।।*
*इक्कीस हाथ के खाम बनावा, घासी गुरु देखत मन भावा।।*
*संगम घाट में खाम लगाये, सत्यनाम के ध्वजा फहराये।।* [19]

जैतखाम के स्वरूप को मुख्यतः पाँच भागों में बांटा जा सकता है –

**1. चबूतरा :** प्राचीन समय में चबूतरा मिट्टी का बना होता था लेकिन आधुनिकता के प्रभाव के कारण यह ईंट व सीमेंट का बनाया जाने लगा। चबूतरा के समक्ष ज्योति कलश जलाकर आरती करते हैं। यह चारों तरफ से समान आकार (चौकोर) होता है जो समानता को भी प्रदर्शित करता है। वर्तमान में अलग–अलग आकार के चबूतरे बनाए जाने लगे हैं। यह विश्वास एवं विशालता का प्रतीक है।

**2. खंभा या खाम :** यह 21 हाथ (31 फीट लगभग) लंबी लकड़ी का गोला होता है। प्रायः सरई लकड़ी का इस्तेमाल किया जाता है लेकिन आज अन्य लकड़ियों से भी बनाया जाने लगा है। यह आस्था पर निर्भर है। जिसका जितनी साधन है उसके अनुसार से बनाते हैं, आस्था में किंचित भी कमी नहीं है। लकड़ी के गोले को छीलकर उसे सुंदर और चिकना बनाया जाता है। इसे सफेद रंग से रंगा या पेंट किया जाता है। यह अडिग एवं अटल विश्वास का प्रतीक है। इसे स्तंभ भी कहते हैं। ऊपर लगा टोपी मर्यादा का प्रतीक होता है। आजकल लकड़ी की जगह सीमेंट और लोहे की खाम बनाए जाने लगे हैं।

**3. बाँस का डंडा :** यह 7 हाथ की लंबाई वाला ठोस बाँस का लकड़ी होता है। इसे भी चिकना बनाया जाता है। इसमें गांठे होती है जो मानवीय गुण सत्य, करुणा, प्रेम एवं क्षमा को दर्शाता है। अपनी तथा दूसरों की सच्ची सेवा तथा रक्षा करने का पाठ पढ़ाता है। इसलिए यह सुरक्षा एवं संघर्ष का प्रतीक है।

यदि किसी के हाथ में डंडा है तो उस पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता। यदि किसी को सहारा देना हो तो डंडे का उपयोग प्रचलित है। यदि नदी नाला पार करना है तो डंडे से गहराई का पता लगाया जा सकता है। वैज्ञानिक युग में बाँस का डंडा बिजली के करंट से भी बचाता है। अंधे और बूढ़े का सहारा डंडा ही होता है। इसलिए डंडे को महत्व को दर्शाया जाता है।

**4. हुक और कील :** यह लोहे या अन्य धातु से बना होता है। पूर्व में यह दो हुक हुआ करते थे क्योंकि पहले जैतखाम आकार में भी छोटा हुआ करते थे, जिसके कारण पालो के हवा में लहराने और उसकी

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कंपन को दो हुक सहन कर लेते थे लेकिन आज वर्तमान समय में जैतखाम का रूप बड़ा है। जिसमें तीन हुक का प्रयोग किया जाता है। जो त्रिगुण सत, रज एवं तप और तीन काल भूत, भविष्य, वर्तमान को दर्शाता है। तीन कील सत्य, अहिंसा, प्रेम एवं सद्भाव के प्रति अटल विश्वास का प्रतीक है। यह सृष्टि सत्य, अहिंसा, प्रेम और सद्भाव पर टिकी है। यह सदाचरण धारण कर सत्कर्म करते हुए सतमार्ग पर चलने और सद्व्यवहार को बनाए रखने की प्रेरणा देता है।[20]

**5. श्वेत पताका (झंडा या पालो) :** यह श्वेत कपड़े का बना होता है। यह आयताकार होता है। पालो वाला कपड़ा श्वेत, स्वच्छ एवं मोटा रखना चाहिए। पालो की लंबाई 2/3 और चौड़ाई 1/3 के अनुपात में होता है। झंडे का आकार जैतखाम के आकार पर निर्भर करता है। जैतखाम की अनुपात में झंडा बनाया जाता है। झंडे के तीन कोनों को मोड़कर सिलवाया जाता है और चौथे कोने को बाँस के डंडे के अनुसार मोड़कर सिलवाया जाता है, जिससे झंडा आसानी से डंडे पर लग सके। लगाने के बाद अंतिम सिरे को सीलकर जाम कर दिया जाता है, जिससे झंडा हवा–तूफान में न निकल सके। प्रायः 18 दिसंबर को नया झंडा (पालो) चढ़ाया जाता है। यह सत्य और एकता का प्रतीक है।[21] इस तरह जैतखाम पूर्णता को ग्रहण करता है।

**जैतखाम का श्वेत रंगः** जैतखाम पूर्ण रूप से श्वेत रंग का होता है। बाबा गुरु घासीदास ने सफेद रंग का चुनाव किया क्योंकि यह शांति, सद्भाव, सदाचरण, समानता, क्षमता और आत्मनिर्भर का प्रतीक है। बाबा गुरु घासीदास कहते हैं मैंने तुम्हें सफेद रंग दिया है जो निर्मल, निश्चल और सुदृढ़ सदचरित्रता का बोधक है।

रंगों के पीछे एक मनोवैज्ञानिक कारण भी रहा है। लाल रंग खतरा या भय का प्रतीक, हरा रंग प्रसन्नता एवं हरियाली का, पीला रंग साधुभाव, सन्यास, भक्ति। काला व नीला रंग औसतन अंधकार अज्ञानता एवं असत्य का प्रतीक माना गया है। व्यक्ति जिस रंग का चयन करता है वह यह स्वीकार करता है कि उसके गुण और स्वभाव उसी के अनुरूप होता है। इसलिए सफेद रंग को सर्वोपरि माना गया है क्योंकि यह सत्य (सच्चाई) का प्रतीक है। सतनाम धर्म के लोगों में भी श्वेत रंग के प्रति अगाध आस्था है, इसलिए श्वेत रंग की धोती, कुर्ता, श्वेत उपवीत, श्वेत चंदन तिलक, सत्यवाणी, सत्कर्म, सात्विक

आहार, स्वच्छावास, सत्संगति और सतनाम का जय सतनाम संस्कृति की महत्ती अंग बन गयी है–

*श्वेत श्वेत संसार लखत है, श्वेत है कर्म हमारा।।*
*श्वेत जीवन पंथ प्रिय मम, सत्यनाम इक सार।।* [22]

सत्य के प्रतीक इस श्वेत ध्वज की पहचान गुरु ने ही कराई है। पंथी गीतों में यह उल्लेख मिलता है–

*सादा झंडा के दिए पहिचान, गुरु के लिखे ज्ञान झलकत हे।।*
*बाबा के ये निशान चमकत हे, बाबा के ये निशान झलकत हे।।*
*जैसे सादा झंडा दिखे वैसे तोर काया हे ।।*

इसी तरह एक और पंथी गीत देखिए जिसमें यह निर्दिष्ट है कि सूर्य–चँद्रमा की तरह जैतखाम रात–दिन प्रकाशवान रहेंगे–

*लहराये तोर नाम के निशान, पवन में यहो सतनाम।।*
*कौन–कौन नामकर खंभा ल लगाए हो, जेमा कौन रंग झंडा चढ़ाये हो।।*
*हावय महिमा जेखर महान, पवन में यहो सतनाम।।*
*चँदा–सूरज नाम कर खंभा ल लगाये हो,*
*श्वेत हो सुपेतिरंग के, झंडा ला चढ़ाये हो।।* [23]

जैतखाम को देखते ही हृदय में पवित्र उल्लास का भाव उत्पन्न होता है। आत्मविश्वास जागता है। मन में यह भावना आता है कि यहाँ मेरे अपने लोग निवास करते हैं। जैतखाम सतनाम के संपूर्ण गुणधर्म को उद्‌भाषित करता है। वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि सूर्य में सात रंग होते हैं जो इंद्रधनुष के रूप में दिखाई देते हैं। इसे हिंदी में सूत्रात्मक रूप में इस प्रकार कहते हैं – बैआनीहपीनाला। प्रत्येक अक्षर एक–एक रंग का संकेतक है। इन सातों रंगों को एक निश्चित मात्रा में मिला दिया जाए तो वह सफेद हो जाता है। इसी प्रकार सतनाम धर्म में अनेक जातियों और वर्गों के लोग समाहित हुए हैं और वह सफेद रंग की तरह सतनामी हो गए। यह समन्वय और समानता को दर्शाता है। [24]

**जैतखाम से शिक्षा :** जैतखाम से प्रमुखता पाँच शिक्षा मिलती है, जो इस प्रकार है–

1. मानव मानव एक है। उसमें न कोई ऊँचा है, न कोई नीचा, न कोई गोरा है, न कोई काला, न अमीर न गरीब, सब समान है। जैतखाम समता का स्वरूप है।
2. यह सम्मान से जीना सिखाता है, असमानता को दूर करता है और अपने पथ पर अटल रहने का संदेश देता है।

3. यह सत्कर्म, सदाचरण, सतमार्ग पर चलने को प्रेरित करता है। मेहनत पर भरोसा और आलस्य को त्यागने की सीख देता है।
4. यह अपने अधिकारों की रक्षा करना तथा कर्तव्य पालन करना सिखाता है।
5. आध्यात्मिक दृष्टि से यह जन्म–मरण के चक्कर से दूर करता है। यही जैतखाम के पाँच मोक्ष मार्ग है।

**धार्मिक महत्व एवं संदेश :** सतनाम धर्म में जैतखाम का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। किसी शुभ कार्य के पूर्व समाज के लोग जैतखाम की आरती अवश्य करते हैं। जैतखाम सतनाम पंथ के लिए प्रेरणा स्रोत है। जिसका धार्मिक महत्व और संदेश इस प्रकार है–

1. सतनाम पर अडिग रहना। किसी के भूल–भुलैया में न पड़ना। अपनी व्यवस्था के अनुसार चलना।
2. रूढ़िवादिता, बाह्याडंबर, परंपरावादिता से विलय रहना।
3. स्वधर्म का पालन करना, किसी के धर्म की निंदा न करना, अंधविश्वासी न बनना।
4. सतनाम के प्रचार–प्रसार में तन, मन, धन अर्थात मनसा–वाचा–कर्मणा से लगे रहना।
5. मानव धर्म का पालन करना क्योंकि मानव धर्म ही सच्चा धर्म है।[25]

## गिरौदपुरी में स्थापित भव्य जैतखाम

गिरौदपुरी धाम भारत एवं छत्तीसगढ़ के प्रख्यात तीर्थ स्थलों में से एक है। यह बलौदाबाजार जिला में स्थित है। महानदी और जोंक नदी के संगम स्थान से 10 कि०मी०, बिलासपुर से 80 कि०मी० एवं रायपुर से लगभग 155 कि०मी० की दूरी पर बाबा गुरु घासीदास की तपोभूमि है। यहाँ आने–जाने के लिए सड़क मार्ग की सुविधाएँ है। यहाँ प्रतिदिन 5000 दर्शनार्थी का आगमन होता है और गिरौद मेला के समय लाखों की संख्या में लोग यहाँ पहुँचते हैं। जिसका पहला कारण गुरु घासीदास का जन्म स्थली और दूसरा कारण यहाँ पर स्थापित भव्य जैतखाम है। यहाँ देश–विदेशों से लोग बाबा के दर्शन एवं जैतखाम की भव्यता को निहारने पहुँचते हैं।

जैतखाम बनाने की घोषणा छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री माननीय अजीत प्रमोद कुमार जोगी ने सन् 2003 में किया था। इसका भूमि पूजन 23.12.2007 को किया गया। इसके निर्माण में 5 वर्ष लग गया। इसका निर्माण कार्य 3 फरवरी 2008 को प्रारंभ किया गया और 31 जनवरी 2012 को कार्य पूर्ण हो गया। जैतखाम निर्माण में शासन अनुसार 54 करोड़ रुपए की लागत आयी है।

गिरौदपुरी में स्थापित जैतखाम की कुल ऊँचाई जमीन से 81 मीटर है जिसमें 4 मीटर ऊँचा चबूतरा इसके ऊपर 65 मीटर मूल ढांचे के ऊपर 12 मीटर जैतखाम है। चबूतरे से इसकी ऊँचाई 77 मीटर (243 फीट) और कुल जमीन से ऊँचाई 81 मीटर है। नींव की गहराई 09.5 मीटर है। जैतखाम में 7 अंक का विशेष महत्व रहा है, जो जैतखाम बनाते समय भी विशेष ध्यान रखा गया है। यथा –

1. पैराबोलिक डिजाइन– 7
2. कमल दल पंखुड़ी की संख्या –7
3. कमल पंखुड़ी की लंबाई– 7 मीटर
4. पंखुड़ी के नीचे स्थित प्रवेश द्वार– 7
5. अंदर पिलर कॉलम – 7
6. ऊपर से जल स्रोत दर्शन– 7
7. ऊपर से पहाड़ों का दर्शन –7
8. तल – 7
9. कैप्सूल लिफ्ट – 7+7 = 14

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

**अन्य जानकारियाँ–**

1. अंदर प्रवेश द्वार – 2
2. घुमावदार सीढ़ी– 2
3. सीढ़ी कवर – 2
4. ऊपर द्वार– 2
5. आकाशीय बिजली सुरक्षा हेतु तड़ित चालक – 2
6. बाहर पिलर कॉलम – 14
7. सीढ़ियों की चौड़ाई – 2.5 मीटर
8. सीढ़ियों की संख्या– 432+432 कुल = 864
9. सीढ़ियों को संभालने हेतु कॉलम – 8
10. बालकनी – 5
11. लिफ्ट कवर – 1
12. ऊपर सतह से जैतखाम की ऊँचाई– 12 मीटर
13. चढ़ने हेतु सीढ़ियाँ –12
14. पालो चढ़ाने हेतु झंडा हुक– 3
15. विमानों के लिए लाल बत्ती संकेतक– 3
16. घुमावदार खिड़कियाँ– 98

**विशेष :** जैतखाम तूफान, चक्रवात एवं भूकंपरोधी बनाया गया है। यह 12.30 रिएक्टर स्केल तक भूकंप को सह सकता है। भारत में 8.30 तीव्रता से अधिक का भूकंप नहीं आया है। छत्तीसगढ़ का यह क्षेत्र भू–वैज्ञानिकों के अनुसार भूकंप, ज्वालामुखी प्लेट में नहीं आता।**26** जैतखाम कुतुब मीनार से भी ऊँचा है। कुतुबमीनार की ऊँचाई 72.5 मीटर अर्थात 237 फीट है जबकि जैतखाम की ऊँचाई 243 फीट है। इसकी आकृति विश्व प्रसिद्ध है जो कि विश्व का सबसे ऊँचा जैतखाम है। यह सतनाम समाज के लिए गौरव की बात है।

**भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी का उद्बोधन के कुछ अंश**

गुरु घासीदास सामुदायिक भवन के भूमि पूजन के शुभ अवसर पर भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी ने जैतखाम और सतनाम धर्म के संबंध में अपने उद्बोधन में स्पष्ट कहा है कि –

1. *''सबसे पहले गुरु घासीदास जी ने गिरौदपुरी में ही जोड़ा जैतखाम स्थापित किया था। आज का आधुनिक जैतखाम सतनामी समाज का केंद्र होने के साथ पूरे समाज के लिए शांति, अहिंसा, प्रेम एवं करुणा का प्रतीक है।''*

2. *''मैं इस जैतखाम की ऊँचाई में गुरु घासीदास के प्रति लोगों के दिल में बसी आस्था की गहराई भी देखता हूँ। इस जैतखाम के वास्तुशिल्प और सुंदरता की जितनी तारीफ की जाए वह कम है।''*
3. *''जैतखाम के दर्शन करते हुए मैं सोच रहा था कि जिस तरह महात्मा बुद्ध के कारण गया को ''बोधगया'' का दर्जा मिला उसी तरह गुरु घासीदास के कारण गिरौद नाम के गाँव को ''गिरौदपुरी धाम'' का दर्जा प्राप्त हो गया है।''*

इस तरह राष्ट्रपति जी ने जैतखाम के महत्व को रेखांकित करते हुए बाबा गुरु घासीदास के सत्य, अहिंसा, करुणा, समानता, समरसता, भाईचारा और एकता एवं अखंडता आदि को प्रचारित एवं प्रसारित करने का संदेश दिया। [27]

**भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद – गिरौदपुरी धाम नवंबर 06, 2017**

**निष्कर्ष :** निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि आज जैतखाम आस्था का केंद्र बन चुका है। सतनाम संस्कृति के संवाहक संत गुरु घासीदास के प्रतीक (चिह्न) जैतखाम का सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जैतखाम का स्वरूप निश्चल, निर्मल एवं पवित्र है। गुरु घासीदास के इस प्रतीक रूपी जैतखाम में गुरु के सभी सिद्धाँतों, उपदेशों, निर्देशों को समाहित किया जा सकता है। जैतखाम एवं गुरु के प्रभाव से ही लोग आज समाज में सम्मिलित हुए हैं और सतनाम को धारण किए हुए हैं। आज विश्व का सबसे ऊँचा जैतखाम होने का गौरव भारत के छत्तीसगढ़ को प्राप्त है। हम जैतखाम को सम्मान की भाव से देखते हैं, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। हमने नए जैतखाम का स्वागत किया एवं पूर्व में स्थापित जैतखाम का सम्मान बनाए भी रखा। इस तरह यह सतनाम के प्रति अगाध आस्था को प्रकट करता है। जैतखाम अपनेपन का भाव पैदा करता है। यह सतनाम समाज की एकता एवं अखंडता का एक उदाहरण है। श्वेत ध्वज शांति, श्रद्धा, समन्वय, सदाचारी, समानता, सत्य, अहिंसा और सेवा के भाव को प्रकट करता है। निःसंदेह कहा जा सकता है कि सतनाम धर्म और सतनाम संस्कृति महान है। जाते–जाते एक कविता जो जैतखाम के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है–

## सतनाम निशानी–जैतखाम

जय सतनामी, जय सतनामी, जय–जय सतनामी।
जैतखाम सतनाम निशानी।।

जिसे देखकर औरंगजेब भी, हुआ था पानी पानी।
जय सतनामी, जय सतनामी, जय–जय सतनामी।
जैतखाम सतनाम निशानी।।

जैतखाम की आड़ लेकर किया था, जिसने सतनाम की हानि ।
तब भी अडिग रहे पथ पर, वह थे वीरों के वीर सतनामी।।
जय सतनामी, जय सतनामी, जय–जय सतनामी।
जैतखाम सतनाम निशानी।।

शीश कटा पर झुके नहीं, वह थे अमर बलिदानी ।
वीरभान–जोगीदास के, है ये अमर कहानी।।
जय सतनामी, जय सतनामी, जय–जय सतनामी।
जैतखाम सतनाम निशानी।।

### संदर्भ ग्रंथ–


1. सोनी, डॉ० जे० आर०, सतनाम रहस्य, छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ – 571, 572।
2. कुर्रे, सुदर्शन सिंह, सतनाम पंथ और सतनामी एक आत्मचिंतन, संकलनकर्ता –राजेंद्र सतनामी, पृष्ठ– 45।
3. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मा. पत्रिका), वर्ष –2, अंक– 12, दिसंबर 2015, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन, रायपुर, पृष्ठ– 18।
4. कुर्रे, सुदर्शन सिंह,सतनाम पंथ और सतनामी एक आत्मचिंतन, संकलनकर्ता राजेंद्र सतनामी, पृष्ठ– 45।
5. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मा. पत्रिका), वर्ष –6, अंक– 2, फरवरी 2019, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन, रायपुर, पृष्ठ– 21, 22।
6. सोनी, डॉ० जे० आर०, सतनाम रहस्य, छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ – 575।
7. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मासिक पत्रिका), वर्ष –2, अंक– 7, जुलाई 2015, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन, रायपुर, पृष्ठ–30।
8. साहू, गायत्री– छत्तीसगढ़ में प्रचलित पंथी लोकगीतों का सांस्कृतिक अनुशीलन (शोध ग्रंथ), 1995, पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ– 174, 175।
9. वही....................................... पृष्ठ – 170।

10. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मासिक पत्रिका), वर्ष –2, अंक–7, जुलाई 2015, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन, रायपुर, पृष्ठ–30।
11. कुर्रे, सुदर्शन सिंह, सतनाम पंथ और सतनामी एक आत्मचिंतन, संकलनकर्ता राजेंद्र सतनामी, पृष्ठ – 46।
12. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मासिक पत्रिका), वर्ष –6, अंक–2, फरवरी 2019, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन रायपुर, पृष्ठ –22।
13. जोंगलेकर, कमल नारायण – संत गुरु घासीदास एवं सतनाम पंथ का ऐतिहासिक अध्ययन, (शोध ग्रंथ), सन 2000, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ– 175।
14. साहू, गायत्री– छत्तीसगढ़ में प्रचलित पंथी लोकगीतों का सांस्कृतिक अनुशीलन (शोध ग्रंथ), सन 1995, पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ –171।
15. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मासिक पत्रिका), वर्ष –7, अंक–7, जुलाई 2020, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन रायपुर, पृष्ठ – 18।
16. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सत्यालोक पत्रिका, अंक– 10, फरवरी 2010, सत्यलोक पत्रिका परिवार, गिरौदपुरी धाम, रायपुर, पृष्ठ –35।
17. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मासिक पत्रिका), वर्ष –2, अंक–7, जुलाई 2015, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन रायपुर, पृष्ठ – 30।
18. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सत्यालोक पत्रिका, अंक– 10, फरवरी 2010, सत्यलोक पत्रिका परिवार गिरौदपुरी धाम, रायपुर, पृष्ठ –34।
19. साहू, गायत्री– छत्तीसगढ़ में प्रचलित पंथी लोकगीतों का सांस्कृतिक अनुशीलन (शोध ग्रंथ), सन 1995, पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ –175।
20. जोंगलेकर, कमल नारायण – संत गुरु घासीदास एवं सतनाम पंथ का ऐतिहासिक अध्ययन, (शोध ग्रंथ), सन 2000, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ– 176।
21. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मासिक पत्रिका), वर्ष –2, अंक–7, जुलाई 2015, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन रायपुर, पृष्ठ – 30।
22. सोनकर, प्रो० पी० डी०, संपादक, जय सतनाम पत्रिका (मासिक), वर्ष –1, अंक–5, जुलाई 2009, जय स्तंभ सादा क्यों ही क्यों, पृष्ठ–1।
23. साहू, गायत्री– छत्तीसगढ़ में प्रचलित पंथी लोकगीतों का सांस्कृतिक अनुशीलन (शोध ग्रंथ), 1995, पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ 176, 183।
24. जोशी, डॉ० दादू लाल, गुरु घासीदास का सतनाम आंदोलन एक जनक्रांति, वैभव प्रकाशन, रायपुर, 2015, पृष्ठ – 35।
25. साहू, गायत्री– छत्तीसगढ़ में प्रचलित पंथी लोकगीतों का सांस्कृतिक अनुशीलन (शोध ग्रंथ), सन 1995, पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ –172।
26. कोशले, एल० एल० संरक्षक, सतनाम संदेश (मा पत्रिका), अंक–3, मार्च 2014, प्रगतिशील सतनामी समाज, गुरु घासीदास सांस्कृतिक भवन रायपुर, पृ , 8।
27. राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा सामुदायिक भवन भूमि पूजन में उद्बोधन के कुछ अंश – 6 नवंबर 2017।

कृति–चर्चा

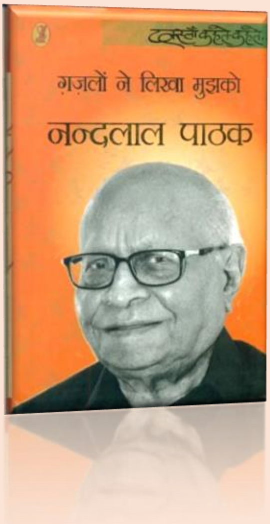


# गजलों ने लिखा मुझको : नंदलाल पाठक

**डॉ. उमेश चंद्र शुक्ल**
अध्यक्ष, हिंदी–विभाग, महर्षि दयानंद कॉलेज, परेल मुंबई–12

'धूप की छाँह' 1975 से लेकर 'गजलों ने लिखा मुझको' 2017 तक की लम्बी काव्य यात्रा में पाठक जी के यहाँ कविता, गीत एवं गजल के साँचे में मुक्त उच्छल भावनाओं की मुक्त तरंगे है, हिमनद–सी शीतलता और कलकल करते उद्दयाम झरने है तो दूसरी विचारों की मजबूत कड़ी है। राजनैतिक चेतना है,राजनैतिक विसंगतियों पर करारा प्रहार है। लगभग चार दशकों की काव्य यात्रा में पाठक जी का हिन्दी गजल गो पुष्ट हुआ हैद्यइनके यहाँ गजल न तो गजाला की चीख है और न ही आशिक और माशूक के बीच शिकवों–शिकायतों से भरी

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

गुफ्तगू है, न तो यह रागदरबारी है और न ही केवक तसव्वुफ की उड़ान–

*सपने बड़े मीठे हैं वादे बड़े मोहक है,*
*मिसरी घुली रहती है सरकार की बातों में।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–58**

नंदलाल पाठक के यहाँ गजल सम–सामयिक परिवेश तथा मानव जीवन के कटु सत्यों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। जीवन की खुरदरी जमीन पर यथार्थ का अंकन मात्र नहीं समय से मुठभेड़ है समाधान के लिए जद्दोजहद है। पाठक जी के पास 'भाषा की लोकधर्मिता' के साथ–साथ श्अभिव्यक्ति की प्रखरताश है।परंपरा को नई सोच, नई दृष्टि, नए धरातल प्रदान कर, सुदृढ़ बनाते हुए हिन्दी गजल साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण प्रदेय है। जिंदगी के प्रति गजब की जिजीविषा है ––

*जिंदगी का अर्थ है पक्के इरादों का सफर,*
*कट गये जब पाँव तब बैसाखियाँ चलती रहीं।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–22**

'गजलों ने लिखा मुझको' संग्रह के एक–एक शब्द में चाकू जैसी धार है। यह रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, सामाजिक विसंगतियों, विकृतियों, गन्दी राजनीतिक चालों के खिलाफ आक्रोश है, विद्रोह है, आक्रामकता है, बारुद जैसा विस्फोटक है, जो तन मन को आन्दोलित करता चलता है। तेवरी गुस्सैल, आक्रामक, जुझारू, संघर्षशील अवश्य है, लेकिन वह अनुशासन प्रिय है। ऐसा कोई रास्ता अख्तियार नहीं करते, जो गलत हो, भ्रामक हो, विध्वंसक हो–

*आदर्शों की चिता जल रही युग का क्रन्दन देख रहा हूँ,*
*धधक रही है अंतर ज्वाला मानस मंथन देख रहा हूँ।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–64**

पाठक जी ने काफी करीब से लोकजीवन के यथार्थ को देखा है। तो दूसरी तरफ लगभग पाँच दशकों के मुंबई महानगर प्रवास के दौरान महानगरीय जीवन,महानगरीय चरित्रों के साथ जीवन जिया हैद्यएक तरफ गहन, गझिन, गवई मानवीय संवेदना और भारतीयता और भारतीय संस्कृति तो दूसरी तरफ महानगरीय जीवन, शुष्क संवेदना, अर्थ पक्ष की प्रधानता, रिश्तों में मिलावट, वस्तुओं की बात करना तो जैसे बेमाने है। वे अपनी गजलों में निरीक्षण और प्रमाणिकता

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

दोनों पर बल देते हैं। अपनी अनुभूतियों, धारणात्मक मूल्यों, दार्शनिक स्थापनाओं और उद्बोधनों को साथ लेकर चलते हैं।

*मेरे, तेरे, तमाम दुनियाँ के,*
*दिल की आवाज है गजल मेरी।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–17**

'धूप की छाँह' और 'गजलों ने लिखा मुझको' गजल के आईने में हम अपने समय से संवाद करते गजलकार के व्यक्तित्व और सरोकार को अच्छी तरह समझ सकते है। जीवन के सरोकार नन्दलाल पाठक को हमेशा आंदोलित किए रहता है।जीवन की दुर्धर जमीन पर समय की दराती से कटते आम आदमी की भूख–प्यास, जीवन संघर्ष, असुरक्षा का भाव, आक्रांत मनुष्य की पीड़ा का ऐसा आख्यान गजलों ने लिखा मुझको' है।'गजल गों की बेबाक अभिव्यक्ति है। अपने सरोकारों के प्रति सजग गजल गो पाठक जी का घोषणा पत्र है–

*आने वाला है इन्कलाब जो कल,*
*उसका आगाज है गजल मेरी।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–17**

लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर तानाशाही, फासीवादी व्यवस्था से जन आक्रांत है। व्यवस्था के नाम पर अव्यवस्था फल–फूल रही है। जन सेवक अर्थात् राजनेता और प्रशासक अर्थात् अधिकारी निरंकुश, जनद्रोही हो गये हैं। समाजवाद के नाम पर अच्छी–खासी समाजवादी घोषणाओं के बावजूद आजादी के 70 सालों में समाजवाद न आ सका, आम जन के घर तक खुशहाली अपने समय का सबसे बड़ा झूठ है। अब आजादी का अर्थ सिर्फ नौकरशाहों, भ्रष्टाचारियों, नेताओं के टुच्चे भाषण देने, जनता का पैसा डकारने, जन विरोधी विधेयक लाने, साम्प्रदायिक दंगे भड़काने, पुलिस द्वारा महिलाओं की इज्जत लूटने–लुटवाने, लाठीचार्ज कराने, तस्करी करने, गरीबी उन्मूलन के नारे देकर पूंजीवाद को बढ़ावा देने, कालाधन कमाने और कमवाने की आजादी बनकर रह गया, जिससे न सिर्फ सामाजिक मूल्य टूटे हैं, बल्कि वीभत्स–घिनौने होते चले गये।स्वार्थों के कुंड में स्वाहा होते चले गये। नेता–अपराधी–अधिकारी की गलबहियाँ चल रही है–

*हमें रसातल तक पहुँचाने की मिलजुल कर तैयारी है,*
*नेता अपराधी दोनों का प्रेमालिंगन देख रहा हूँ।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–64**

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

मौजूदा माहौल में आदमी, आदमी न रहकर शैतान बन गया। यह शहर के मशीनीकृत होने की सूचना मात्र नहीं, बल्कि संवेदनहीनता का दस्तावेजीकरण करने का प्रयास है। अपने समय को रोशनाई से इतिहास के पन्नों में संजोने की जिद है की कैसे हंसता–खेलता अतिसंवेदनशील मनुष्य संवेदनहीनता के दौर से गुजर रहा है। जहर के घूट की मानिंद क्षण–प्रतिक्षण बस जिए जा रहा है। जीवन जीने का कोई महत उद्देश्य है या मात्र भूख के पीछे की अंधी दौड़–

*जंगल में सियासत के देखो जिस ओर उधर हैं नरभक्षी,*
*इंसान नहीं कर सकता वह नेता को जो करना पड़ता है।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–25**

गजलकार खम ठोककर अपने समय को चुनौती देता है। व्यवस्था के सामने आम अवाम की आवाज बुलंद करता है। राजनैतिक अंधता के इस दौर में खुला आवाहन करता है की वर्तमान परिवेश विषाक्त होता जा रहा है। अब सच को सच की तरह न देख कर खास किस्म के चश्में से देखा जा रहा है। जीवन में छीजते मूल्यों की पड़ताल है और जीवन संजोने की जिद भी है। गजल के फर्म में अपने समय तथा परिवेश से गुफ्तगू है, भूख–प्यास से बिलबिलाती, तड़पती जनता, सत्ता के नशे में अंधे रहबर से––

*हवन की आग में आहुति बनेंगे आज के बिषधर,*
*जलानी हो कई भी आग तो ईंधन जरूरी है।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–28**

पाठक जी राजनैतिक दोगलेपन, टूटते मूल्यों सिद्धांतों की जबरजस्त खोज–खबर लेते है द्यसिद्धांतों की जगह येन–केन प्रकारेण सत्ता पा लेना राजनीतिज्ञों का राजनैतिक, चरित्र मूल्य हो चुका है। राजनैतिक विभीषणों के चेहरें से नकाब उतारने के लिए जद्दोजहद करते दिखाई पड़ते है। राजनैतिक अवमूल्यन, दलबदल, षड्यंत्रों का बोलबाला है। येन–केन प्रकारेण सत्ता हस्तगत करना राजनैतिक चरित्र बन गया है–

*जो कुनबा तोड़कर अपना हमारे घर चला आये,*
*हमें हर एक कुनबे से विभीषण की जरूरत है।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–29**

लोकतंत्र के मंदिर में अवसरवाद का फलना–फूलना छप्पन दलों के गठजोड़ से सत्ता पर काबिज सत्ताधीशों के छल–छद्‌म, प्रपंच पर गहरा प्रहार किया है। अब जन सेवक, जन नायक की जगह

कुशल तोड़–जोड़ करने वाला कुशल प्रबंधक बहुमत दिखाकर सत्ता पर काबिज हो जाता है। अब सेवाधर्म की जगह लोकतंत्र में प्रबन्धतन्त्र धर्म प्रधान होता चला जा रहा है। अपने समय को आईना दिखाते है–

*भले ही अल्पमत में हैं हमें बहुमत दिखाना है,*
*ये संसद है,यहाँ केवल प्रबंधन की जरूरत है।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–29**

सत्ता के लिए विविध विचारधाराओं के लोगों का एक मंच पर केवल सत्ता सुख के लिए आना लोकतंत्र और भारतीय अस्मिता और अवाम दोनों के लिए घातक है। नारे, सौदेबाजी, गुणा–गणित के बाद मलाईदार मंत्रालयों पर काबिज होने के बाद जनहित को तिलांजलि देकर धनार्जन को राजनीति का परमलक्ष्य मानना की पता नहीं सत्ता फिर मिले या नहीं कोई बात नहीं जितना लूट सकते है लूट ले, घोटालों का दौर शुरू हो जाता है पाठक जी का गजल गों अपने समय से मुठभेड़ करता चलता है। कलम विद्रोह करती है, कलमकार के सरोकार मुखर है। वह सत्ता को आईना दिखाता है–

*दलाली कोयले की हाथ काले कर गयी, पर अब,*
*सुना है मुँह हुआ काला है दर्पण की जरूरत है।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–30**

राजनीति में पूँजीवादी शोषक व्यवस्था ने जिस तरह अपनी जड़ें जमायी हैं, गलत और भ्रष्ट मूल्यों ने आदमी के चरित्र में जिस तरह घुसपैंठ की है। धर्म, सुधार, योजना–परियोजना के नाम पर जिस तरह एक धोखे भरा खेल खेला गया है। वैचारिक उग्रता भर गयी है, जिसमें इस कुव्यवस्था के खिलाफ कुछ कर गुजरने की ललक है। पाठक जी की गजल दुष्यंत कुमार की परम्परा को आगे ले जाने का काम करती है। वही तपिस, वही धार, वही तेवर–

*माहौल में पहले तो नहीं इतनी घुटन थी,*
*ठिठकी हैं हवाएँ तो कहो आँधियाँ चले।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–40**

इस बात का इतिहास साक्षी है की कविता का जब भी शोषक, जनविरोधी शक्तियों के खिलाफ हथियार के तौर पर इस्तेमाल हुआ है, भाषा में बारूद भरी गयी है तो उससे आदमखोरों के भीतर गुर्राता हुआ भेडियापन शब्दों की गोलियों से छलनी होकर सरे–आम दम तोड़ने लगा है। पाठक जी के यहाँ भी यहीं आग है। यह मात्र शेर

नहीं समय से मुठभेड़ करते आम आवाम के प्रति जागरूक कलमकार के सरोकार है। जो ऐसा करने के लिए बल देते है। भयावह परिवेश के आगोश में जब मानवीय संवदेना छटपटाती है। कलम फुफकार उठती है, एक तरफ व्यवस्था की विसंगति को उजागर करना तो दूसरी तरफ व्यवस्था के षड्यंत्रों से अवाम को सावधान करना द्ययह शेर दूर तक मार करता है। आजादी के बाद फैले छल–छद्म का लेखा–जोखा इन दो पंक्तियों में देखा जा सकता है। क्या सत्ताधीश तो क्या विपक्ष। किसी ने भी अपनी भूमिका का निर्वाह इमानदारी से नहीं किया है। सबने जड़ता का सिंचन किया–

*विष की, अमृत की, अब कोई पहचान नहीं है,*
*अभिशाप से निकला है जो, वरदान नहीं है।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–44**

साहित्य का मुख्य स्वर मूलतः प्रतिरोध ही होता है। लेकिन यह भी गौर करने वाली बात है कि साहित्य का विरोध मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता। प्रतिरोध में जीवन की बेहतरी की माँग रहती है तो दूसरी तरफ रचनात्मकता की माँग रहती है। दुखों से मोचन कैसे हो, जीवन में शिवत्व की स्थापन मूल उद्देश्य होता है। पाठक जी को भी इन्हीं मूल्यों की तलाश है––

*बोझिल हैं सभी दुःख से तो कुछ सुख से हैं बोझिल,*
*ऐसा नहीं कोई जो परेशान नहीं है।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–44**

मनुष्य को उसके लक्ष्य के लिए कर्म करने को प्रेरित करती है, जिसे वह प्राप्त नहीं कर सका पर जिसकी कल्पना, जिसका सपना वर्तमान की वास्तविकता में कहीं अधिक मूल्यवान है। आज राजनीतिक और सामाजिक परिवेश में फैले पूंजीवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, राजनीति का अपराधीकरण और नये ध्रुवीकरण के कारण हमारे देश का प्रजातांत्रिक ढांचा चरमरा गया है ––

हमने आजादी का युद्ध लड़ा था, कौन यकीन करेगा,
सूख गया आँखों का पानी बुझी–बुझी अंतर ज्वाला।।

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–45**

भारतीयता और भारतीय संस्कृति पर घिरे काले बादलों से मुक्ति कैसे मिले द्यसवा सौ करोड़ अवाम के भाग्य से खेलने वालों के जहर के दन्त उखाड़ फेकने का आवाहन करते है। सम्पूर्ण प्रक्षालन से पूर्व पूरा खाका खीचकर रख देते है साफतौर पर सचेत करते

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

चलते है की यह क्रमशः सुधार का दौर नहीं बल्कि यह क्रांति का दौर है। आमूल व्यवस्था परिवर्तन कलमकार का एकमात्र लक्ष्य लक्षित होता है। सम्पूर्ण तालाब का पानी बदलने के बाद ही विष कम हो सकता है। जन–जन का आवाहन करते है–

*या तो उनका जहर छीन लो या उनके विषदंत उखाड़ों,*
*अपने आस्तीन में कितने साँपों को अब तक पाला।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–46**

पाठक जी का गजलकार अपने समय की दराती से कटते आम आदमी की पीड़ा, भूख, प्यास को बयां करने की प्रक्रिया में गजल गो, नफासत, नजाकत, हाला, प्याला, साकी, सुरा से दूर जीवन की तपन, जीवन संघर्ष को शब्द देकर मात्र गजल पढ़कर मनोरंजन करने की जगह विसंगतियों से दो–दो हाथ करने का हौसला रखता है–

*जो भीतर हैं वे बाहर वालों को घुसने नहीं देते,*
*ये गन्दी बात है मंदिर में ऐसी गन्दगी होना।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–19**

राजनीति की विद्रूपताओं पर करारा प्रहार है। अयोध्या, काशी, मथुरा तथा हिंदुत्व की हुंकार के बीच बिखरती सामाजिक समरसता के साथ मुठ्ठी बाँधे खड़े है। धार्मिक उन्माद के कारण घुटते वातावरण में भोपाल गैस त्रासदी छाने लगी है। धार्मिक उन्माद के दौर से गुजर रहे देश को सावधान करते है। असंतोष का सिंचन विपक्ष का धर्म बन गया है। इसी टूल्स के सहारे सत्ता की सीढियाँ चड़ना चाहते है तो सत्ता दमन–दलन जुगाड़ के सहारे सत्ता में बनी रहना चाहती है –

*समूचे देश का दम घुट रहा है,*
*समूचा देश है भोपाल देखो।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–52**

राजनेताओं के द्वारा दिखाए गए स्वप्न महल, बड़े–बड़े वायदे, भूमी पूजन,चिकनी चुपड़ी बातों के सहारे मतदाताओं को अपने खेमे में खडा करने की जद्दोजहद, सफलता और सफलता मिलाने के बाद स्वप्न महल खड़ा करने वालों से धोखा मिलना स्थाई भाव चुका है। पाठक जी इस बात का शिनाख्त करते चलते है –

*सपनों की नुमाइश खूब रही, वादों के पुलिंदे क्या कहने*
*बातों में जो उनकी रस है कहाँ कोकिल की सुरीली तानों में।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–53**

अब नेतृत्व अवाम के बीच से नहीं बल्कि विज्ञापन के सहारे खड़े किये जा रहे है। जितनी अच्छी मार्केटिंग उतना अच्छा, बड़ा

महान नेता और नेतृत्व विधिवत इवेंट मैनेजमेंट के सहारे सत्ता के शिखर पर स्थापित हुआ जा सकता है। हाईटेक चुनाव प्रक्रिया, अरबों का ठेका मात्र इसके लिए की इवेंट मैनेजर सत्ता की वैतरणी के रास्तों में आने वाले सभी अवरोधकों को दूर करा देगा। चरित्र, मूल्य, सेवा, जिम्मेदारी, ईमानदारी और प्रशासनिक अनुभव सारे गुण कुछ सप्ताह में अर्जित किए जा सकते है। अब लौह पुरुष नहीं बल्कि लता पुरुष सत्ता के शिखर पर खड़े दिखाई पड़ रहे है। सच्चा जन सेवक दूर कही रोता–सिसकता दिखाई पड़ेगा। जन की हत्या देखी नहीं जाती और जन के नाम पर अत्याचार सहन नहीं होते–

*नेता उभर रहा है अखबार के सहारे,*
*चढ़ती है लता जैसे दीवार के सहारे।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–106**

लोकतान्त्रिक व्यवस्था में कार्यपालिका, व्यवस्थापिका की असफलता के बाद नजर न्यायपालिका की ओर जाती है। अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करने में लोकतंत्र का तीसरा स्तम्भ भी असमर्थ है। संवैधानिक व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है, संविधान न्याय देने में असमर्थ अनुपयुक्त सिद्ध होने लगा है। चारों तरफ अफरा–तफरी का आलम है। न्याय की देवी के इर्द–गिर्द गंदगी का अम्बार है। भयानक निराशा का दौर है अब तो लगता है दिन इतने विपरीत आने वाले है की अपराध करना न्याय सांगत होगा। न्यायपालिका की विफलता ने लोकतंत्र में न्याय की आशा करने वाले करोड़ों लोगों के मन में भय का संचार किया है–

*जहाँ आज न्यायालय हैं कल वहा स्वच्छ शौचालय होंगे,*
*ले लो खुद कानून हाथ में, ऐसा तुम्हें विधान मिलेगा।।*

**गजलों ने लिखा मुझको, पृष्ठ–87**

भविष्य के प्रति आस्था नंदलाल पाठक के गजल की एक विशेषता है। जीवन और जगत के बीच घटने वाली छोटी–बड़ी घटनाओं के बीच खुश रहने का और उज्जवल भविष्य के सपने देखने का प्रयास भी मिलता है। संसार की समस्त रचनाशीलता जिस समग्र जीवन की तलाश कर रही है, और चुनौती रूप में उसके सामने खड़ी हो रही है। गजल गो को अपनी कलम पर पूरा विश्वास है,समय बदलेगा, परिस्थितियाँ जीवन के अनुकूल होंगी। जीवन रचना की संकल्पना को पूर्णत्व प्राप्त होगा।

कृति–चर्चा

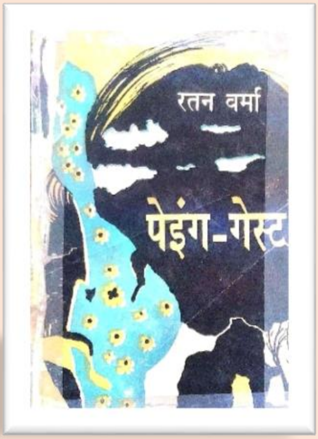


# पेइंग-गेस्ट : मनोवैज्ञानिक चिंतन से लबरेज कथा-संग्रह

**डॉ. विकास कुमार**
कोष-अधीक्षक-सह-विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
रामेश्वर चेथरू महाविद्यालय, सकरा, मुजफ्फरपुर, बिहार–843105
vikash346@gmail.com

किसी भी कहानी या उपन्यास की सार्थकता की पहली शर्त यह होती है कि भाषा, शिल्प और प्रवाह के स्तर पर वह खुद को पढ़वा ले जाने में समर्थ हो। इस कसौटी पर रतन वर्मा का कहानी संग्रह 'पेइंग गेस्ट' अपनी प्रत्येक कहानी के साथ सफल संग्रह है। कहानियों को पढ़ते हुए जो पहला प्रभाव मुझ पर पड़ा, वह यह कि रतन वर्मा मानव मनोविज्ञान को चित्रित करने में सिद्धहस्त हैं। संग्रह की पहली ही कहानी 'पेइंग गेस्ट' मेरी इस मान्यता को स्थापित करती हुई एक

सफल कहानी है। मि० गौरव, जो भारत से अपनी नौकरी के सिलसिले में विदेश पहुंच जाता है और कार्यभार ग्रहण करने के बाद अपने लिए किराये के घर की तलाश शुरू करता है, उसे अपने कुलिग सेमुअल की सिफारिश से मैडम मारीडोना के यहाँ 'पेइंग गेस्ट' के रूप में घर उपलब्ध हो जाता है। लेकिन वहाँ रहते हुए भी अपने देश का एक–एक क्षण उसे याद आता रहता है। उस मनःस्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कथाकार ने अत्यंत ही सूक्ष्मता से किया है।

प्रारंभिक दिनों में तो वहाँ के परिवेश में एडजस्ट करना उसके लिए कठिन होता है, लेकिन जैसे–जैसे बुजुर्ग महिला मारीडोना का पुत्रवत स्नेह उसे प्राप्त होने लगता है, उसे वहाँ अपने घर जैसा माहौल महसूस होने लगता है।

मारीडोना पति से परित्यक्ता महिला है, जिसके दो बेटे हैं। दोनों दो विभिन्न देशों में रहते हैं। दोनों ही लगभग गौरव की ही उम्र के हैं। बल्कि एक–एक, दो–दो वर्ष बड़े ही। कई कई वर्षों के अंतराल पर दोनों का अपनी माँ के पास एक–दो दिनों के लिए उनका अपनी माँ के पास आना–जाना लगा रहता है। हालांकि गौरव को वह अपने पुत्र के जैसा ही स्नेह देती हैं, बावजूद इसके, एक चर्चा के दौरान जब अपने पुत्रों के वियोग में विचलित नजर आती हैं वह, और तब गौरव बोलता है कि वह भी तो उनके पुत्र के समान ही है, तब वह विक्षिप्तनुमा बोल पड़ती हैं, "नो–नो, नो बडी कैन टेक द प्लेस ऑफ माई सन्स।"

यहाँ लेखक ने संभवतः इस मनोविज्ञान को स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि पुत्र भले हीं अपनी माँ के प्रति संवेदनहीन बना रहे, पर माँ की संवेदना में उसके पुत्र की जगह कोई और नहीं ले सकता। इस एहसास के बावजूद मारीडोना के व्यवहार में यह परिलक्षित अवश्य होता है कि गौरव के प्रति उसका मन स्नेह से लबालब है। जब गौरव को कार्यालय से लौटने में कभी विलम्ब हो जाता है, तब वह बाहर के बरामदे की सीढ़ियों पर बैठकर तब तक प्रतीक्षा करती रहती हैं, जब तक कि वह नजर नहीं आ जाता।

प्रेम का दूसरा पक्ष और उसके मनोविज्ञान का निर्वाह भी कथाकार ने बखूबी किया है। वह दूसरा पक्ष है स्त्री–पुरूष प्रेम। गौरव अपनी कुलिग रोजी के प्रेमपाश में आबद्ध हो जाता है। कुछ इस तरह कि रोजी के साथ समय के छोटे–से अंतराल की जुदायी भी वह

बरदाश्त नहीं कर पाता। ऐसे में रोजी के साथ घूमने–फिरने के चक्कर में शाम को वह अक्सर देर से लौटने लगता है। जब भी वह लौटता है, मैडम मारीडोना को अपने लिए बाहर की सीढ़ियों पर बैठी, प्रतीक्षा करते पाता है। लेकिन वह मैडम मारीडोना के मातृवात्सल्य को शायद नहीं समझा पाता। या फिर समझना चाहकर भी रोजी के प्रेम के वशीभूत तबज्जो नहीं दे पाता।

रोजी की माँ को अपनी पुत्री के लिए गौरव पसंद तो है, पर चूंकि वह रोजी के साथ घर में अकेली रहती है तथा रोजी पर आश्रित भी है, इसलिए वह चाहती है कि गौरव उसके साथ ही रहे। गौरव के लिए द्विविधा के हालात पैदा हो जाते हैं। मैडम मारीडोना के स्नेह को भी वह समझता है, जो रोजी के प्रेम की तुलना में कहीं से कमतर नहीं है। बावजूद इसके वह युवामन की चाहत की कसौटी पर मातृस्नेह को कमतर आकते हुए मेडम मारीडोना के स्नेह को तिलांजलि देने की ठान लेता है। वह उनसे बहाना बनाता है कि कुछ दिनों के लिए वह अपने देश जा रहा है और उस बहाने के साथ वह रोजी के घर में जाकर रहने लगता है। उसके मन से धीरे–धीरे मैडम मारीडोना की याद भी विलुप्त होने लगती है। लेकिन एक दिन सैमुअल उसे धिक्कारता है कि मैडम मारीडोना को उसने धोखा दिया है, तब वह मारीडोना से मिलकर उन्हें सब सच्–सच् बता देने की नीयत से रोजी के साथ एक कार से उनसे मिलने जाता है। लेकिन जब कार मारीडोना के घर के पास पहुंचती है, तब वह देखता है कि मैडम पूर्व की तरह ही सीढ़ियों पर बैठी शायद उसी की प्रतीक्षा कर रही हैं। यह देखकर उसका मन पसीज उठता है। उसकी इच्छा होती है कि दौड़कर वह उनके गले लग जाय। पर वैसा वह कर नहीं पाता। क्योंकि वह जानता है कि शायद सच्चाई वह बरदास्त न कर पायें और अंत में इस सोच के साथ वह वापस लौट जाता है कि आदमी उम्मीद के सहारे तो पूरा जीवन काट सकता है, लेकिन अगर उम्मीद टूट जाये तो शायद वह जी न सके।

इस प्रकार इस कहानी के माध्यम से प्रेम और मातृवात्सल्य के मनोविज्ञान का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है, रतन वर्मा ने 'पेइंग गेस्ट' कहानी में।

कोई सधा हुआ कथाकार वही माना जा सकता है, जो परकाया प्रवेश में निपुण हो। परकाया प्रवेश, अर्थात् कथाकार जिस चरित्र पर लिख रहा हो, उसका उस चरित्र की काया में प्रवेश कर जाना। यानी यदि वह किसी स्त्री पर लिख रहा है, तो पाठकों को ऐसा महसूस हो कि लेखक स्वयं को स्त्री के अनुरूप ढाल कर लेखन कर रहा है। वैसे ही यदि लेखक किसी बच्चे, बूढ़े, अपाहिज या फिर प्रकृति पर ही क्यों न लिख रहा हो, जब तक वह अपने चिंतन में उन पात्रों को खुद में जी न रहा हो, उसकी रचना में वह स्वाभाविकता नहीं आ सकती, जिसकी अपेक्षा पाठकों को होती है। इस दृष्टि से रतन वर्मा अपनी प्रत्येक कहानियों में अपने पात्रों तथा परिवेश को खुद में जीते हुए प्रतीत होते हैं। उनकी 'मुठ्ठी भर हवा' कहानी परकाया प्रवेश की कसौटी पर शत–प्रतिशत खरी उतरती है। इस लम्बी कहानी को पढ़ते हुए ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि इस कथा को किसी पुरुष लेखक ने लिखा है।

कात्यायिनी ने अपने विवाह के पूर्व भविष्य के अनेक सारे इन्द्रधनुषी सपने अपनी आंखों में बसा रखा होता है। विवाहोपरांत जिस सुष्मित से उसकी शादी होती है, वह शादी के कुछ दिनों बाद तक तो हर दृष्टि से उसके सपने का राजकुमार सिद्ध होता है– चाहे सौंदर्य के नजरिये से हो, दाम्पत्य प्रेम के नजरिये से हो अथवा धन–दौलत की कसौटी की दृष्टि से गाड़ी–घोड़ा आलीशान मकान गहने–जेवर यहाँ तक कि कात्यायिनी के निजी बैंक खाते में भी पैसे की कोई कमी नहीं रहने देता है वह और कात्यायिनी को जितने दाम्पत्य सुख की जरूरत है, उससे कहीं अधिक ही उसपर लुटाता रहता है। लेकिन कात्यायिनी के लिए वह सुख, तमाम धन–सम्पत्ति एवं ऐशो–आराम की सुविधा के बावजूद घनघोर बादलों के बीच से यदाकदा चांद की छायानुमा, चांद के झांक जाने के समान ही होता है। सुष्मित एक बड़ा व्यवसायी है। शादी के बाद कुछ दिनों तक तो वह कात्यायिनी को हर वह दाम्पत्य सुख उपलब्ध करवाता रहता है, मगर उसके बाद जैसे किसी शराबी का नशा टूट गया हो और वह सामान्य अवस्था में आ जाता है, ठीक वैसे ही वह अपने व्यवसायिक कार्यों में इस हद तक मशगूल हो जाता है कि अब कात्यायिनी के लिए उसके पास बिल्कुल भी समय नहीं होता। अगर कभी थोड़ी–फुरसत मिलती भी है उसे, तो वह थकान से इतना चूर होता

है कि कात्यायिनी जिस मुट्ठी भर हवा के लिए पलक पांवरे बिछाये सुष्मित के लिए प्रतिक्षारत रहती है, उसका एक कतरा तक दे पाने में सुष्मित असमर्थ सिद्ध होता है।

कात्यायिनी की अतृप्त मनःस्थिति उसे हर क्षण सोने के पिंजड़े में कैद किसी खुबसूरत चिड़िया के समान बनी रहती है, जिसे खुली हवा में स्वछंद उड़ान की पीड़ा हर क्षण सताती रहती है और जिसकी शिकायत भी वह अक्सर सुष्मित से करती रहती है। कई बार तो वह शिकायत झगड़े का रूप भी ले लेती है, पर सुष्मित अपने व्यवसाय में तरक्की की दिशा में इस कदर मशगूल होता है कि अपनी पत्नी की भावनाओं की भी परवाह नहीं करता। लेकिन कभी–कभी घनघोर उमस के बाद शीतल फुहारों वाली हवा का आगमन, झुलसती देह को सहलाकर उसे तृप्त कर जाने का करिश्मा कर जाती है। ऐसा ही कात्यायिनी के साथ भी होता है –

सौरभ, जो सुष्मित का घनिष्ट दोस्त है, उसका तबादला सुष्मित के ही शहर में हो जाता है। उसे रहने के लिए किराये के घर की जरूरत होती है, जिसकी चर्चा वह अपने दोस्त से करता है। इसपर सुष्मित उसे झिड़कते हुए कहता है कि वह कहीं कोई दूसरा घर नहीं लेगा, बल्कि उसके ही घर में रहेगा। दोस्त की भावनाओं की कद्र करते हुए सौरभ सुष्मित के घर में ही रहने लगता है। अब जब कभी भी कात्यायिनी को घूमने–फिरने, शौपिंग वगैरह करने की जरूरत होती है और वह अपने पति सुष्मित से साथ चलने का आग्रह करती है, तब सुष्मित सहजता से उसे कहता है, "अरे, तो सौरभ है न! उसके साथ चली जाओ। मुझे तो सांस लेने की भी फुरसत नहीं है।

इस प्रकार धीरे–धीरे वह बाहर की अपनी किसी भी आवश्यकता के लिए सौरभ का साथ अनिवार्य बना लेती है। अब कुछ खरीदारी करनी हो, मूवी जाना हो, पार्क में सैर करना हो, या फिर घर के एकांत में बातचीत करनी हो, तो सुष्मित से दोस्ती का फर्ज निभाते हुए सौरभ कात्यायिनी का हर तरह से साथ निभाता है। कात्यायिनी धीरे–धीरे अपनी खो–सी गयी मुट्ठी भर हवा को अब सौरभ में ही तलाशने लगती है और एक दिन परिस्थिति और वातावरण कात्यायिनी के इतने अनुकूल हो जाते हैं कि सौरभ से अपनी मुट्ठी भर हवा वह हासिल कर ही लेती है।

स्त्री अतृप्त देह और मन के मनोविज्ञान को रतन वर्मा ने इस जीवन्तता के साथ प्रस्तुत किया है, जैसे कहानी रतन वर्मा नहीं, बल्कि स्वयं उस कथा की नायिका कात्यायिनी ने ही लिखी हो।

'चलो पापा, घर चलें' इस संग्रह की तीसरी कहानी है। शीर्षक से ऐसा प्रतीत होता है कि यह कहानी पिता–पुत्र या पिता–पुत्री के संबंधों को लेकर लिखी गयी है। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। यह कहानी स्त्री और पुरुष के संबंधों पर आधारित एक ऐसी रचना है, जिसमें प्रौढ सोच और युवा सोच में प्रेम संवेदना की पड़ताल की गयी है। अनुराधा एक ऐसी स्त्री है, जो अपने किशोरावस्था में संस्कार नामक एक युवक से प्रेम करने लगती है, लेकिन उसी उम्र में उसकी शादी कहीं अन्यत्र हो जाती है और वह कम उम्र में ही गुड्डी नामक एक पुत्री की माँ बन जाती है। दुर्भाग्यवश जब गुड्डी गोद में ही होती है, तब एक दुर्घटना में उसके पिता की मृत्यु हो जाती है। भरण–पोषण के लिए अनुराधा को नौकरी करनी पड़ती हैं। समय के अंतराल में गुड्डी किशोरावस्था में पहुँच जाती है और अनुराधा की भी उम्र ऐसी ही होती है जिसमें उसके हृदय में कोई सतरंगी सपना उछाल मारने की स्थिति में न हो। इत्तेफाक से उसका पूर्व प्रेमी संस्कार पुनः उसके जीवन में आ जाता है और दोनों का प्रेम पूरी सात्विकता के साथ परवान चढ़ने लगता है। संस्कार जो अपनी उस उम्र में भी काफी आकर्षक युवक नजर आता है, उसका अनुराधा के घर में आना–जाना भी शुरू हो जाता है। देखते ही देखते वह परिवार के सदस्य का स्थान प्राप्त कर लेता है।

उसका आगमन अनुराधा के लिए तो सुखद होता ही है, लेकिन गुड्डी भी उसके आकर्षक व्यक्तित्व के आकर्षण से खुद को मुक्त नहीं रख पाती। वह उसे अंकल की जगह नाम से पुकारती है। संस्कार को वह महज अपनी विधवा माँ का कुलिग और दोस्त मानती है। उसे बिल्कुल भी इसका गुमान नहीं रहता है कि उसकी विधवा माँ संस्कार से या किसी अन्य पुरुष से प्रेम भी कर सकती है। अक्सर जब वह संस्कार को उसके नाम से संबोधित करती है और अनुराधा उसे टोकती है कि संस्कार को उसके द्वारा अंकल संबोधित किया जाना चाहिए, तब माँ को ही झिड़क देती है, 'आप भी कमाल करती है मम्मी, संस्कार जी इतने उम्रदराज तो नहीं दिखते कि उन्हें अंकल पुकारा जाय.......'

वस्तुतः गुड्डी संस्कार से प्यारा करने लगती है। इतना ही नहीं, अपने व्यवहार और हाव–भाव से वह संस्कार के समक्ष अपने प्रेम का प्रदर्शन भी करने लगती है। लेकिन संस्कार उसके उस व्यवहार को महज एक पुत्री के व्यवहार के नजरिये से महसूस करता है।

अंततः एक दिन गुड्डी पूरी तरह मन बना लेती है कि वह पूरी मुखरता के साथ संस्कार के समक्ष यह जाहिर कर देगी कि वह उससे प्रेम करती है। लेकिन तभी वह अपनी माँ और संस्कार के बीच हो रहे वार्तालाप को सुन लेती है और समझ जाती है कि संस्कार और माँ आपस में प्रेम करते हैं और शादी वे सिर्फ इसलिए नहीं कर पा रहे हैं कि गुड्डी उन दोनों के बीच बाधक है। फिर तो अचानक ही उसकी सोच परिवर्तित होती है और उसके प्रति संस्कार का स्नेह उसे पिता के स्नेह जैसा प्रतीत होने लगता है। मन ही मन वह खुद को धिक्कारती है तथा संस्कार को, सिनेमा दिखवाने का बहाना करके एक पार्क में ले जाती है और वहीं संस्कार से प्रतिज्ञा लेकर कि वह उसकी माँ से शादी करेगा, उसका हाथ पकड़कर कहती है, ”चलो पापा, घर चलें।“

यह कहानी ऐसे त्रिकोणीय प्रेम की कहानी है, जिसमें एक किशोर उम्र की लड़की तथा एक प्रौढ स्त्री, जो आपस में माँ–बेटी हैं, के मनोविज्ञान को बखूबी पाठकों के समक्ष उपस्थित करती है।

इस संग्रह में रतन वर्मा की दो कहानियां ऐसी हैं, जिनका मूल आधार ही केंद्रीय पात्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। ‘अब चेतना स्वस्थ है’ शीर्षक कहानी में, जहाँ कथाकार, ने एक ऐसी पाँच वर्षीय बच्ची चेतना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है, जिसके घर में उसके एक छोटे भाई का जन्म होता है, जबकि ‘खरगोश’ कहानी एक किशोर वय के लड़के में यौन अनुभूति का एहसास उसके मन को किस तरह विचलित किये रहता है, इस मनोविज्ञान को अत्यंत ही बारीकी के साथ प्रस्तुत किया गया है।

चेतना कॉनवेन्ट स्कूल में के०जी० की छात्रा है। स्वाभाविक है कि उसे उसके माता–पिता का भरपूर प्यार मिलता है। बल्कि यों कहें कि माता–पिता का सारा प्यार उसे ही हासिल होता है। लेकिन तभी उसकी माँ पुनः एक पुत्र को जन्म देती है। अब माता–पिता का प्यार बंटने लग जाता है। ऐसा नहीं कि चेतना को वे कम प्यार करते

हैं, लेकिन चूंकि चेतना का छोटा भाई अभी नवजात ही है, इसलिए उसकी माँ 'बाबू' का ज्यादा ख्याल रखती है। माँ के वैसे व्यवहार का चेतना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। यहाँ तक कि पहले तो चेतना अपनी माँ के साथ एक ही बिस्तर पर सोया करती थी, लेकिन बाबू के आ जाने के बाद उसके सोने की व्यवस्था एक अलग बिस्तर पर उसके पापा के साथ कर दी जाती है। चेतना को अपने प्रति माँ–पापा का दोहरा व्यवहार सौतेला जैसा महसूस होता है। वह अधिक से अधिक बाबू को कष्ट पहुँचाने की चेष्टा करती है। उसकी ईष्या का आलम यह हो जाता है कि यदि उसका वश चले तो बाबू को अपने रास्ते से भी हटा दे वह। कई बार तो बाबू के साथ कुछ ऐसा कर जाती है वह कि उसे पापा के हाथों पिटाई भी खानी पड़ती है। यहाँ तक कि जब उसकी दादी उसके घर आती है, तो पहले जैसा व्यवहार वह अपनी दादी में भी महसूस नहीं करती। उसकी दादी भी अधिकांश समय तक बाबू की ही देखभाल में लगी रहती है। चेतना के बाल–मस्तिष्क पर इन सारी बातों का विपरीत प्रभाव पड़ता रहता है। वह बाबू को अपने जीवन का सबसे बड़ा खलनायक मानने लगती है। ऐसी ही मनःस्थिति को झेलते हुए एक दिन वह बीमार पड़ जाती है, उसे उसकी बीमारी का लाभ यह मिलता है कि अब उसकी माँ, बाबू को उसके पापा के पास सुलाने लगती है तथा चेतना को अपने पास। अपने बीमार होने से चेतना को लगता है कि माँ के पास सोने के हक से लेकर माँ से प्यार पाने तक का हक उसने हासिल कर लिया है। इसलिए जब डॉक्टर उसे स्वस्थ घोषित कर देता है, तब भी वह पेट दर्द का बहाना बनाकर खुद को अस्वस्थ ही सिद्ध करती रहती है। अंत में जब उसके बहाने का राज उसके माँ–पापा पर जाहिर होता है, तभी दोनों चेतना के बाल–मनोविज्ञान की तह तक पहुंच पाते हैं। और घर में ऐसी व्यवस्था कर लेते हैं, ताकि चेतना कभी भी खुद को उपेक्षित महसूस न कर सके।

संग्रह की पांचवीं कहानी है– 'खरगोश'!... यह कहानी मासूम, निश्छल हृदय और किशोरवय के बालक शिल्पी कुमार के मनोविज्ञान की कहानी है। वैसे तो शिल्पी कुमार की दिनचर्या आम किशोरों की तरह ही स्कूल जाने, होमवर्क बनाने और खेलने–खाने–पीने तक ही सीमित हुआ करती थी, लेकिन जब उसके बड़े भाई की शादी होती है और उसकी भाभी घर में आ जाती हैं, तब उसकी दिनचर्या में

परिवर्तन आने लगता है। उसे पता होता है कि देवर और भाभी के बीच हँसी–दिल्लगी का रिश्ता होता है। हालांकि हँसी–दिल्लगी कैसे की जाती है, इससे वह अनभिज्ञ है, लेकिन वह अधिक से अधिक समय तक अपने भाभी के साथ बने रहने, उनके चेहरे को निहारते रहने में एक अनजान से सुकून का अनुभव करता है। यहाँ तक कि अब कई–कई दिनों तक स्कूल भी नहीं जाता है। जब कभी भी वह अपनी भाभी के पास होता है और उस बीच उसके भैया आकर उसे कमरे से बाहर भेज देते, तब उसे उसके भैया खलनायक सरीखे प्रतीत होने लगते।

ऐसा परिवर्तन उसमें खासतौर से उस दिन से परिलक्षित होने लगा था, जब एक रात भैया के कमरे के बाहर से उसने भैया और भाभी के बीच हो रहे वार्तालाप को सुना था। भैया उसकी भाभी से बोल रहे थे, "जानती हो सपना, जब भी मैं तुम्हारी इस चिकनी मुलायम खुली बाहों को सहलाता हूँ, लगता है, तुम मखमली बालों वाला कोई खरगोश हो गयी हो......"

वार्तालाप के इस अंश को सुनकर उसकी चेतना में अपने घर के दरबे में पलने वाला खरगोश साकार हो उठता है। दूसरे दिन सुबह–सुबह ही वह दरबे में से खरगोश को निकालकर देर तक उसके बालों को सहलाता रहा था। धीरे–धीरे यह उसके रोज की दिनचर्या में शामिल होता गया था। जब भी वह खरगोश को सहलाता, उसके भीतर एक अनजानी–सी कसक हिलोरें लेने लगती। साथ ही वह असीम आह्लाद का अनुभव करता।

भैया–भाभी के वार्तालाप को सुनने के बाद, दूसरे दिन जब वह अपने स्कूल गया था, तब क्लास की सारी लड़कियां उसे खरगोश सरीखी दिखती रही थीं। उसे लगता रहा था, जैसे सारी लड़कियों की बांहों में सफेद मुलायम बाल उग आये हों और इच्छा होती रही थी उसकी कि वह एक–एक लड़की की बाहों को सहलाता रहे।

इस प्रकार हर क्षण उसके मन में कोई न कोई लड़की खरगोशी एहसास बनकर उतर आती रही थी। बाद में चलकर तो उसके खुद के घर में एक पूरी की पूरी खरगोश चौबीसों घंटे के लिए उतर आयी थी। वह उसके भैया की सात–आठ वर्षीय साली रूपम थी। वह पूरी गर्मी की छुट्टी अपनी बहन के साथ बिताने आयी थी। फिर तो शिल्पी कुमार के लिए जैसे पूरा का पूरा स्वर्ग ही उतर आया

था उसके घर में। अब सुबह से रात तक अपनी छुट्टियों का सही उपयोग करता वह हर क्षण रूपम रूपी खरगोश के साथ ही बना रहता। वह चाहता कि जितना संभव हो, रूपम को खुश रख सके। कई बार यह भी चाहा था उसने कि वह उसकी बाहों को सहलाकर अपने भीतर खरगोशी एहसास को भर सके, मगर हर बार, जाने किस संकोच के कारण वह इसमें सफल नहीं हो पाता। यहाँ तक कि जब वह रूपम के साथ कैरम वगैरह खेलता, तो उसकी कोशिश होती कि जानबूझकर वह हार जाये ताकि रूपम खुश हो सके।

इस प्रकार उसके अपरिपक्व मन में लड़कियों के प्रति आकर्षण का भाव बलवती होता चला गया था। और अब पढ़ते–लिखते, खेलते–कूदते हर क्षण वह किसी न किसी लड़की की कल्पना में डूबा रहकर खरगोशी एहसास से सराबोर होता रहता।

किशोर उम्र ठीक उस अनलिखे स्लेट की तरह होता है, जिसपर कब क्या लिख जाय और उस लिखे का प्रभाव उस किशोर मन पर क्या पड़ जाय, इसका कोई ठिकाना नहीं होता। रतन वर्मा ने इसी मनोविज्ञान को खरगोश कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

'वेतन का दिन' एक ऐसे परिवार की कहानी है, जिसका मुखिया श्यामल एक सामान्य वेतन भोगी कर्मचारी है। उसे जितना वेतन मिलता है, उतने में उसका परिवार बहुत ही मुश्किल से चल पाता है। आमतौर पर ऐसे परिवारों में गृहस्थी की पूरी जिम्मेवारी उस घर की स्त्री को ही निभानी पड़ती है। पति को सिर्फ नौकरी और पत्नी के हाथ में वेतन सौंप देने भर से वास्ता रहता है। इस बात से अधिकांशतः वह बेजार ही रहता है कि उसके छोटे से वेतन में उसकी पत्नी घर के सारे दायित्वों का निर्वाह किस तरह करती है। घर के राशन से लेकर बच्चों की पढ़ाई–लिखाई, दूध, कपड़े–लत्ते, सब्जी–भांजी, सारी अनिवार्य आवश्यकताओं कि चिंता पत्नी को ही करनी पड़ती है। वह पैसों की कमी पड़ने पर अपनी घर की जरूरतों को कर्ज लेकर पूरा करती या कहाँ से पूरा करती है, इससे पति का कोई वास्ता नहीं होता। यह कहानी, जैसा कि प्रतीत होता है कि शायद आठवें–नौवें दशक के निम्न मध्यवर्गीय परिवार की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है, क्योंकि लेखक कथानायक के वेतन का जिक्र करते हुए जितने कम वेतन का हवाला देता है, आज के कर्मचारी उतने से

कई गुणा अधिक वेतन प्राप्त करते हैं। स्वाभाविक है कि महज पति–पत्नी और दो बच्चों के परिवार की जिस आर्थिक दु:स्थिति के बारे में इस कहानी में चर्चा है, वह स्थिति तो आज के निम्न मध्यवर्गीय छोटे से परिवाार की नहीं ही हो सकती है।

कहानी का प्रारम्भ, जिस दिन श्यामल को वेतन मिलने वाला है, उस दिन की सुबह की बेड–टी के साथ होता है, तब उसकी पत्नी शीला उसके हाथ में लाल चाय थमाती है। लाल चाय देखकर श्यामल खिन्न हो उठता है और शीला पर बरस पड़ता है। इस पर पत्नी भी उलझ जाती है उससे और उसके कम वेतन का ताना देते हुए बोलती है कि दूध फट गया था तथा हाथ में इतने पैसे भी नहीं थे कि बाजार से दूध खरीद लाती। उसके बाद ब्रश करने के समय श्यामल को टूथपेस्ट समाप्त मिलता है, फिर बाथरूम में नहाने के साबुन के अभाव में उसे बिना साबुन के ही नहाना पड़ता है। इस प्रकार वेतन मिलने के दिन सुबह का सगुन ही नागवार बीतता है उसके साथ।

लेकिन जब वेतन हाथ में आ जाता है श्यामल के, तब उसका मन कुछ रूमानियत हो उठता है। दफ्तर से वापस लौटते हुए पांच रूपये में वह अपनी पत्नी के लिए फूलों का गजरा खरीदता है, इसके बाद उसका मन करता है कि वह अपनी पत्नी को सिनेमा दिखा लाये, इसलिए सिनेमा हॉल तक जाकर वह अगले शो के लिए अग्रिम टिकट भी खरीद लेता है। इस प्रकार प्रफुल्ल मन जैसे ही वह घर में प्रवेश करता है, शीला घर में पोछा लगाती हुई मिलती है। पति पर नजर पड़ने के साथ ही वह अधीर–सी पूछ बैठती है, "वेतन मिल गया ?"

श्यामल से सकारात्मक उत्तर पाकर बोलती है वह, "जल्दी से तीन सौ रूपये निकालो, अभी सक्सेना की मिसेज के मुँह में मार कर आती हूँ......। उनसे कर्ज क्या लिया, लगता है, घर छोड़कर ही भागी जा रही हूँ।" फिर रूपये लौटाकर शीला वापस आती है, तब श्यामल से सिनेमा का प्रस्ताव सुनकर उस पर भड़क उठती है वह कि यहाँ तो महीने भर का खर्च उठा पाना मुश्किल है और वह फिजूल सिनेमा वगैरह पर पैसे उड़ा रहा है। उसके बाद गजरे को देखकर भी भड़क उठती है कि वह अनावश्यक पैसे उड़ा रहा है। लेकिन श्यामल की सहजता से द्रवित भी हो जाती है वह और उसके पसंद की साड़ी पहनने लगती है। साड़ी पहनते हुए ही उसने जो घर खर्च के लिए

सूची बनायी है, वह श्यामल की ओर बढ़ाकर कहती है, "जबतक मैं तैयार होती हूँ, इस लिस्ट के देख लो।"

मन खिन्न हो उठता है, श्यामल का, फिर भी बेमन से ही वह सूची देखने लगता है– सारे खर्च के बाद हाथ में सब्जी–भांजी के लिए महज दो सौ अठ्ावन रूपये बचते हैं। ऐसे समय में, जबकि वह तफरीह की मुद्रा में है, पत्नी के द्वारा सूची दिखाया जाना, उसे नागवार तो जरूर गुजरता है, मगर उन खुशनुमा क्षणों को वह जाया भी नहीं करना चाहता। इसलिए सूची पुनः शीला को थमा देता है। सिनेमा देखकर लौटने के पश्चात रात्रि के एकांत और अन्तरंग क्षणों में भी जब अकस्मात शीला बड़बड़ा उठती है कि सूची में पुत्र दीपू के ट्यूशन फी के पच्चास रूपये तो लिखना भूल ही गयी। तब श्यामल के सिर पर चढ़ा रूमानियत का नशा पूरी तरह काफूर हो जाता है। इस परिस्थिति को लेखक इन शब्दों में व्यक्त करता है, "कमरे में उतरा हुआ बसंत अपनी उपेक्षा बरदाश्त नहीं कर पाया था। फिर से वातावरण को पतझड़ के सुपुर्द कर अपनी राह वापस चला गया था।" रतन वर्मा ने निम्न मध्यवर्गीय समान्य वेतन भोगी परिवार की परिस्थितियों और मनोविज्ञान का अत्यंत ही सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया है, इस कहानी में।

संग्रह की आखिरी कहानी 'चिठ्ठी' है। यह कहानी स्मिता और स्मृति नामक दो युवा बहनों के मनोवैज्ञानिक टकराहट को आधार बनाकर लिखी गयी रचना है। स्मिता एक कवयित्री है और अच्छी शिक्षा प्राप्त होने के बावजूद बेरोजगारी के कारण ट्यूशन पढ़ाकर तथा कवितायें लिखकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करती है। उसकी बहन स्मृति का सहयोग भी उसे प्राप्त है, जो एक निजी संस्थान में कलर्क की नौकरी करती है। परिवार में सिर्फ चार लोग हैं– स्मिता, स्मृति, एक छोट भाई और माँ। पिता का स्वर्गवास हो चुका होता है। उनके पिता नगरपालिका के स्कूल में शिक्षक हुआ करते थे और अपनी दोनों बेटियों में अच्छे संस्कार भरे थे। स्मिता की कवितायें पत्र–पत्रिकाओं में छपा करती थीं, जिन पर पाठकों के तरह–तरह के पत्र आया करते हैं। उन पत्रों को दोनों बहने पढ़ा करती हैं, लेकिन स्मिता उन पत्रों को कोई महत्व नहीं देती। उसे इस बात का एहसास था कि पाठक वर्ग, जिनमें अधिकांश पुरूष ही होते हैं, आमतौर पर उसकी कविताओं का तारीफ भरा पत्र किसी मछुआरे

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

की जाल की तरह उसकी ओर फेंका करते हैं, ताकि मछली उस जाल में फंस सके। वह उन पत्रों का कभी जवाब तब नहीं देती। उसके द्वारा जवाब न दिये जाने में, उसकी छोटी बहन स्मृति का भी समर्थन होता था।

लेकिन तभी एक प्रसिद्ध कहानीकार अमृतांशु जी का पत्र उसे मिलता है। उसकी कविता की अत्यंत ही सटीक समीक्षा से भरा हुआ तथा सम्मोहक साहित्यिक भाषा से लबालब। उस पत्र को भी दोनों बहने बारी–बारी से पढ़ती हैं। स्मिता तो उस पत्र का उत्तर भी नहीं देना चाहती, मगर स्मृति पत्र से इतना प्रभावित होती है कि अपनी बहन स्मिता पर दबाव बनाने लगती है कि जवाब न सही, धन्यवाद ज्ञापन ही कर दे। हालांकि ऐसा नहीं कि स्मिता उस पत्र के सम्मोहक प्रभाव को अपने भीतर महसूस ही नहीं करती, पर शायद स्मृति पर यह जताने के लिए कि वह अन्य पत्रों की तरह उस पत्र को भी कोई महत्व नहीं देती, बार–बार मना करती रहती है। लेकिन उस पत्र ने स्मृति पर कुछ ऐसा जादू कर दिया होता है कि जिद करके स्मिता से पत्र का जवाब भिजवा ही देती है वह। इसके बाद तो स्मिता और अमृतांशु जी के बीच पत्रों का सिलसिला ऐसा चल पड़ता है कि समय के अंतराल में स्मिता की छोटी बहन स्मृति को अब अपनी बहन से इर्ष्या होने लग जाती है। अक्सर वह सोचती रहती है कि काश वह भी कविता वगैरह लिख पाती, तो उसके नाम से भी अमृतांशु जी के जैसे किसी का सम्मोहक पत्र उसके नाम से भी आता रहता।

संस्कारवश स्मिता ने पैंतीस वर्ष की उम्र हो जाने के बावजूद अब तक किसी पुरूष को अपने भीतर फटकने नहीं दिया था। लेकिन अमृतांशु जी के पत्र ने, उसकी सोच को कथाकार सामने रखता है, 'चाहे जो हो, अमृतांशु जी के पत्र ने स्मिता के मरूस्थल से हो गये जीवन में एक हरित क्रांति ला पाने का सुखद संयोग तो अवश्य उत्पन्न कर दिया था।' – अर्थात् स्मिता ने अब रोमांचकता के स्तर तक अमृतांशु जी को महसूस करना शुरू कर दिया था। दूसरी तरफ स्मृति की, अपनी बहन के प्रति इर्ष्या का भाव अपनी पराकाष्ठा को फलांगता जाता है। धीरे–धीरे वह घाव में परिवर्तित होते–होते अब नासूर की स्थिति में पहुंच गया था। अब जब भी स्मिता अमृतांशु जी के पत्र के आने का जिक्र करती, वह उस जिक्र को टाल जाने की ही कोशिश करती और ऐसा दिखाती जैसे अमृतांशु जी में अब उसकी

कोई रूचि नहीं रह गयी है। लेकिन अपने एकांतिक क्षणों में, जब स्मिता किसी काम में व्यस्त होती, तब वह चुपचाप स्मिता की आलमारी से अमृतांशु जी के पत्रों को निकाल कर पढ़ती और खुद को अपनी स्मिता दी में तब्दिल होती महसूस करती और एक अनजाने से आह्लाद में विचरने लगती। ऐसे ही एक दिन स्मिता के पास अमृतांशु का पत्र पुनः आता है। वह पत्र को कई–कई बार पढ़ने के बाद बेसब्री से स्मृति के ऑफिस से लौटने की प्रतीक्षा करती है, ताकि वह उस चिट्ठी को उससे भी पढ़वा कर आपस में खुशियां बांट सके। स्मृति जैसे ही ऑफिस से लौटती है, प्रसन्न मुद्रा मं वह उससे अमृतांशु जी की चिट्ठी का जिक्र करती है। लेकिन स्मृति पर एक विक्षिप्तता सी तारी हो उठती है, वह विफरती हुई बोल पड़ती है, 'हुह....चिट्ठी... चिट्ठी...चिट्ठी!....जब देखो तब एक ही बात। अमृतांशु जी कि चिट्ठी न हुई, भगवान का कोई वरदान हो गयी। आयी है चिट्ठी, तो जाइये, ताबिज में मढ़वाकर गले में पहन लीजिए। उसके तेवर से स्मिता को एक धक्का–सा लगता है। रिरियाती–सी वह बोलती है कि अमृतांशु जी की चिट्ठी का जवाब देने के लिए तो उसी ने कहा था।

प्रत्युत्तर में उसी तेवर के साथ स्मृति बोल पड़ती है, 'हाँ, कहा था, मगर जुनून पालने के लिए थोड़ ही।' स्मृति के उस तेवर से स्मिता को बहुत दुःख होता है और उस पत्र का वह जवाब नहीं देती अमृतांशु जी को। फिर एक रात जब स्मिता गहरी नींद में होती है, तब स्मृति बिस्तर से उठकर अमृतांशु जी को एक पत्र लिखती है, जिसका जवाब, जब स्मृति दफ्तर गयी होती है, तब स्मिता को प्राप्त होता है। उस पत्र को पढ़ने के बाद स्मिता को यह स्पष्ट हो जाता है कि अमृतांशु जी और उसके बीच के पत्र–व्यवहार को लेकर स्मृति अपनी बहन से इर्ष्या करती है। और यह भी कि स्मृति के मन में भी कहीं न कहीं अमृतांशु जी के लिए कोमल भावना पल रही है।

इस प्रकार 'पेइंग गेस्ट' की सभी कहानियों को पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि रतन वर्मा जिस किसी भी पात्र का सृजन कर रहे होते हैं, उन पात्रों के भीतर प्रवेश कर उसके मन को पूरी तरह से अपनी रचना में विश्लेषित करने की सार्मथ्य रखते हैं। मनोविज्ञान, जैसे उनके लेखन का खास विषय होता है। इस तरह कहा जा सकता है कि रतन वर्मा की कहानियों में मनोवैज्ञानिक चिंतन काफी मुखर होती हैं।

कविता

## लाल देवेंद्र कुमार श्रीवास्तव

ग्राम–कैतहा, पोस्ट–भवानीपुर, जिला–बस्ती 272124


# मेरी रचनाएँ...

क्या लिखूँ ?..कैसे लिखूँ... किस पर लिखूँ
उन क्लिष्ट शब्दों को कहाँ से लाऊँ
सुना है बड़े पत्र–पत्रिका वाले
साधारण रचनाओं को प्रकाशित करने से
झट से कर देते हैं इंकार
मैं तो हूँ एक साधारण रचनाकार
नहीं कर सकता मैं संपादक से तकरार
बस! रचना को स्थान देने के लिए
कर सकता हूँ मनुहार
फिर कोई उपाय सुझाइए
कि मैं भी अपनी आम रचनाओं को
किसी प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित कराऊँ
मैं भी एक प्रसिद्ध साहित्यकार हो जाऊँ...

सुना है कि साहित्य के भी कई जगह मठ हैं
उनके लब्ध प्रतिष्ठित होते मठाधीश
उनसे जब मिलता है आशीष
तभी प्रतिष्ठित साहित्यकार में शुमार हो पाऊँ...

मैं तो एक साधारण रचनाकार
मेरी रचनाओं में होते हैं गाँव के किसान
खेतों की जुताई, फसलों की मड़ाई
धान के बेहन की बैठवाई, गेहूँ की बुवाई
खेतों में पानी की चलवाई
मेरी कविताओं में होते हैं, खेत खलिहान
बच्चों की कैसे हो अच्छी पढ़ाई लिखाई
जब न हैं कोई विशेष कमाई
कैसे हो बूढ़े अम्मा बाबूजी की दवाई
कैसे पढ़े लिखे बेरोजगार युवकों को मिले नौकरी
उनके अच्छे हो इम्तिहान
कैसे उनके चेहरे पर आए मुस्कान...

सुना है कि कितना भी बड़ा हो साहित्यकार
अपनी रचनाओं से करता हो चमत्कार
उनके साहित्य से भले ही मिले संस्कृति व संस्कार
पर ऐसे रचनाकार को को कभी न मिलता है
कोई बड़ा प्रतिष्ठित पुरस्कार
यदि नहीं है कोई बड़ा उसका पैरोकार...

सुना है कि जिन रचनाओं में कठिन शब्द न हों
जिन रचनाओं के एक एक वाक्य का अर्थ
हाथ में बिना शब्द कोष लिए अर्थ समझ में न आए
जिनकी प्रशंसा बड़े नामचीन द्वारा न की जाए
वो कैसी भी हो रचनाएँ
अच्छी पत्रिकाओं में जगह न पाएँ
पर ऐसे शब्दों को कहाँ से खोजा जाएँ...

मैं तो आम जन की पीड़ा, उनके दुःख दर्द
अपनी रचनाओं में लिखकर होता हूँ खूब प्रसन्न
जो आम पाठकों द्वारा पढ़ी जाती है
उन पर आम लोगों द्वारा प्रतिक्रियाएँ आती हैं
तो इसी में खुश हैं मेरा तन मन
मेरी रचनाओं से यदि समाज में होता है कुछ परिवर्तन
भले ही मेरी साधारण रचनाएँ
बड़ी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित न हो पाएँ
आम पाठकों का मेरी रचनाओं पर मिलता है प्यार
वही है मेरे लिए सबसे बड़ा प्रतिष्ठित पुरस्कार...

गज़ल

केशव शरण
*एस 2/564 सिकरौल, वाराणसी 221002*

शोरूम यहाँ और वहाँ बॉर रहेगा
संस्थान रहेगा न सभागार रहेगा

आवास रहे टूट गुफा–खोह सरीखे
ये क्योंकि नगर साफ हवादार रहेगा

वो बात नहीं आज कि निर्दोष निडर हो
हर दण्ड उसे जो न खतावार रहेगा

कुछ लोग गिरफ्तार हुए धूम्र उड़ाते
कुछ रोज यही एक समाचार रहेगा

बरबाद करें देश गदर–लूट मचाकर
पड़ना न उन्हें फर्क जनाधार रहेगा

ऐसा न कहो यार कि बदलाव न होगा
घनघोर कलह–कष्ट लगातार रहेगा

वो चोर–उचक्के कि सरेआम टहलते
तू जान अगर तू न खबरदार रहेगा।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

## ग़ज़ल

**केशव शरण**

*एस 2/564 सिकरौल, वाराणसी 221002*

इक लक्ष्य दिखाकर न दिखा यार अभी तक
मैं राह रहा जोह लगातार अभी तक

हम रोज मिले रोज मिले और गले भी
अफसोस कि पैदा न हुआ प्यार अभी तक

अरमान बहुत और बहुत ख़्वाब हमारे
इक ने न लिया रूप व आकार अभी तक

छोटी न घड़ी एक, बड़ी रात अँधेरी
कोई न प्रकट चाँद न भिनसार अभी तक

जो देख लिया हुस्न गुनहगार हुआ मैं
ये और मजेदार गिरफ्तार अभी तक

संघर्ष किये खूब कि था राज बचाना
नृप ने न दिया एक पुरस्कार अभी तक

जो रोज नये खोज समाचार कभी दे
उसका न मिला एक समाचार अभी तक।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

## ग़ज़ल

**नवीन माथुर पंचोली**
*अमझेरा, धार, मप्र*
*navinmathurpancholi@gmail.com*

मकाँ होकर भी वो ठहरा नहीं है।
अकेला है मगर तन्हा नहीं है।

सितारे खूब उसके दरमियाँ हैं,
कोई उससे मगर मिलता नहीं है।

जहाँ को मिल रही है रोशनी सब,
वहाँ अब तक कोई पहुँचा नहीं है।

मुसाफिर है वो अपने आसमाँ का,
वो लगता है मगर चलता नहीं है।

बसाया है उसे कब, दूर किसने,
नजर ने ये कभी पूछा नहीं है।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

गज़ल

नवीन माथुर पंचोली
*अमझेरा, धार, मप्र*
*navinmathurpancholi@gmail.com*

सुनकर जिससे हल निकलेगा।
फिकरा वो ही चल निकलेगा।

जब भीतर की गाँठ खुलेगी,
तब बाहर का सल निकलेगा।

आज बिताया हमनें जैसा,
वैसा अपना कल निकलेगा।

टकसालें जो सूरत देगी,
सिक्का वैसा ढल निकलेगा।

खून–पसीना, काम के जरिए,
अक्सर मीठा फल निकलेगा।

रस्सी आखिर जल जाएगी,
फिर भी उसमें बल निकलेगा।

भूली–बिसरी यादों के संग,
कैसे लम्हा–पल निकलेगा ।

कविता

# वो पी गयी पूरा उसे...

सुबह अलसाई सी
थकी थकी होती दोपहर
यूँ उसकी हर रोज
जिंदगी होती बसर
संध्या होते प्रबल हो जाती
भुतनी की तरह
ले लेती सिकंजे में उसे
स्वयं समर्पित कर देता
अपने को वो बिन जिरह
और सोचता रहता कि
गटक रहा हूँ मैं जिसे
ये है मेरी प्रेयसी
क्यूँ जहर तुम कहते इसे
पर अब जब ढल गई उमर
रखी ना कोई कसर
बुझ गये तन–मन के दिये
काम सब ऐसे किए
देर से समझ आया
अब वो कहता किसे
जो पी गयी थी पूरा उसे

व्यग्र पांडे
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.) 01
vishwambharvyagra@gmail.com

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

# मनोघात

शैलेंद्र चौहान
*34/242, सेक्टर–3, प्रतापनगर, जयपुर–302033*
**shailendrachauhan@hotmail.com**

वे फुदकते थे
लड़ते–झगड़ते थे
मचलते थे
जिद करते थे
रोते थे
रूठ जाते थे

कभी पुचकारे जाते थे
कभी डांट खाते थे
हंसते थे खेलते थे
स्कूल जाते थे, पढ़ते थे
माता–पिता उनका खयाल रखते थे
क्योंकि वे बच्चे थे

अब आगे बयान करना मुश्किल है
वे सदमे में हैं
अचानक बचपन खत्म हो गया
नहीं जानते आगे क्या होगा
क्या बीतेगी
और कहां होंगे वे
कैसे जिएंगे
कैसे सहन करेंगे तमाम ज्यादतियां दुनिया की

सदमे से बाहर आएंगे वे जरूर
बिना माता–पिता के साये के
जैसे भी हो खुद बढ़ेंगे आगे

जब भी याद आएंगे मां–बाप
याद आएगा कोरोना
और वे जिन्होंने उन्हें जाने दिया
दुनिया के पार!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

लंबी कविता

स्वाति सौरभ
*भोजपुर, बिहार*

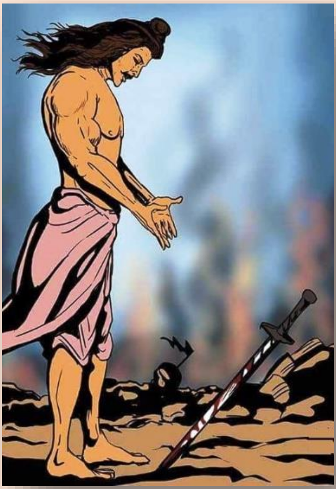

## कलिंग युद्ध : सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन

युद्ध विजयी होकर भी,
अब तक ना खुला कलिंग–द्वार।
सुन चला मतवाले हाथी–सा,
क्रोधित होकर मगध सम्राट।।

सामने खड़ी पद्मा की सेना,
नारी या रण चंडी अवतार।
युद्ध के लिए ललकार रही,
बुझाले अपनी रक्त की प्यास।।

नारी पर शस्त्र उठाना,
है राज धर्म के खिलाफ।
हे कलिंग महाराज सुकन्या!
मैं ना करता नारी पर वार।।

निरपराधियों की हत्या का,
क्या आज्ञा देता है धर्मशास्त्र ?
सिर झुका अब क्यों खड़े हो ?
उठाओ हम पर भी औजार।।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

बज रहे हैं ढोल नगाड़े,
कलिंग विजय के देख नजारे।
हो गए न तेरे स्वप्न साकार!
किन्तु जीत कर भी गया तू हार।।

देख ले आंखों से परिणाम,
हुई है धरती लहू–लुहान।
मन भर देख रुधिर कीच,
पांव तले मानव मर्दित।।

छाया है मौर्यालोक में मातम,
पूछेंगे कई सवाल परिजन।
कहां है आंखों का आलोक,
क्या बोलेगा सम्राट अशोक ?

टूटेगी हांथो की चूड़ियां,
मिटेगा मांग का सिंदूर।
माताओं की गोद सुनी कर,
असमय हुए अनाथ मुकुल।।

अब क्यों बैठा है उदास,
क्यों कर रहा अब संताप ?
कलिंग विजय दिवस है आज,
कर लिया ना साम्राज्य विस्तार!

पटी हुई लाशों से धरती,
नोच रहे हैं श्वान–शकुन।
असहनीय दर्द कराह के,
श्रव्य भी न हैं स्वर करुण।।

शर्माकर छिप गया रवि भी,
मौन हो गया है आकाश।
विधु भी स्तब्ध खड़ा है,
छिपा रही चांदनी प्रकाश।।


ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

युद्ध की विभीषिका देख,
थर्रा उठा घरती ब्राह्मण।
यम नृत्य तांडव शिथिल ,
ह्रदय विदारक युद्ध परिणाम।।

कराह चीत्कार अधीर पुकार,
नदी सा बहता रक्तस्राव।
कानों में गूंज रही आवाज,
क्या सुन रहे हो तुम नृपाल?

पद्मा वचन सुन सम्राट का,
भावुक हुए ह्रदय उद्भ्रांत।
नैनों से बह रहे अंबु,
कैसी यह वेदना अथाह ?

अब नहीं साम्राज्य तृषा,
ना युद्ध विजय की तिशा।
किए हैं कितने अपराध,
कर रहा अशोक परिताप।।

युद्ध पश्चात् कुरुक्षेत्र में,
पसरा हुआ सन्नाटा था।
जीत कर भी हारा बैठा,
नया कलिंग का राजा था।।

व्याकुल मन शांत करने,
पहुंचा बुद्ध की शरण में।
त्याग कर राजसी ठाठ बाट,
अपनाया शांति का मार्ग।।

एस धम्मो सनंतनो
बुद्धम शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
संघं शरणं गच्छामि।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

# शोध-दृष्टि

## सहयोग आधार पर प्रकाश्य साझा शोधलेख संग्रह

**सहयोग आधार पर प्रकाश्य साझा शोधलेख संग्रह 'शोध-दृष्टि' के लिए मौलिक शोध-लेख आमंत्रित हैं। शोध लेख किसी भी विषय-क्षेत्र से हो सकते हैं, किंतु उनकी भाषा हिंदी होनी चाहिए। आदर्श शोध लेख की शब्द-सीमा 2000 से 2500 शब्द है। यदि शोधलेख से संबंधित चित्र या आरेख हों, तो साथ में संलग्न करें।**

**प्रकाशन नियम-**

**1. अनुमानित प्रति प्रष्ठ प्रकाशन लागत व्यय 250.00 है।**

**2. सहयोग राशि का भुगतान रचना-चयन के उपरांत करना है।**

**3. 'शोध-प्रतिमान' संग्रह का प्रकाशन मई, 2021 माह में किया जाना प्रस्तावित हैं।**

**4. प्रत्येक शोध-लेखक को संग्रह की पाँच प्रति कोरियर/पंजीकृत डाक से प्रेषित की जाएंगी। यदि किसी लेखक को पाँच से अधिक प्रतियों की आवश्यकता हो तो वह अपनी सहयोग राशि में प्रति संग्रह 200.00 अतिरिक्त जोड़कर भुगतान करे।**

**5. शोध-लेख 31 जनवरी, 2022 तक ही स्वीकार होंगे।**

**6. प्रत्येक शोध-लेखक को शोधलेख के चयन के पश्चात प्रकाशन सहयोग राशि प्रति पृष्ठ 250.00 की दर से भुगतान करना होगा। इस भुगतान में लेखकों को प्रेषित करने पर लगने वाला डाकव्यय भी सम्मिलित है। यह भुगतान 'मधुराक्षर' के भारतीय स्टेट बैंक के खाता-क्रमांक 31807644508 (IFS Code SBIN0005396, MICRCode-212002004) में जमा करें। PayTM या GooglePay के माध्यम से भुगतान करने के लिए 9918-69-5656 मोबाइल नंबर को चुनें। भुगतान करने के पश्चात रसीद व्हाट्सप्प नंबर 9918-69-5656 पर प्रेषित करें।**

- **किसी भी तरह का पत्र व्यवहार madhurakshar@gmail.com में करें, और विषय (Subject) में 'शोध-दृष्टि' लिखना न भूलें।**

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)